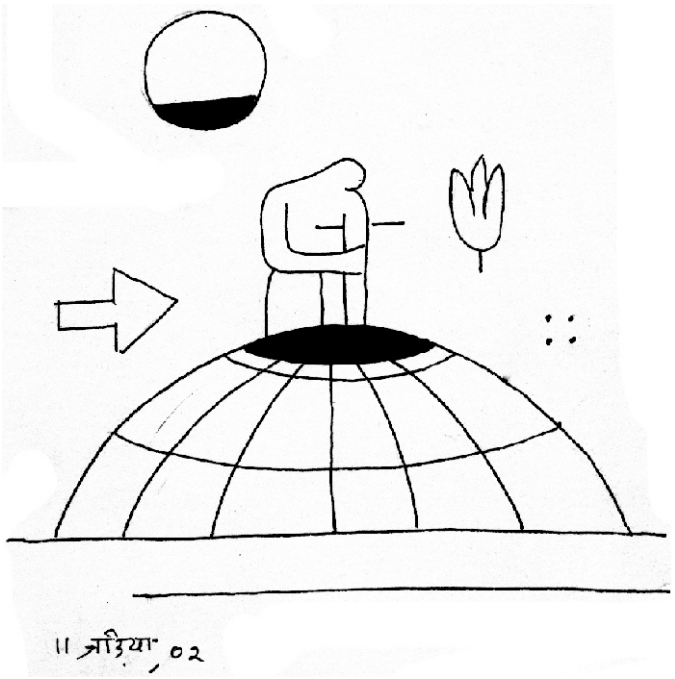

सतह से ऊपर

मुनि श्री क्षमासागर जी के
संस्मरण और विनीत श्रद्धांजलि

मैत्री समूह

सतह से ऊपर

मैत्री समूह

संपादन : डॉ. राजेन्द्र पटोरिया

मार्गदर्शन : प्रो. (डॉ.) सरोज कुमार

संस्करण : प्रथम, फरवरी, 2016

प्रतियां : 1000

मूल्य : 100/–

प्रकाशक : मैत्री समूह

रेखाचित्र : भाऊ समर्थ
संतोष जड़िया

मुद्रक : गजानन प्रिंटिंग प्रेस
4, बँक कॉम्प्लेक्स
गणेशेठ पोलीस स्टेशन के सामने,
गणेशपेठ, नागपुर–440 032
Email :gajananpp2008@gmail.com

प्राप्ति स्थान : मैत्री समूह
पोस्ट बाक्स नं. 15
विदिशा, मध्यप्रदेश
7694005092, 9425424984
www,maitreesamooh.com
samooh.maitree@gmail.com

अनुक्रमणिका

संस्मरण :

ब्र. संतोष भैया, ब्र. विजय भैया, डॉ. नवीन कुमार वर्मा, राजकुमारी नायक, डॉ. राजेन्द्र पटोरिया, रंजना पटोरिया, राजकुमारी रांधेलिया, प्रो. (डॉ.) सरोज कुमार, कविता जैन, आरती जैन, आनन्द कुमार जैन 'अकेला', दिनेशचन्द्र मान्या, लक्ष्मीचंद शाह (कक्काजी), सुभाष सिंघई, के.सी. जैन 'गोमित्र', रुचि जैन, श्रीमती विमला जैन, योगेन्द्र कुमार जैन, उषा जैन, दिनेश जैन, प्रतिभा सेठ, राजकुमार जैन, निशि मोदी, रचित कुमार जैन, अनुराग जैन, निकुंज जैन, आकाश जैन, अंजलि जैन, अर्निका जैन, योगेन्द्र जैन (लंदन), निवेदिता जैन, समीक्षा सिंघई, राहुल कुमार सतभैया, अंशु जैन, आकाश जैन (कनाडा), नेहा मोदी, पारुल जैन, स्वाति जैन, प्रीति जैन, रचित कुमार जैन, स्वाति, देवराज जैन, संजय जैन (सखी), शिशिर सेठी, भूपेश (सोनू) जैन, राजेश जैन, प्राचि जैन (यूएसए)

विनियांजली :

ब्र. संजय जैन, ब्र. त्रिलोक जी, ब्र. जयकुमार 'निशांत', कपूरचन्द जैन, प्रो. (डॉ.) रतनचन्द जैन, डॉ. नीलम जैन, डॉ. कुसुम पटोरिया, प्रीति जैन, मालती जैन, पं. सनत कुमार, विनोद कुमार, रवीन्द्र जैन, राजेन्द्र जैन 'महावीर', सुरेश जैन, सुशीला पाटनी, डॉ. अनिलकुमार जैन, पूरन चन्द जैन, गुलाबचन्द्र सिंघई, उमेश जैन, अजयकुमार जैन, देवांग जैन, नीता जैन, मोना जैन, सी.बी. जैन, डॉ. राज पाटील, राकेश जैन, हरगोविन्द सिंह, सपना जैन, श्वेता मोदी, सपना जैन, किरण जैन, अरुणा जैन, हेमन्त भगानिया, चौधरी सुधीर, चौधरी जवाहरलाल जैन, डॉ. मनोज जैन, के. एल. संघी, अवार्डी, दिनेश जैन, अंकितकुमार जैन, सुविजैन, अशोक जैन, शरद जैन, अनिमेष जैन, नितिन जैन बरइया, रियंका जैन, कपिल जैन, रेशु जैन, अनुराग जैन, राजकुमार जैन

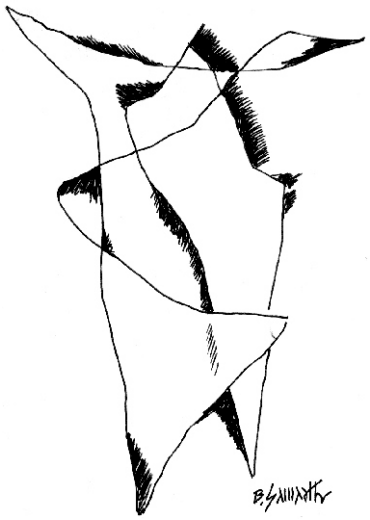

गन्तव्य

यात्रा पर निकला हूँ,
लोग बार–बार
पूछते हैं, कितना चलोगे?
कहाँ तक जाना है?

मैं मुस्कुराकर
आगे बढ़ जाता हूँ,
किससे कहूँ
कि कहीं तो नहीं जाना,

मुझे इस बार
अपने तक आना है।

–मुनि क्षमासागर

निःशेष

मुझे
कहना है अभी
वह शब्द
जिसे कहकर
निःशब्द हो जाऊँ
मुझे
देना है अभी
वह सब
जिसे देकर
निःशेष हो जाऊँ
मुझे
रहना है अभी
इस तरह
कि मैं रहूँ
लेकिन
'मैं' रह न जाऊँ।

संपादकीय

सरलता की मूर्ति

सुकुमार तन, संवेदनशील मन, जीवों के प्रति मैत्री व करुणा से ओतप्रोत व बालकों के प्रति वात्सल्यपूर्ण मातृहृदय तथा कठोर साधना में आत्मबल से परिपूर्ण निर्ग्रन्थ श्रमण यह मुनि क्षमासागर का संक्षिप्त परिचय है। मुनिश्री की घोर तपस्या व वीतराग साधना का ही संभवतः परिणाम रहा हो कि कर्म शीघ्र निर्जीर्ण होने के लिए त्वरापूर्वक उदय में आते रहे और उनकी आत्मा को कर्मभार से निर्भार बनाते रहे। शारीरिक कष्टों, वेदना और परीषहों को समभाव से सहन करते हुए उन्होंने अपनी निर्वाणयात्रा को कुछ भवों तक सीमित कर लिया।

आत्मसाधक जैन मुनि लोककल्याण के भी परम साधक रहे हैं। मुनिश्री क्षमासागर ने धर्म–प्रभावना का महत्वपूर्ण कार्य किया। उनके चुम्बकीय व्यक्तित्व ने श्रावकों को विशेष रूप से युवावर्ग को अपनी ओर/धर्म की ओर आकर्षित किया। उन्हीं से प्रेरित हो उन्होंने धर्म को समझने का प्रयास किया। 'यंग जैना अवार्ड' के माध्यम से समाज के प्रतिभाशाली किशोर/युवावर्ग उनसे और धर्म से जुड़ा। प्रतिभाशाली विद्यार्थी ही लौकिक शिक्षा के भार से धार्मिक शिक्षा से दूर हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें धर्म को सही परिप्रेक्ष्य में जानने का अवसर नहीं मिलता। मुनिश्री स्वयं विज्ञान के वेत्ता रहे हैं, अतः उनकी बातें बुद्धिमान विद्यार्थियों को सहज अपील करती थीं, लेकिन समाज का दुर्भाग्य कि उनकी मधुर वाणी हम अधिक समय नहीं सुन सके। रोगों की परीक्षा उन्होंने धैर्यपूर्वक उत्तीर्ण की, लेकिन अपूरणीय क्षति समाज को उठानी पड़ी। समाज को उनके साहित्य और प्रवचनों से वंचित होना पड़ा।

मुनिश्री सरलता की मूर्ति थे। छोटे–छोटे बच्चे उनके पास बेहिचक पहुंच जाते थे और उनके कानों में अपनी बात कहते थे। संभव है इतना विश्वास उन्होंने अपने माता–पिता के प्रति भी व्यक्त नहीं किया हो। बच्चों और युवावर्ग की पीड़ा उनकी अपनी पीड़ा बन जाती थी।

गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण, श्रद्धा व भक्ति का गुण उनके समीप रहने वालों ने सदा अनुभव किया है। उनमें उस आदर्श शिक्षक के समस्त गुण थे, जो अपने शिष्यों को केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं देता, वरन उसे संसार में एक आदर्श जीवन जीने की कला के साथ इस संसार को बेहतर बनाने में अपने योगदान की कला भी सिखाता है। इसलिए उनकी अपने गुरु के प्रति जैसी अथाह भक्ति रही, वैसी ही भक्ति से परिपूर्ण उनके शिष्यों मुख्यतः युवा शिष्यों की संख्या पर्याप्त है।

वस्तुतः उनके बहुमुखी व्यक्तित्व की झलकियां प्रस्तुत करने के लिए एक सम्पूर्ण ग्रन्थ की आवश्यकता है, जो उनके सान्निध्य का लाभ लेने वाले लेखकों के अनुभवपूर्ण लेखों से युक्त हो, उनके साहित्य की समीक्षा हो। यह समयसाध्य कार्य योजनाबद्ध तरीके से किया जाना है।

मुनिश्री के समर्पित शिष्यों में से कु. निशा जैन, भोपाल व श्री आलोक जैन, मुंबई ने सामग्री का परिश्रमपूर्वक संकलन व संग्रह किया है, मैत्री समूह के माध्यम से मुनिश्री के प्रथम पुण्य स्मरण पर ग्रन्थ को प्रकाशित किया जाना था पर मेरा सुझाव रहा कि शीघ्रता में ऐसा ग्रन्थ निकल पाना संभव नहीं है, जो संग्रहणीय व पठनीय हो, जो अनेक भक्तों को परितुष्ट कर सके। सामग्री अपूर्ण है, अतः इस कार्य को आगामी योजना के लिए अभी स्थगित कर दिया गया है।

प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर ऊर्ध्वारोही मुनि को श्रद्धांजलि स्वरूप 'सतह से ऊपर' स्मरणिका प्रकाशित की जा रही हैं, जिसमें चुने हुए संस्मरण देश–विदेश से प्राप्त हुए हैं। भक्तों की विनयांजलियां व उनकी कुछ कविताएं व उद्धरण प्रकाशित कर रहे हैं। प्रो. सरोजकुमार, इन्दौर का इस कार्य में मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। विशेष सहयोगी कु. निशा जैन, भोपाल व श्री आलोक जैन, मुंबई के अथक प्रयास सराहनीय हैं।

– डॉ. राजेन्द्र पटोरिया

वैज्ञानिकता एवं विज्ञान की धार्मिकता को निकट लाने का प्रयास

''अभी मुझे और धीमे कदम रखना है,
अभी तो चलने की आवाज आती है।''

अपनी साधना–यात्रा में ऐसा सूक्ष्म आत्मालोचन करने वाले संत–कवि क्षमासागरजी अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति में, अपनी सूक्ष्म टिप्पणियों में ऐसा कह जाते हैं कि पाठक भाव विभोर होते न होते विचारोद्वेलित हो उठता है। अत्यन्त कोमलता के साथ वे मनुष्य की सांसारिकता को दर्पण के सामने सरका देते हैं। पाठक बिम्ब–प्रतिबिम्ब में स्वयं को पाकर छवि पर रीझता हुआ विचलित हो उठता है।

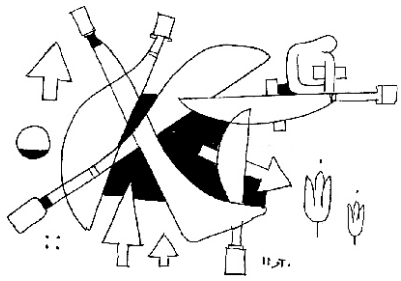

सिंघई परिवार में जन्मे वीरेन्द्र कुमार ने सागर विश्वविद्यालय से भूगर्भ विज्ञान में एम.टेक. की उपाधि प्राप्त कर, तपोनिष्ठ मुनिश्री विद्यासागर के आध्यात्मिक आलोक में अपनी युवावस्था में गृह त्याग कर, दीक्षा अंगीकार कर ली थी। वीरेन्द्र कुमार ने नया नाम पाया था, क्षमासागर। जीवन में न कहीं निराशा थी, न हताशा। न कहीं कोई असफलता, न कोई विरक्ति प्रेरक कटु प्रसंग। स्वेच्छा और स्वप्रेरणा से आत्मकल्याण की ओर आप अपने गुरू के आध्यात्मिक प्रभाव में प्रवृत्त हुए थे।

वीतराग मुनि के जीवन और चर्या ने उन्हें ऐसे प्रभावृत्त से मंडित कर दिया कि उनका प्रथम श्रेणी का कवि–व्यक्तित्व, दूसरी पंक्ति में कहीं बैठा मिलता है। कविता का संसार उनकी प्राथमिकता नहीं है, पर उनकी प्रतिभा में कविता ऐसी समाई है कि वह अप्राथमिक बन जाने पर भी, उनकी अभिव्यक्ति को समृद्ध करती हुई, पाठक को कभी भाव विभोर, कभी उद्वेलित और प्रायः आत्मालोचन की ओर प्रवृत्त करती हुई, उससे ऐसा संबंध बना लेती है कि वह उससे बंध जाता है। अन्तःकरण को विस्तार देते हुए, उनकी कविता और उनका लेखन, पाठक के मन का परिष्कार करते हैं।

मुनिश्री का ज्ञान और सरलता सदैव भक्तों को अपनी जिज्ञासा एवं शंकाओं के समाधान हेतु आकर्षित करता था। प्रश्नोत्तर के संवादपूर्ण प्रहर में मुनिश्री से प्रश्न करने वालों में, जहाँ जिज्ञासु किशोर होते थे, वहीं प्रकाण्ड पंडित भी। जीवन, जगत, आत्मा, परमात्मा और इनसे संबंधित सैकड़ों रहस्यों को लेकर उठती जिज्ञासाओं के उत्तर, मुनिश्री के मुख से सुनना, अपने आप में एक अलौकिक अनुभव था। जो किताबों से नहीं मिल पाता, जो शास्त्रों में उलझा रह जाता है, जो परम्पराओं से अस्पष्ट चला आया है, जो रूढ़ियों से अतार्किक है, जो पूछने में बालोचित लगता है, जो पूछा जाने योग्य प्रतीत नहीं होता, वह सब भी मुनिश्री के सान्निध्य में, प्रासंगिक चर्चा का विषय बन जाता था।

अद्वितीय कवि, चिन्तक एवं विज्ञानविद् मुनिश्री की मनीषा ने धर्म की वैज्ञानिकता एंव विज्ञान की धार्मिकता को एक दूसरे के निकट लाने का प्रयत्न किया है। अतः विज्ञान एवं धर्म, उनकी व्याख्याओं में एक–दूसरे के प्रतिरोधी न बनकर, परस्पर पूरक बने मिलते हैं। धर्म एवं विज्ञान के प्रति मुनिश्री की यह दृष्टि जैन एंव अजैन, समस्त बन्धुओं को समान रूप से अपनी तार्किकता के कारण, आधुनिक और अनुकूल प्रतीत होती है। मुनिश्री की, मन को छूने वाली भाषा और शैली, पाठक को मर्म तक सहज ही पहुँचा देती है।

–प्रो. (डॉ.) सरोज कुमार

मुक्ति

मुनि क्षमासागर

जो ज्योति–सा
मेरे हृदय में
रोशनी भरता रहा
वह देवता।

जो साँस बन
इस देह में
आता रहा
वह देवता।

जिसका मिलन
इस आत्मा में
विराग का
कोई अनोखा गीत
बनकर, गूँजता
प्रतिक्षण रहा
वह देवता।

मैं बँधा जिससे
मुझे जो मुक्ति का
सन्देश नव
देता रहा
वह देवता।

जो समय की
तूलिका से
मेरे समय पर
निज समय
लिखता रहा
वह देवता।

जो मूर्ति में
कोई रूप धरता
पर अरूपी ही रहा
वह देवता।

जो दूर रहकर भी
सदा से
साथ मेरे है
यही अहसास
देता रहा
वह देवता।

मैं जागता हूँ
या नहीं
यह देखने
द्वार पर मेरे
दस्तक सदा
देता रहा
वह देवता।

जो गति
मेरी नियति था
ठीक मुझ–सा ही
मुझे करता रहा,
वह देवता।

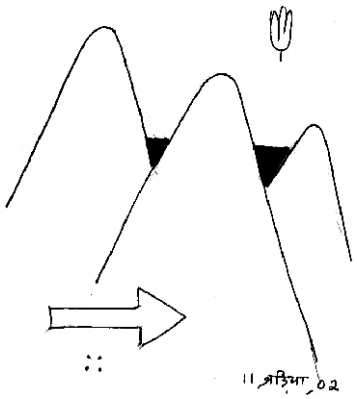

मैं कविता लिखता हूँ

अब जब
मैं कविता लिखता हूँ –
आकाश हँस देता है,
चिड़िया गाने लगती है,
और नदी मुस्कुराकर
आगे बढ़ जाती है।
जैसे सब पूछते हों,
कि हमारे सिवाय
तुम और क्या
लिखते हो?

– मुनि क्षमासागर

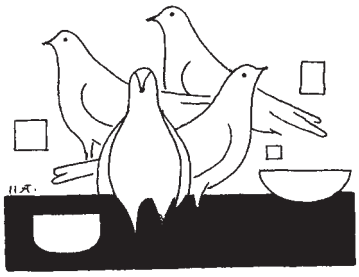

चिड़िया

मैं देखता हूँ
चिड़िया
रोज आती है ।
और मैं जानता हूँ
वही चिड़िया
रोज नहीं आती ।
पर यह दूसरी है
मैं ऐसा कैसे कहूँ !
अच्छा हुआ
मैंने कोई नाम नहीं दिया
उसे चिड़िया ही
रहने दिया।

चिड़िया ने
अपनी चोंच में
जितना समाया
उतना पिया
उतना ही लिया,
सागर में जल
खेतों में दाना
बहुत था।

चिड़िया ने
घोंसला बनाया इतना
जिसमें समा जाए
जीवन अपना
संसार बहुत बड़ा था।

चिड़िया ने रोज
एक गीत गाया
ऐसा जो
धरती और आकाश
सब में समाया
चिड़िया ने सदा सिखाया
एक लेना
देना सवाया।

साधना

अभी मुझे और धीमे
कदम रखना है,
अभी तो
चलने की
आवाज़ आती है।

अकिंचन

देने के लिए
मेरे पास
क्या है ?
सिवाय इस अहसास के
कि कोई
खाली हाथ
लौट न जाए।

पहला कदम

सारे द्वार
खोलकर
बाहर निकल
आया हूँ,
यह
मेरे भीतर
प्रवेश का
पहला कदम है।

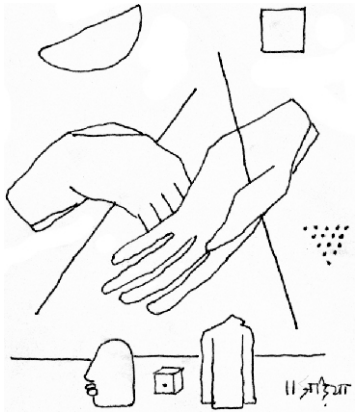

मौत

मुझे मौत में जीवन के फूल चुनना है।
अभी मुरझाना, टूटकर गिरना और अभी खिल जाना है।
कल यहाँ आया था, कौन कितना रहा इससे क्या ?
मुझे आज अभी लौट जाना है।
मेरे जाने के बाद लोग आएँ, अर्थी संभाले, कांधे बदलें,
इससे पहले मुझे खुद संभल जाना है।
मौत आए और जाने कब आए,
अभी तो मुझे संभल–संभलकर रोज–रोज जीना और रोज–रोज मरना है।

– मुनि क्षमासागर

ना सही

माना कि हममें
भगवान बनने की
योग्यता है
पर इस बात पर
हम इतना
अकड़ते क्यों हैं?
(वह तो किसी
चींटी में भी है)
सवाल सिर्फ
योग्यता का नहीं
हू–ब–हू होने का है
स्वयं को
भगवान मानने/मनवाने का नहीं
स्वयं भगवान
बन जाने का है
और फिर इस बार
ना सही भगवान
एक बेहतर
इन्सान तो बन जाएँ।

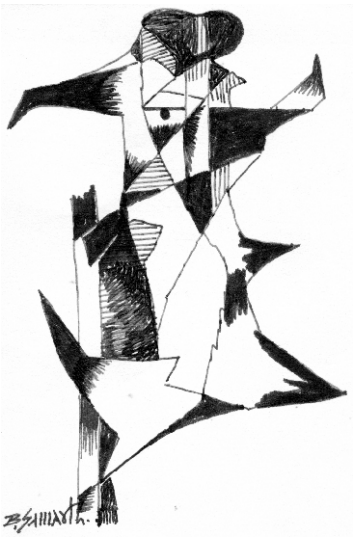

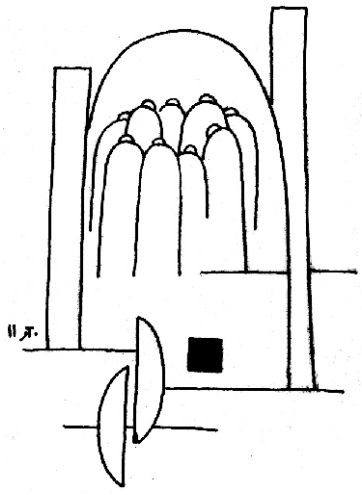

मन ही तो है

यह जानते हुए भी
कि किसी को
कुछ दे नहीं पाऊँगा,
दिया भी नहीं जा सकता,
मन करता है
अपने को समूचा दे दूँ।

किसी की पीड़ा
बाँट नहीं सकूँगा,
कोई बाँट भी नहीं सकता,
मन करता है
सबकी पीड़ा
अपने में ले लूँ।

सारा रास्ता
अकेले ही तय करूँगा,
सभी को करना होता है,
मन करता है
कि सबको साथ ले लूँ।

– मुनि क्षमासागर

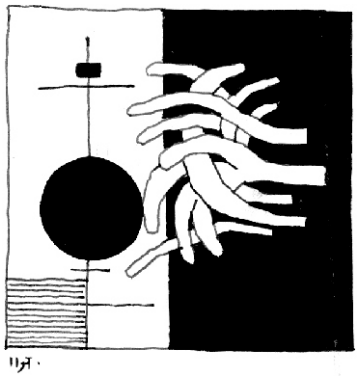

कहनी-अनकहनी

कुछ कहने से पहले
हम कितना सोचते हैं
कि इस बार
सब कह देंगे
पर कहने के बाद
मालूम पड़ता है
कि कहा कम
और अनकहा
ज्यादा रह गया हैं.
असल में, भावों के
प्रवाह में शब्दों का सेतु
या तो बन ही नहीं पाता
या टूट जाता हैं ।

स्वीकारोक्ति

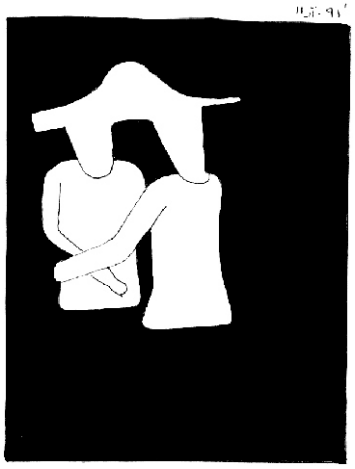

हम
सबकी सब बातें
चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं.
लोग कहते हैं
की सब स्वीकार करते जाना
कमजोरी है ।
सो हम इस बात को भी
स्वीकार कर लेते हैं ।
क्या करें
हम कमजोर हैं
हमसे व्यर्थ
लड़ा नहीं जाता ।

– मुनि क्षमासागर

कभी ऐसा हो

कभी ऐसा हो
की देने का मन हो
और लेने वाला
कोई करीब न हो,
कभी हम
कुछ कहना चाहें
और सुनने वाला
कोई करीब न हो,
तब अहसास होता है
की देने और
सुनने वाले से
लेने और सुनने वाला
ज्यादा कीमती है ।

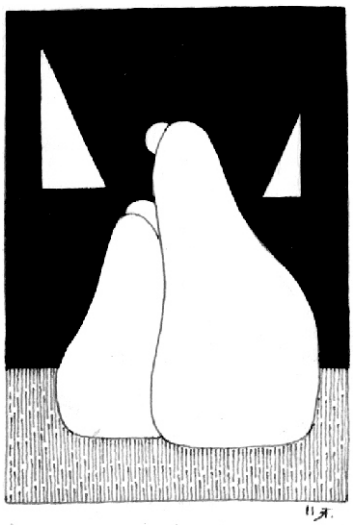

भाई तुम महान हो

मैंने आकाश से कहा –
तुम बहुत ऊँचे हो
आकाश ने
मुस्कराकर कहा –
तुम मुझसे भी
ज्यादा ऊँचे हो

मैंने सागर से कहा –
तुम खूब गहरे हो
सागर ने
लहराकर कहा –
तुम मुझसे भी
अधिक गहरे हो

मैंने सूरज से कहा –
सूरज दादा!
तुम बहुत तेजस्वी हो
सूरज ने हँसकर कहा –
तुम मुझसे भी
कई गुने तेजस्वी हो

मैंने आदमी से कहा –
भाई तुम महान हो
आदमी झट से बोला –
तुम ठीक कहते हो।

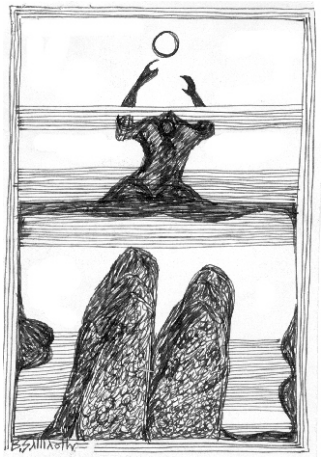

सीढ़ी हूँ

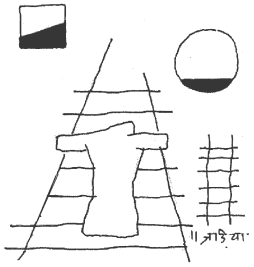

मैं तो
लोगों के लिए
एक सीढ़ी हूँ,
जिस पर
पैर रखकर
उन्हें ऊपर पहुँचना है।
तब सीढ़ी का
क्या अधिकार
कि वह सोचे,
कि किसने
धीरे से पैर रखा
और कौन
उसे रौंदता चला गया।

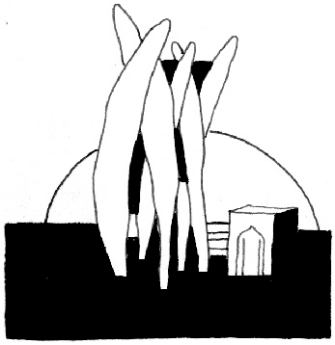

भगवान

भगवान
कितना बड़ा है
मैंने
एक बच्चे से पूछा
उसने दोनों हाथ फैलाये
और जैसे
मुझे समझाया
कि इतना बड़ा

तब सचमुच
मुझे भी लगा
कि जितना जिसके
जीवन में समा जाए
भगवान उतना ही बड़ा।

– मुनि क्षमासागर

नियम बने रहते हैं

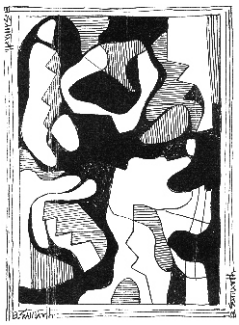

नियम सब
बने हैं
इसलिए कि
हम बने रह सकें ।
होता यह है
कि हम टूटते जाते हैं
और नियम बने रहते हैं ।
टूटे हुए नियम
जोड़ना आसान है
पर टूटी हुई जिंदगी
जोड़ने में
जिन्दगियाँ गुजर जाती हैं ।

कल ?

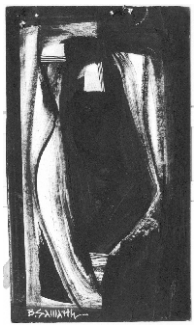

यहाँ के लोग
वक्त के
बड़े पाबंद हैं,
कल का काम
आज नहीं करते.
और कल ?
कल तो कभी नहीं आता,
इसलिए
कभी नहीं करते ।

एक अहसास था

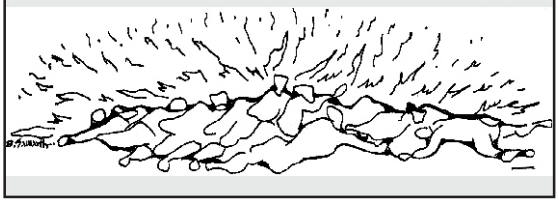

जहाँ तरलता थी
मैं डूबता चला गया,
जहाँ सरलता थी
मैं झुकता चला गया,
संवेदनाओं ने
मुझे जहाँ से छुआ
मैं वहीं से
पिघलता चला गया ।
सोचने को
कोई चाहे
जो सोचे,
पर यह तो एक
अहसास था
जो कभी हुआ
कभी न हुआ ।

– मुनि क्षमासागर

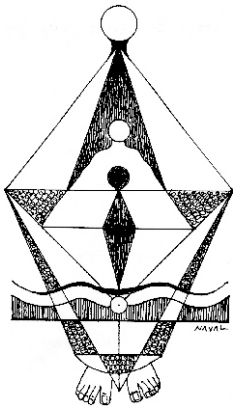

सहयात्राएँ

चलते–चलते
देखता हूँ,
अनायास ही
कोई न कोई
साथ हो जाता है।
कुछ दूर
वह साथ चलता है
फिर या तो
ठहर जाता है
या रास्ता ही बदल लेता है।
मैं यह सोचकर
आगे बढ़ जाता हूँ,
कि साथ चलने का सुख
इतना ही होता है।

संस्मरण

मेरे आत्मीय सखा

1) दशलक्षण से पूर्व प्रतिमाओं का मंजन हो रहा था और भगवान बाहुबली की प्रतिमा किसी व्यक्ति से खण्डित हो गई। उस व्यक्ति ने बिना किसी को बताये चुपचाप सावधानी से प्रतिमा को वापिस रख दिया। जब मेरे आत्मीय सखा (वीरेन्द्र /मुनि क्षमा सागर जी) ने प्रतिमा जी को जब यथा स्थान विराजमान करने के लिए उठाया तो प्रतिमा दो भागों में बटीं थी। उन्हें बेहद कष्ट हुआ। उन्होंने सभी के सामने प्रण किया कि जब तक नई प्रतिमा स्थापित नहीं होगी तब तक वे अपनी प्रिय अरहर की दाल का त्याग रखेंगे।

2) एक दिवस एक श्रावक ने आचार्य विद्यासागर जी से कहा–ये नये महाराज जीरे के पतले भाग को बाल समझकर अंतराय कर देते हैं। आप उन्हें समझाइये! आचार्य भगवन ने कहा–क्यों महाराज ये क्या कह रहे हैं? क्षुल्लक श्री कभी आँखें उठाते नहीं थे अपने गुरू के समक्ष, सो क्या कहते?आचार्य भगवन ने कहा–नये महाराज अपने में परिवक्व और पूर्ण आत्मीय वैज्ञानिक हैं। वातावरण में मृदु हास्य व्याप्त हो गया। आचार्य श्री कभी ज्यादा नहीं बोलते थे सो इस कला को मेरे आत्मीय सखा ने स्वयं में आत्मसात कर लिया।

3) सभी महाराज आचार्य विद्यासागर जी की वैयावृत्ति कर रहे थे! आचार्य श्री ने सहजता से पूछ लिया – सुकुमार देह को ठंड का अनुभव कुछ ज्यादा हो रहा होगा सो चटाई के साथ प्याँर ले लो तो अच्छा रहेगा! दो आँसू आचार्य श्री के पैर पर गिरे तो उन्होंने हल्के से अपना प्यार भरा आशीष अपने हाथ से सिर पर उढ़ेल दिया! वो दो आँसू कह रहे थे कि जो आचार्य अपने लिये सिर्फ पाटे का उपयोग करते हैं और अपने शिष्यों के लिये इतना कर रहे/कह रहे हैं! वो चटाई भी बोझ लगने लगी अब तो! ऐसे जीता जाता है इंद्रियों की कामनाओं को!

4) 2013 गढ़ाकोटा में कई बार कहा कि सल्लेखना के भाव बन रहे हैं आचार्य महाराज से निवेदन करो मेरी तरफ से! आचार्य श्री ने कहा कि भाव बहुत अच्छे हैं। देह के प्रति ममत्व कम करें। साधना, अभ्यास निरंतर बढायें!

– ब्र. संतोष भैया, सागर

सच्चा समर्पण

एक दिनपूज्य गुरुदेव के चरणों में बैठा था। कुछ दर्शनार्थी बाहर से आये हुए थे जिन्हें देखकर पूज्यश्री की आँखें डबडबा गईं, मैंने पूछा–गुरुदेव, आप क्यों रो रहे हैं? इससे तो असाता का आश्रव होगा। तब उन्होंने कांपती हुई कलम से लिख कर बताया– मुझे पीड़ा है इस कारण से आँसू नहीं आ रहे हैं, आँसू तो इस कारण आ रहे हैं कि कितने लोग मेरे पास आशा लेकर आते हैं कि मुनिश्री के पास कुछ मिलेगा पर मैं उनको कुछ भी नहीं दे पा रहा हूँ, यही सबसे बड़ी पीड़ा है। तब मैंने उनसे कहा आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि आप कुछ नहीं दे पा रहे हैं? आपसे जो मिल रहा है वह दुनिया में किसी के पास नहीं मिल पायेगा। आपसे मिल रही है हमें कष्टों में सहनशील बनने की क्षमता, आपसे मिल रहा है हमें दुखों को सहन करने का साहस, प्रतिकूल परिस्थितियों में व्रत का पालन करने का दंभ और आप ही ने तो सिखायी है हमें क्षमता, समता, सहजता, सरलता और दृढ़ता।

तब मुनिश्री मुस्कुराये और उनकी मुस्कराहट को देख कर कमरे में बैठे सभी दर्शनार्थियों के चेहरे खिल गए। उसी समय मैंने पूज्यश्री से कहा कि गुरुदेव आपने जिन पैरों से समूची भारतभूमि नापली, आपने जिस मुख से असंख्य जीवों को धर्मामृत का पान कराया, वहीं आप जब चार कदम भी नहीं चल पा रहे, एक वाक्य भी आपके मुख से नहीं निकल पा रहा है तब आप अन्दर ही अन्दर कैसा फील कर रहे होंगे? तब पूज्य श्री ने दाईं ओर दीवाल पर लगी हुई एक तस्वीर की ओर इशारा किया जिसमें बने हुए थे एक जोड़ी पाँव के निशान और कुछ पंक्तियाँ लिखी थीं जिन्हें पूज्य श्री ने पढ़ने को कहा। उन पंक्तियों को पढ़कर मुझे लगा यही है सच्चा समर्पण। उन पंक्तियों में लिखा था–

एक रात मैंने सपना देखा कि
मैं समुद्र के किनारे भगवान के साथ
चल रहा हूँ और आसमान में
मुझे अपनी बीती जिन्दगी के दृश्य
दिखाई दे रहे हैं।
हर दृश्य में
मुझे दो जोड़ी पाँवों के निशान रेत में
नजर आये–एक मेरा और एक
भगवान के, जब मेरी जिन्दगी का
आखिरी दृश्य मेरे सामने आया तो,
मैंने पीछे मुड़कर देखा कि कई बार
मेरी जिन्दगी के मार्ग पर केवल एक
जोड़ी पाँव के निशान ही थे
मुझे यह भी अहसास हुआ कि
यह मेरी जिन्दगी के सबसे कठिन
और कमजोर क्षणों में हुआ था।
सबसे कठिन क्षणों में केवल एक
जोड़ी पाँव के निशान ही थे।
मुझे यह समझ नहीं आया कि
जब मुझे आपकी सबसे अधिक
आवश्यकता थी तभी आपने मुझे
अकेला क्यों छोड़ दिया?
भगवान ने उत्तर दिया–
वत्स! मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ।
परीक्षा और कष्ट के पलों में तुम्हें
कभी भी अकेला नहीं छोड़ सकता हूँ
जब भी तुमने एक जोड़ी पांव के निशान देखे
यह वही समय था जब मैं तुम्हें
गोद में उठा कर चल रहा था।
बस यही किसी के होने का अहसास मुझे आज तक थामे हुए है।

–ब्र.विजय भैयाजी

जीवन निरंतर बीतता जाता है और स्मृतियाँ संचित हो जाती हैं। सारी स्मृतियाँ हम माला में मोती की तरह पिरोते जाएँ तो समय पर ये स्मृतियाँ हमें संभालती और निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रहती हैं।

– मुनि क्षमासागरजी

अंतिम सफर

मेरे आत्मीयसखा दूर बहुत दूर अनंत ब्रह्मांड में खो गये पता नहीं कौन दिशा में किस देवत्व को धारण किया! मेरा अंतरमन कह रहा है कि वेदना के क्षणों को समता से जिसने जिया, कर्मों के उदय में व्याकुलता जिसके जीवन में नहीं आयी, परीषहों को जिसने जीता ऐसे मेरे आत्मीय सखा अवश्य ही देवत्व की उच्चता को प्राप्त हुये हैं!

13 मार्च 2015 मोरा जी सागर दोपहर 2:50 बजे मुनि श्री नेमीनाथ जिनालय के नीचे लेटे हैं। माता जी संबोधन दे रही हैं! सांस एक लय में चल रही है विशेष स्पंदन के साथ। उपवास ले लिया था! दूर बैठा निहारता रहा, क्योंकि पास जाने में बंधन था ! मैं शून्य सा होता रहा समय बढ़ता रहा ! मुझसे कहा गया कि महाराज के पास कोई नहीं रूकेगा सो मैं प्रतिकार न कर सका चुपचाप मान गया ! भगवान बाहुबली से प्रार्थना करता रहा भवगन कुछ ऐसा कर दो ताकि मैं अपने सखा के पास रहा आऊं ! रात्रि 9:30 पर जब आदेश मिला – महाराज के पास हमें रूकना है तब भगवान बाहुबली और मेरे सखा महाराज एक दूसरे में एकाकार होते से दिखे ! पूरी रात धीमे–धीमे णमोकार की ध्वनि उनकी साँसों के बीच चलती रही! रात्रि 12:35 वेदना के साथ उठ रही आवाज थम गयी तब मेरे मन में आघात महसूस हुआ ! मेरे सखा ने संकेत दे दिया संभलने और संभालने का !

अंतिम संवाद के कुछ आत्मीय पलः

मैं – महाराज कैसा लग रहा है रत्नत्रय तो कुशल है! वेदना तो नहीं है?

महाराज – मुस्कुरा कर कहा जैसे सब कुशल है!

मैं – महाराज णमोकार करो!

महाराज – ओठों से स्पंदन शुरू किया!

मैं – बहिरंग परिग्रह तो कब का छूट गया अंतरंग से पूर्णतया निवृत्ति का समय है।

महाराज – आंखों से देखा और हल्के से मुस्कुरा दिये।

मैं – मैंने प्रतिक्रमण के कुछ अंश पढ़े और सबसे क्षमा मांगने हेतु प्रेरित किया।

महाराज – एक हाथ थोड़ा सा उठाकर संकेत किया मानो क्षमा सागर के अंतस में क्षमा ही क्षम्य हो।

मैं – महाराज अपने आचार्य भगवन और समस्त संघ को नमोस्तु करो! मैं समझ ना सका तो मैंने पुनः कहा।

महाराज – पिच्छिका की ओर इशारा किया!ये इशारा इंगित कर रहा था। मेरे सखा अपने में पूर्ण जाग्रत अवस्था में हैं! दोनो हाथों में पिच्छिका लेकर माथे से लगा ली।

मैं– महाराज पंच परमेष्ठी का ध्यान करें ! मैं उनका स्वरूप बताता गया उनके चेहरे पर अपूर्व शांति छा रही थी।

महाराज – मध्य रात्रि के समय मेरे हाथ को जोर से पकड़ा !

मैं – महाराज वेदना है क्या? उंगली से इशारा कर कहा–माला करवाना है! मैंने णमोकार की तीन मालायें मंद–मंद आवाज के बीच करवायीं!

महाराज – आंखों में विशेष शोभा के साथ कहा हो मानो कि मेरी यात्रा अंतस में पूरे मनोभावों से जारी है!

ये यात्रा 4:30 तक अनवरत चलती रही । 4:35 पर गर्दन ने हल्के से झुकना शुरू किया तो मेरे हृदय पर दूसरा आघात लगा ! वेदना का शायद अंतिम

साथ था सो कुछ पल आत्मप्रदेशों में संकुचन–विस्तार हुआ !

मैं – समय कम बचा है, महाराज!सिद्धालय पहुंचने के शुद्ध भावों को अपना लो ! यही परम सत्य है यही सच्ची साधना है! मैंने ओम नमः का उच्चारण शुरू कर दिया !

महाराज – ओंठ गतिमान हुये जैसे ओम नमः कह रहे हों !

मैं – महाराज सल्लेखना की यात्रा भीतर चल रही है ना?

महाराज ने सिर हिलाकर स्वीकृति प्रदान कर दी। जैसे कह रहें हों अब तो सब मौन होने का अंतिम क्रम चल रहा है! प्रातः 4:45 पर साधर्मी भैया जी मेरे पास आये तो मैंने इशारा किया दशा की तरफ! तो कहते हैं अभी सबकुछ ठीक है! पर मेरा मन मेरी आँखें तीसरा आघात झेलने को तैयार नहीं थी, नाड़ी ने साथ छोड़ दिया ! हृदयकी धड़कन भी शांत हो चली ! 5:05 पर आंखों ने घूमना शुरू किया तो मेरे अनुभव ने चेताया मुझे कि कुछ क्षण ही शेष हैं ! मैंने महाराज को पूर्ण जाग्रत अवस्था में लाते हुये तेज स्वर में णमोकार शुरू किया।

प्रातः 5 बजकर 10 मिनिट पर मुझे निहारा मैंने सचेत किया ओम की ध्वनि के बीच आंखों की चमक एक दम तेज और तेज और ऊपर की तरफ एक जड़ हो रही !

मेरे आत्मीयसखा दूर बहुत दूर अनंत ब्रह्मांड में खो गये पता नहीं कौन दिशा में किस देवत्व को धारण किया! मेरा अंतरमन कह रहा है कि वेदना के क्षणों को समता से जिसने जिया, कर्मों के उदय में व्याकुलता जिसके जीवन में नहीं आयी, परीषहों को जिसने जीता ऐसे मेरे आत्मीय सखा अवश्य ही देवत्व की उच्चता को प्राप्त हुये हैं!

– ब्र. संतोष भैया, सागर

लक्ष्य पर दृष्टि

यह प्रसंग मुनिश्री के विद्यार्थी जीवन का है। वे सागर यूनिवर्सिटी में 40 स्टूडेंट्स के साथ जियोलाजिकल टूर में गए थे।

पहले ही दिन जब सब विद्यार्थी होटल में खाना खा चुके तब उनके प्रोफेसर (डॉ वी के नायक मेरे पति) जो उनके साथ थे, उनके पास 39 स्टूडेंट्स का ही बिल आया, तब उन्होंने पता किया कि किस स्टूडेंट ने खाना नहीं खाया। पता चला कि वीरेन्द्र सिंघई (मुनिश्री का पूर्व नाम) ने घर से लाया हुआ ही खाना खाया था।

इससे पता चलता है कि मुनिश्री दीक्षा से पूर्व ही शुद्ध भोजन की प्रतिज्ञा का पालन कर रहे थे। उनके पिताजी से भी बातचीत के दौरान प्रोफेसर नायक को पता चला कि दिसंबर की ठण्ड में भी, मुनिश्री रजाई नहीं ओढ़ते थे और ठण्ड में बिना ऊनी कपड़ों के छत पर जाप करते थे।

मुनिश्री के इस अभ्यास ने मुनि बनते ही उपसर्ग व परिषहों को जीतने की क्षमता दी। इतने अल्प काल में ही मुनिश्री ने जैन धर्म के दैनिक कर्त्तव्यों, दर्शन, पूजन, अभिषेक सभी का वैज्ञानिक पक्ष प्रस्तुत कर नयी पीढ़ी को धर्म से जोड़ने का अभूतपूर्व कार्य किया। उनका कहना था कि जिन अभिषेक व जिन पूजा मंदिर की आध्यात्मिक प्रयोगशाला के दो जीवंत प्रयोग हैं। Young Jaina Award अपने आप में एक उपलब्धि है। उनसे प्रेरणा लेकर हम सबको अपने जीवन को उनके सिद्धांतो के अनुसार ढाल कर इस मनुष्य जीवन को सार्थक करने का प्रयास करते रहना चाहिए।

– राजकुमारी नायक, इंदौर

एकलव्य की सी साधना

डॉ. नवीन कु. वर्मा, कुवैत

वीरेंद्र सिंघईजी से मेरी पहली मुलाकात 1974 में हुई जब हम सागर के जियोलॉजी डिपार्टमेंट में बी.एस. सी. के छात्र थे। जल्द ही उनके सहज–सरल, सुशील स्वभाव के कारण हम अच्छे मित्र बन गए। जैन परिवार में जन्में वीरेंद्रजी का शुरू से ही धर्म के प्रति रुझान था, और जब कभी पढ़ाई के सिलसिले में उनके घर जाना हुआ तब उनसे व उनके परिवार जनों से उनकी दिनचर्या के बारे में विदित हुआ। वे प्रारम्भ से ही जैन धर्म के अनुयायी थे और भोर–तड़के स्नान कर नंगे पैर मंदिर में जल चढ़ाने जाने से लेकर सूर्यास्त से पहले भोजन (अन्थऊ) आदि नियमों का कठोरता से पालन करते थे। पर साथ ही वे पढ़ाई पर पूरा ध्यान देते थे और सदैव प्रथम श्रेणी के अग्रणी छात्रों में गिने जाते थे।

बी.एस.सी. की फील्ड ट्रिप्स से लेकर एम.टेक. में ओंकारेश्वर कैंपिंग के दौरान तक हम साथ–साथ एक टेंट या कमरे में रहते थे और इन प्रवासों के दिनों में भी वे यथासम्भव घर से लाई शुद्ध शाकाहारी भोज्य– सामग्री ही ग्रहण करते थे। सहपाठियों द्वारा उनकी धार्मिक दिनचर्या को लेकर किये परिहास या ठिठोलियों पर वे ध्यान नहीं देते थे या जान–बूझकर अनदेखा कर देते थे।

बी.एस.सी. 1977 बैच सहपाठियों के साथ (ऊपर की पंक्ति में बाँए से दूसरे)

पर उनका जीवन लक्ष्य कुछ अलग ही था जिस पर वे एकलव्य की तरह मनन साधना कर दृढ़ निश्चय बना रहे थे। अचानक एक दिन एम.टेक. में फील्ड कैंप के बाद वे अपनी थीसिस सबसे पहले जमा करने आये और डिपार्टमेंट की सीढ़ियों पर बैठकर बोले कि जाने से पहले मैं यह काम अधूरा छोड़–कर नहीं जाना चाहता ताकि कोई अकर्मठ ना समझे।अगले दिन हमें जैन सहपाठियों से पता चला कि वे वापस घर जाने के स्थान पर सीधे जैन मुनि बनने का संकल्प किये हुए 'केश लुंचन' कर क्षुल्लक (दिगंबर जैन मुनि) बन गए। इस तरह गुणी–धनी वीरेंद्रजी ने धर्म, समाज एवम् अंतर्खोज को समर्पित अपनी कठोर अनुशासन, मनन और अध्ययन से भरी नई यात्रा प्रारंभ की और समयोपरांत आचार्य श्री विद्यासागर के प्रिय शिष्य **"मुनि श्री क्षमासागर"** के नाम से प्रसिद्ध हुए।

हम सहपाठी यथासंभव उनके सागर के आस–पास प्रवास होने पर उनसे मिलने जाते और उनके सानिध्य का लाभ उठाते । ऐसे ही एक बार 1998 में जब वे गढ़ाकोटा में चौमासे पर थे तब मैं सागर युनिवर्सिटी पी.एच.डी. डिग्री लेने आया और हमारे सहपाठी प्रदीप कठल, अशोक जैन और राजेंद्र त्रिवेदी आदि के साथ उनसे

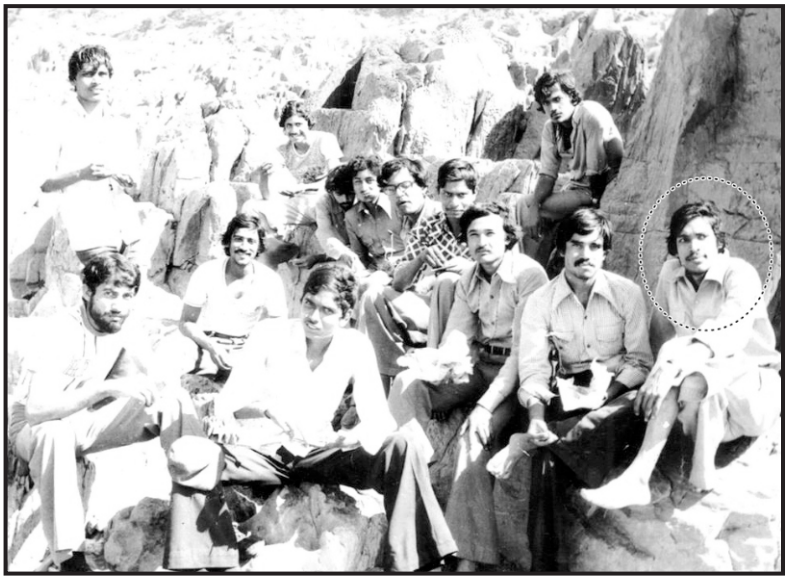

एम. टेक. (एप्लाइड जियोलॉजी) 1980 बैच सहपाठियों के साथ ओंकारेश्वर में (आगे की पंक्ति में सबसे दायें)

मिलने गढ़ाकोटा पहुंचा । तब तक वे जैन समाज के बहुत प्रसिद्ध महामुनि बन समाज के स्तम्भ बन गए थे और सैकड़ों श्रद्धालुओं से घिरे होने के बावजूद हमें १५ मिनट दर्शन व चर्चा के लिए अलग से समय दिया। मुझे अच्छी तरह से याद है कि वे जियोलॉजी (विशेष–कर प्लेट टेक्टोनिक्स) की नई खोजों के प्रति उत्सुक थे और मेरे पूछने पर बोले कि ''समय मिलने पर यथासंभव इन सहपाठियों द्वारा दी किताबें पढता हूँ।'' मैंने भी हंसकर पूरी संजीदगी से कहा कि चलो मेरी इस कागजी पी.एच.डी. डिग्री के बहाने असली 'डॉक्टर ऑफ फिलॉसोफी' डिग्रीधारी से मुलाकात तो हो गई ।

समस्या हल हो गई

आज तक जो भी मुनि श्री के पास अपनी समस्या लेकर पहुँचा है, मुनि श्री के आशीर्वाद से उसका कल्याण हुआ है, मुझ पर भी उनकी कृपा हुई इसलिए मैं सौभाग्यशाली हूँ। जब कॉलेज के बाद इंजीनियरिंग खत्म करने के बाद जॉब के लिए बैंगलोर आना चाहती थी तो बहुत परेशानियाँ थीं और माता पिता भी यहाँ भेजने से थोड़ा डरते थे। मुनिश्री उन दिनों सागर में ही थे, मैं उनके दर्शन को गई और आशीष माँगा और उनकी ऐसी कृपा हुई की मेरी हर समस्या हल हो गई। उसी समय मुनि श्री के दर्शन करने एक भैया और आये हुए थे जो बैंगलोर में ही रहते थे, उन्होंने मुझे वहाँ रहने और जॉब सर्च करने में पूरी हेल्प की और कुछ ही समय में मेरी जॉब लग गई। यह सब मुनिश्री का ही प्रभाव था कि मुझे उन भैया का साथ मिला और आज मैं यहाँ हूँ। उनके बताये मार्ग पर चल सकूं यही मेरी भावना है।

– अर्निका जैन, बैंगलोर

छककर आम खाए

अभी भी बचपन के उस वीरेन्द्र की आवाज कान में गूंजती है जब वह मुझे कक्का–कक्का कहकर पुकारता, झूला झूलता, मस्ती करता । दुबला, गोरा व बातूनी वीरेन्द्र शुरू से चंचल तो था ही। बड़ा भाई अरूण सीधा व कम बात करने वाला था। मेरी भाभी (वीरेन्द्र की माँ) मुझसे कहतीं, ''लल्ला जब भी तुम सागर आत हो वीरेन्द्र तो तुमसे चिपको रहत है।''

जब मैं छोटा था प्रायः प्रत्येक वर्ष गर्मी की छुट्टियों में सागर चला जाता था। एक माह कैसे गुजर जाता पता ही नहीं लगता था। मेरी फुआ (श्रीमति चम्पाबाई) का बहुत प्यार मिलता था मुझे। मेरी बुआ बहुत धार्मिक प्रवृत्ति की थीं, उनका गला बहुत सुरीला था। वह भजन व गीत गाती तो लोग मंत्रमुग्ध हो जाते थे। पटोरिया परिवार की सागर में कई जगह रिश्तेदारी होने के बाबजूद कोई भी व्यक्ति जब सागर जाता तो रिश्तेदारी में न रुककर फुआ के घर में रुकता। उनके रहते किसी ने अन्य जगह रुकने की हिम्मत तक नहीं की। सबके प्रति उनकी आत्मीयता बरसती थी।

हमारी भाभी (वीरेन्द्र की माँ) बहुत ही आत्मीय थीं। बड़े मीठे बोल बोलती थीं। सुबह से लेकर शाम तक दूध, नाश्ता, खाने का पूरा–पूरा ध्यान रखतीं। समय निकालकर महमानों के साथ बैठती व बुन्देलखण्डी बोली में बड़ी प्यारी–प्यारी बातें करती थीं।

श्री जीवन भैया (वीरेन्द्र के पिता जी) का मेरे प्रति बहुत दुलार तथा अपनापन था । वह बोलते बहुत कम थे, परन्तु मुझसे ढ़ेर सारी बातें करते। उनके तीनों बच्चे संतोष, अरूण व वीरेन्द्र, भैया से बहुत कम बात करते व घबराते थे। जब भैया मुझसे ढेर बातें करते व मुझे घबराया न पाकर यह तीनों बडे आश्चर्यचकित होते, उस समय मैं अपने आप को गर्वीला महसूस करता था।

बड़ा बाजार (सागर) के तीन मंजिला में तीसरी मंजिल पर कमरा व छत है। गर्मी में मैं, संतोष, अरूण व वीरेन्द्र इसी छत पर सोते थे चूंकि फुआ, भैया, भाभी उसके नीचे माले पर सोते थे इसलिए किसी का डर नहीं था, काफी रात सभी गपशप करते रहते थे। वीरेन्द्र तो मुझसे चिपका ही रहता। उन्हीं दिनों जीवन भैया के खेत में ढेरों कच्चे आम आते थे, उन्हें सबसे ऊपर के कमरे में फैलाकर ''पाल'' लगाया जाता था। इस ''पाल'' लगाने की प्रक्रिया से आम धीरे–धीरे पकते रहते थे। सुबह होते ही वीरेन्द्र व संतोष पके हुये आम ढूँढते व मुझे जगाकर कहते कक्का–कक्का 15–20 आम पक गये हैं उठो जल्दी खालो। हम लोग बिना मुँह धोये ही फुर्ती से आम खाते, छिलके व गुठली उसी ''पाल'' के नीचे कोने में दबा देते। भाभी ऊपर आतीं, आम टटोलतीं उन्हें पके आम नहीं मिलने पर चली जातीं। यह प्रक्रिया 5–6 दिन तक चलती। भाभी हम लोगों की चालाकी ताड़ लेतीं व झूठी गुठली, छिलके एक टोकने में भरकर सामने रखकर कहतीं–''काय लल्ला चुपके–चुपके, चोरी–चोरी सारे पके आम खा जात हो। जब भैया पूछें अब तक आम नहीं पके तो तुम लोग चुप रहियो, हम बोल देहें कि कुछ आम तो पके थे, हमारी जीभ ललचाई, थोड़े से हम खा गये और थोड़े लल्ला को खिला दिये, लल्ला वह तुम्हारा नाम सुनकर गरम नहीं होंगे।'' उसके बाद तो ढेरों आम पक जाते, कोई समस्या नहीं रहती, खूब छककर आम खाते, मौज उड़ाते।

श्री जीवन भैया की गांधीगंज में थोक गल्ले की दुकान थी व आढ़तिया का काम भी चलता था। बड़ी प्रतिष्ठित दुकान मानी जाती थी। गर्मी में अनाज का सीजन होने के कारण भैया शाम के समय खाना खाने घर नहीं आ पाते थे, उनके लिये एक नौकर डब्बा ले जाता था। मैं भी कभी भैया के साथ दुकान चला जाता था पर ''अन्थऊ'' के समय घर आ जाता था। संतोष व वीरेन्द्र मेरी बाट जोहते रहते थे, मेरे पहुँचने पर संतोष पटा–मोंदरा लगाती व थाली रखती। भाभी गरम–गरम पूड़ी निकालकर, उड़द की कटकरी दाल व सब्जी परोसती, संतोष व वीरेन्द्र मुगद के लड्डू का डिब्बा मेरे सामने रख देते। वीरेन्द्र मेरी थाली में एक साथ 3–4 मुगद के लड्डू डाल देता, भाभी मुस्कुराती रहतीं व कहतीं– खालो लल्ला वीरेन्द्र बड़े लाड़ से खिला रहा है अपने कक्का को। मैं थोड़ा झेंपता। जब तक मैं सागर रहता यह सिलसिला रोज चलता।

समय बीतता गया पता लगा वीरेन्द्र एम.टेक कर रहा है। फिर एक दिन समाचार मिला कि वीरेन्द्र क्षुल्लक हो गया है, मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। फिर समय चक्र आगे बढ़ता रहा, फिर एक दिन समाचार मिला कि वह आचार्य श्री विद्यासागर महाराज से दीक्षा लेकर मुनि क्षमा सागर हो गए हैं।

भैया के मकान में नीचे के कोठे में गाय बंधती थी, मैं व वीरेन्द्र कभी नीचे चले जाते, गाय को घास खिलाते, वीरेन्द्र तो गाय के बच्चे से लिपट जाता व ढ़ेरों प्यार जताता। उनके मन में जानवरों के प्रति बहुत प्यार था।

कॉलेज की पढ़ाई के दौरान ही मुझे कोल बोर्ड आफिस, छिंदवाड़ा में नौकरी मिल गई। अब सागर जाना एक दम छूट सा गया। फुआ गुजर चुकीं थीं। अरुण का विवाह सिवनी में प्राचार्य श्री शिखरचंद जैन की सुपुत्री से हुआ। मैं सागर नहीं जा पाया था, पर विवाह में सम्मिलित होने हेतु सिवनी पहुँच गया था, उस समय मेरे गले में बहुत पीड़ा थी। संतोष व वीरेन्द्र मिले व मेरी असहनीय पीड़ा देखकर बहुत दुःखी हुये। वीरेन्द्र बार–बार पूछता कक्का आपके गले को क्या हो गया है तथा दुःखी रहता। मैं उसे समझाता कि डॉक्टर बीमारी का पता नहीं लगा पा रहे परन्तु डॉक्टर के अनुसार घबराने जैसे कोई बात नहीं है।

समय बीतता गया पता लगा वीरेन्द्र एम.टेक कर रहा है। फिर एक दिन समाचार मिला कि वीरेन्द्र क्षुल्लक हो गया है, मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। फिर समय चक्र आगे बढ़ता रहा, फिर एक दिन समाचार मिला कि वह आचार्य श्री विद्यासागर महाराज से दीक्षा लेकर मुनि क्षमा सागर हो गये हैं।

इस बीच मेरा आफिस छिंदवाड़ा से नागपुर आ गया था। कई बार वीरेन्द्र के मुनि के रूप को देखने की लालसा हुई। कार्यक्रम भी बनाया पर ऐन वक्त पर ऐसा कोई कार्य निकल आता कि वीरेन्द्र उर्फ क्षमा सागर के दर्शन लाभ नहीं पाया ।

मेरे छोटे फूफाजी परम आदरणीय डॉ. दरबारी लाल कोठिया, जैन धर्म के प्रकाण्ड पंडित, प्रख्यात साहित्याचार्य जो पहले वाराणसी में संस्कृत के प्रोफेसर थे, वे बनारस छोड़कर अपने चचेरे भाई प्रकाण्ड जैन विद्वान व प्रसिद्ध लेखक पंडित बंशीधर जी व्याकरणाचार्य जी के पास आकर रहने लगे थे। हमें खबर मिली कि वे बीमार हैं। मैं व हमारे मौसेरे भाई श्री कमलेश चन्द्र सिंघई उर्फ कम्मू भैया जो उन दिनों अमरावती से नागपुर आकर बस गये थे, उनके सुपुत्र दीपक सिंघई ने नागपुर की एक फर्म में नौकरी ज्वाईन कर ली थी अतः भैया तथा उनकी सुपुत्री आरती भी नागपुर आ गये थे। मैं व भइया फूफा जी से मिलने बीना गये। वहाँ पता लगा कि श्री क्षमासागरजी वहां से 30–35 किलोमीटर दूर मुंगावली में संघ सहित रूके हैं। फूफाजी ने सलाह दी कि पहले क्षमासागर जी के दर्शन कर आओ। मैं और कम्मू भैया सुबह रवाना होकर दोपहर तक मुंगावली पहुँचे वहाँ पहुँचते ही हमने वहाँ व्यवस्थापकों से क्षमा सागर जी के दर्शन की इच्छा प्रकट की। वहाँ के व्यवस्थापकों को हमने क्षमा सागर जी से अपने संबंध भी बताये। व्यवस्थापकों ने बड़ी आत्मीयता से हम लोगों का स्वागत किया। हाथ–मुँह धोकर हम जैसे ही ऊपर गये वहाँ क्षमासागर जी बैठे

थे तथा उनके पास ही कुछ दूरी पर संघ के अन्य मुनि व क्षुल्लक थे। मैं इस घबराहट में था कि इनमें से कौन वीरेन्द्र उर्फ क्षमासागर हैं उन्हें मैं पहचान कैसे पाऊंगा? एक लम्बा अरसा जो गुजर चुका था । जैसे ही मैं नजदीक गया तो बड़ी आत्मीय आवाज ने मेरा स्वागत किया। ''राजेन्द्र जी आयें हैं'' यह उन्होंने अपने संघ के लोगों को बतलाया। मैं समझ गया कि यह आवाज क्षमा सागर जी की ही है, मैं तो अवाक सा रह गया कि इतने लम्बे अरसे बाद उन्होंने मुझे कैसे पहचान लिया। क्योंकि मेरी दाढ़ी तथा बड़े बालों के कारण मेरा रूप ही बदला हुआ था। क्षमा सागर जी ने अपने संघ के लोगों से जैसे ही कहा राजेन्द्र जी आये तो संघ के 1–2 मुनियों ने तुरन्त कहा अच्छा खनन भारती के सम्पादक पधारे हैं। वहाँ व्यवस्थापकों को निर्देश दिया गया कि पहले हमें भोजनशाला में ले जायें बाद में चर्चा करेंगे। हम लोगों ने भोजन करने के बाद जैसे ही क्षमा सागर जी के पास जाना चाहा तो पता लगा कि वह अभी ध्यान में हैं । दो से ढाई बजे तक लोग उनके दर्शन करेंगे तथा तीन बजे वह धर्म ज्ञान देने क्लास में पढ़ाने चले जायेंगे । हम दोनों ठीक 2 बजे उनकी कुटिया में पहुँच गये। हमसे पहले ही काफी लोग उनके दर्शन हेतु खड़े थे 2 बज कर 20 मिनिट पर जब थोड़ी भीड़ छटी तब क्षमासागर जी से थोड़ी बहुत चर्चा हुई । चर्चा उनके साहित्य बाबत, मेरे द्वारा लिखा गया साहित्य, मेरी पत्नि डॉ. कुसुम पटोरिया द्वारा लिखी गई पुस्तक ''यापनीय संघ'' बाबत चर्चा हुई। ढाई बजते ही उन्होंने हमें आर्शीवाद दिया, हम अतृप्त मन से उठ गये। उसके बाद पता लगा कि उनके शाम तक का कार्यक्रम निश्चित हैं, अतः फिर से दर्शन लाभ व चर्चा संभव नहीं है। हम लोग उसी दिन शाम को बीना लौट आये। फूफाजी तो हमारी बाट ही देख रहे थे । उन्हें इस बात की बड़ी प्रसन्नता थी हम लोग क्षमा सागर जी के दर्शन कर आये।

कुछ माह बीत जाने के बाद हमें समाचार मिला की फूफाजी काफी बीमार हैं । मैं व कम्मू भैया बीना के लिये रवाना हो गये। बीना जाकर पता लगा कि फूफा जी का तो स्वर्गवास हो गया है। आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ने उन्हें नेमावर तीर्थ क्षेत्र में समाधिमरण दिलाया है। यह भी पता लगा कि जब उन्हें आचार्य श्री के पास नेमावर जैन तीर्थक्षेत्र ले जाया जा रहा था उसके एक दिन पहले ही मुनि क्षमा सागर महाराज उन्हें आर्शीवाद देने उनके निवास तक पहुँचे थे। हमने जब पं. बंशीधर जी के सुपुत्र श्री वैभव शाह से पूछा कि क्षमा सागर जी महाराज कहाँ हैं तो उन्होंने बतलाया कि बीना से 20–22 किलोमीटर दूर पर तीर्थक्षेत्र में हैं। मुझे तीर्थ क्षेत्र का नाम ख्याल नहीं आ रहा है। मैं व कम्मू भैया उनके दर्शनों हेतु पहुँचे, अबकी बार उनसे काफी देर तक चर्चा होती रही। मन थोड़ा सा तृप्त हुआ।

इस बीच उनकी कविताओं के संकलन की कुछ पुस्तकें प्रो. सरोजकुमार ने इन्दौर से हमें भिजवायीं। उनकी छोटी–छोटी कविताओं को पढ़कर मैं तो दंग ही रह गया। छोटी कविताओं के माध्यम से बहुत बड़ी गहराई तक पहुँचाने वाली बात कह देना अपने आप में एक कठिन कार्य है। उनके कविता संग्रह ''पगडंडी सूरज तक'' की पुस्तक समीक्षा मैंने ''खनन भारती'' (जिसका मैं संपादक था) में भी छापी थी। इसकी समीक्षा प्रख्यात उपन्यासकार–कहानीकार रज्जन त्रवेदी ने की थी। वे पुस्तक को पढ़कर बहुत अभीभूत हो गये व कहने लगे – जीवन में पहली बार इतनी अच्छी कवितायें पढ़ रहा हूँ। इस पुस्तक की 2 छोटी कवितायें – अनहोनी–1 व अनहोनी–2 मैंने खनन भारती के ''अहिंसा विशेषांक'' में भी प्रकाशित की हैं। कई पाठकों ने इसको पढ़ा तथा प्रभावित हुये तथा मुझसे क्षमा सागर जी के बारे में जानकारी भी प्राप्त की ।

मुनिश्री के जीवन से जुड़े ऐसे ही कई वाकिये आज भी जेहन में बने हैं। पूज्य मुनिश्री को शत्–शत् नमन।

– डॉ. राजेंद्र पटोरिया, नागपुर

जीवन की राह में आने वाली मुश्किलें हमें अपना आत्म–बल बढ़ाने का अवसर देती हैं –हमें उनसे यही सीखना चाहिए **– मुनि क्षमासागर**

णमोकार मंत्र और टॉफी

यह बात तब की है, जब मुनि श्री क्षमासागर जी इंदौर में अपना चातुर्मास कर रहे थे, यानि 1996 की। कंचनबाग के समवशरण परिसर में श्राविकाओं के लिए बने भवन की पहली मंजिल पर उनका अस्थायी पड़ाव था। वहीं एक बड़े कक्ष में दोपहर बाद उनसे मिलने और बात करने काफी लोग प्रायः पहुँचते थे। ऐसी ही एक शाम, कक्ष लगभग भरा हुआ था। विभिन्न चर्चाएँ हो रही थीं कि एक तेरह–चौदह वर्ष का किशोर

मुनिश्री ने उस किशोर से कहा कि देखो णमोकार मंत्र पढ़ने में कभी कोई रूकावट नहीं है। अगर टॉफी मुँह में है, और णमोकारमंत्र पढ़ने का मन हो रहा है, और अगर उस समय तुमने नहीं पढ़ा, और टॉफी खत्म करने की प्रतीक्षा की, और फिर कुल्ला करने के लिए पानी खोजने निकले, तब तक हो सकता है कि णमोकारमंत्र पढ़ने का जो मन हो रहा है, वह बदल जाए।

कक्ष में प्रविष्ट हुआ। उसे इतने शिष्टाचार के लिए भी अवकाश नहीं था कि वह दीवार के पास से जगह बनाते हुये मुनिश्री के निकट पहुँचे। वह सबके बीच से ही लोगों को ठेलता, धकियाता आगे बढ़ता हुआ मुनिश्री के सामने हाथ जोड़, नमोस्तु कहते हुए रूका। उसकी यह अभद्रता लोगों को समझ में नहीं आई, क्योंकि वह दिखने में सुंदर, स्वस्थ और अपने परिधान में किसी अच्छे घर का लग रहा था। मुनिश्री ने उसे आशीर्वाद दिया और वह किशोर एकदम बोला, ''मेरी एक जिज्ञासा है।'' मुनिश्री ने उससे जिज्ञासा प्रकट करने के लिए कहा। उसने कहा, ''मैं यह जानना चाहता हूँ कि अगर मुँह में टॉफी हो, और मैं उसे खा रहा हूँ, ऐसे समय यदि णमोकार मंत्र पढ़ने की भावना हो जाए, तो मुझे क्या करना चाहिए? क्या मुझे तत्काल टॉफी थूक देना चाहिए? यदि थूकने का स्थल न हो, तो क्या मुझे ऐसे स्थान पर जाना चाहिए, जहाँ मैं उसे मुँह से निकाल कर फेंक सकूं? क्या मुझे उसे खाते रहना चाहिए, कि जब वह समाप्त हो जाए तब मैं कुल्ला करने के बाद णमोकार मंत्र पढ़ूँ?''

किशोर का यह प्रश्न सुनकर सभी उपस्थित लोग अवाक् रह गये। सभी को लगा कि यह तो इस किशोर ने ऐसा प्रश्न उपस्थित कर दिया है, जिसका उत्तर सभी को चाहिये। किसी ने फुसफुसाया, ''टॉफी मुँह में रखे णमोकारमंत्र पढ़ना तो पाप होगा।'' किसी ने कहा, ''बिना कुल्ला किए कैसे णमोकार मंत्र कोई पढ़ सकता है?'' किसी ने कहा, ''टॉफी–प्रेमी को णमोकार मंत्र की याद ही कैसे आएगी?'' पर सब मुनिश्री की ओर देख रहे थे और सभी को उत्सुकता थी, यह जानने की, कि मुनिश्री क्या समाधान व्यक्त करते हैं।

मुनिश्री ने उस किशोर से कहा कि देखो णमोकार मंत्र पढ़ने में कभी कोई रूकावट नहीं है। अगर टॉफी मुँह में है, और णमोकारमंत्र पढ़ने का मन हो रहा है, और अगर उस समय तुमने नहीं पढ़ा, और टॉफी खत्म करने की प्रतीक्षा की, और फिर कुल्ला करने के लिए पानी खोजने निकले, तब तक हो सकता है कि णमोकारमंत्र पढ़ने का जो मन हो रहा है, वह बदल जाए। जो भावना णमोकार मंत्र पढ़ने की पैदा हुई है, वह इतने समय में समाप्त ही हो जाए।

इसलिए उचित यही होगा कि टॉफी खाते हुये भी यदि णमोकार मंत्र पढ़ने का मन हो, तो जरूर पढ़ लेना चाहिए, पर एक बात जरूर ध्यान रखना कि कहीं ऐसा न हो कि तुम कभी णमोकारमंत्र पढ़ रहे हो, उस समय तुम्हारा मन टॉफी खाने का हो जाए। जीवन की किसी भी गतिविधि के बीच णमोकारमंत्र का स्वागत है, लेकिन णमोकारमंत्र से भरे हुए क्षणों में जीवन की ऐसी–वैसी गतिविधि के लिए अवसर नहीं होना चाहिये। ऐसा समाधान सुनकर सभी उपस्थितों को लगा कि इस समाधान ने उनकी भी अनेक जिज्ञासाओं का शमन कर दिया है। यह भी लगा कि चाहे उन्हें इस किशोर के आने और मुनिश्री तक जाने की शैली आपत्तिजनक लगी हो, पर उसका प्रश्न सटीक था, और अपने प्रश्न को पूछने का साहस प्रशंसनीय।

–प्रो. (डॉ.) सरोज कुमार, इंदौर

पत्थर में प्रतिमा को उकेरा

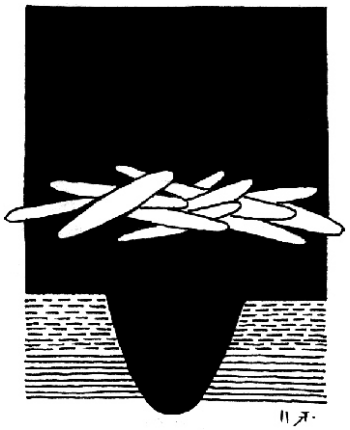

पूजनीय गणेश प्रसाद जी वर्णी की पारदर्शी निश्छलता एवंपूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के कठोर साधना संकल्पों का अद्‌भुत सामंजस्य मुनि श्री के व्यक्तित्व को रूपायित करता है । अपनी आत्मा को साधने में निरंतर लगे रहने वाले वे अनोखे साधु थे। उन्होंने अपने जीवन को बाहर भीतर एक सा सहज, सरल व निर्विकार बना लिया था। मुनि श्री मेरे लिए हमेशा प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं। उन्होंने हमेशा कहा– 'Be Practical' संसार में रहना है तो परिस्थितियों से समझौता करो जो सच है उसे ग्रहण करो और सामंजस्य बना कर चलो। उन्होंने युवा पीढ़ी में जोश व उत्साह भरा। अपने चिंतन मनन से भरपूर उपदेशों द्वारा श्रावक की आत्मा में छाये अज्ञानान्ध्कार को दूर किया । अध्यात्म का विज्ञानीकरण करके युवा पीढ़ी को जैन धर्म के प्रति श्रद्धा सिखा दी जो आज हम अपने बच्चों को जिंदगी भर नहीं सिखा पाते। उन्हीं की कविता–

ये मंदिर इसलिए कि हम
आ सकें बाहर से अपने में भीतर
ये मूर्तियाँ अनुपम सुंदर इसलिए कि
हम पा सकें कोई रूप, अपने में अनुत्तर
और श्रद्धा से झुक कर गलाते जाएँ अपना मान मद
पर्त–दर–पर्त निरंतर
ताकि कम होता जाए हमारे और प्रभु के बीच का अंतर।

इन पंक्तियों ने हर एक व्यक्ति के भीतर बंद पड़े कपाट पर दस्तक दी और हर एक व्यक्ति आध्यात्म जगत से जुड़ता गया। जब भी उनकी वाणी से झरते अमृत वचन सुनने को मिलते हैं हृदय भर आता है। परंतु अंतर की ज्योति न बुझने देने का सहारा व विश्वास मन मे बढ़ जाता है।

उन्होंने हमेशा सिखाया अशुभ से बच कर शुभ कार्यों में कैसे प्रवृत्त हों, दैनिक कार्यकलापों में कैसे सावधानी रखी जाए, अपने पुरुषार्थ को कैसे दिशा दी जाए? कैसे हम अपने जीवन को अच्छा बनाएं। हमारी वाणी और हमारे विचार श्रेष्ठ होवें यह सब हमने मुनि श्री से सीखा।

मुनि श्री क्षमासागर जी का मुखमण्डल हर घड़ी उनके आंतरिक आनंद का परिचय देता था। जो भी उनके संपर्क मे आता उसका मन जीत लेने की विलक्षण क्षमता उनमें थी। 10 जनवरी सन 1980 में मेरे नानाजी, मामाजी, मम्मी सभी नैनागिर से वापस लौटे तब मैं 6 साल की थी। तीनों ही एक दम शांत हाथों में कपड़े लिए आकर बैठ गए, तब नानी ने पूछा, "काए मुन्ना कहाँ गओ?" तब मामाजी ने अपने आप को संभालते हुए दृढ़ होकर कहा, "तुमाओ मोड़ा चलो गओ, ऊने दीक्षा लेलई।" इतना सुनते ही बस रात भर सभी रोते रहे परंतु जब सबने होश संभाला तो यही सुनने मिला कि उन्होंने तो अपना कल्याण कर लिया अब हमें भी सन्मार्ग पर चलना है।

जब मैं बड़ी हुई तब नानाजी से अनेक प्रश्न किया करती थी। नानाजी ने एक बार बताया जब वे आचार्य श्री विद्यासागर जी व युनिवर्सिटी के प्रोफेसर तीनों साथ में बैठे थे तब प्रोफेसर जी ने कहा, "आचार्य श्री वीरेंद्र कुमार के एम. टेक डिपार्टमेंट से पृथक हो जाने से हमारा विभाग लूजर हो गया है।"तब आचार्य श्री ने कहा, "आप ऐसा कहते हैं, सिंघई जी कहते हैं हमारे परिवार से कुछ खो गया है और मैं कहता हूँ मैं गैनर हूँ। मैंने पत्थर उठाया है कुछ समझ के उठाया है। पत्थर में प्रतिमा उकेरुंगा।" और वह लाइन आज सच ही हुई है वाकई उस पत्थर में से प्रतिमा उभर के आई है।

हे!बुंदेला के लाल तुम्हें शत्–शत् प्रणाम।

– रंजना पटोरिया, कटनी

मेरे मुन्ना

संत क्षमा सागर परिवार के मुन्ना जिनकी दादी बाई सिंघेन) वे सागर के मेरे दादाजी श्री खुशालचंद एक्साइस विभाग में DEO पद चम्पाबाई व छोटी चमेली। छोटी ब्याही थीं। वे अपने समय के

क्षमा सागर महाराज सभा में जब णमोकार का पाठ करते तब नाभिकण्ठ से निकला वह स्वर नादकण्ठ से निकलकर जिह्वा तक आते–आते अदभुत सम्मोहन में बांध लेता था। सम्मोहित श्रोता आलौकिक अनुभूति में सुधबुध खो बैठते थे।

'मुन्ना' की दादी अपने तेजस्वी, स्वर्णपदकधारी महिला कॉलेज के वीरेंद्र कुमार और मेरी बड़ी बुआ थी (श्रीमती चम्पा प्रतिष्ठित परिवार की बहू थीं। पटोरिया (ब्रिटिश सरकार के पर) की सबसे बड़ी बेटी पं. दरबारीलाल जी कोठिया से प्रचंड विद्वान व न्यायाचार्य थे। जमाने की विदुषी, प्रतिभाशाली, थीं। वे शास्त्र सभा में शास्त्र पढ़ती थीं और अंत में भजन सुनते हुए सभी उपस्थित जन भावविभोर हो उठते थे। 'मुन्ना' का यह कंठ उनकी दादी सिंघेन चम्पाबाई की विरासत था। क्षमा सागर महाराज सभा में जब णमोकार का पाठ करते तब नाभिकण्ठ से निकला वह स्वर नादकण्ठ से निकलकर जिह्वा तक आते–आते अदभुत सम्मोहन में बांध लेता था। सम्मोहित श्रोता आलौकिक अनुभूति में सुधबुध खो बैठते थे।

'मुन्ना' की माँ श्रीमती आशादेवी मेरी भाभी थीं। बहुत ही सरल स्वभावी थीं। जब मुन्ना हुए, बड़े ही सुकुमार हुए। उन्हें गाय, बकरी के दूध व फलों के रसद्वारा जतन से पाला गया। यह सुकुमार शिशु जैनेश्वरी दीक्षा का अति दुर्गम धारा का पथिक बनकर चल पड़ेगा, यह बात किसी की कल्पना में भी नहीं आयी थी।

'मुन्ना' आरंभ से ही मेधावी छात्र रहे, किशोरावस्था में बच्चों को जैन धर्म के सिद्धांतों को समझाया करते थे। हमेशा मेरी सेवा में तत्पर रहते थे, जब भी पहुँचों अपने हाथ से चाय बनाकर पिलाते थे और मुस्कुराते हुए नाश्ता कराते थे।

आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी के प्रभाव ने उनके जीवन की धारा को बदल दिया। उनके ही आभामंडल में वह युवा शिष्य बनकर चल पड़ा। उसने हमेशा अपनी आत्मा को साधना में लगाए रखा। 'मुन्ना' (श्री क्षमा सागर महाराज) ने 'प्रतिभा सम्मान समारोह' का आयोजन कर समाज को नई चेतना की ओर अग्रसर किया। इस समारोह से नई पीढ़ी को आलौकिक नवीन ऊर्जा प्रदान कर उच्च शिक्षा को नए क्षितिज की ओर अग्रसर किया। मन्दिर, मूर्ति, पंचकल्याणकों के अतिरिक्त मानव देह में विलक्षण चेतना की प्रतिभा के मार्ग को प्रशस्त किया। प्रखर प्रतिभा के धनी पूज्य संत को कोटि–कोटि नमन।

–राजकुमारी रान्धेलिया, कटनी

उन्हें बाँटो जो दूर हैं

गुरू की महिमा तो वरणी नहीं जा सकती और जिस गुरु के नाम की शुरूआत "क्षमा" शब्द से हो (जिस क्षमा से धर्म की शुरुआत भी होती है) तथा अंत, अंतहीन "सागर" पर होता हो, उसके बारे में कोई क्या लिख सकता है। उनका प्रथम सानिध्य सन 1994 में मिला। पहली नजर आँसुओं से उनके चरण धोने को आतुर होने लगी थी। मैंने पत्र लिखा कि आपको गुरु बना लिया है। स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति पर उनकी सलाह थी कि अपने अप्रत्यक्ष सांसारिक कर्त्तव्यों को भी पूरा करो, फिर स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लो। मैंने पूछा, 'तब तक क्या करूं ?' गुरू जी ने कहा, 'मेरे पास आते ही हो, यहाँ से सीखो और उन लोगों के पास जा–जा कर बाँटों जो दूर हैं, यहाँ नहीं आ पाते हैं।'

– योगेन्द्र कुमार जैन, मुंबई

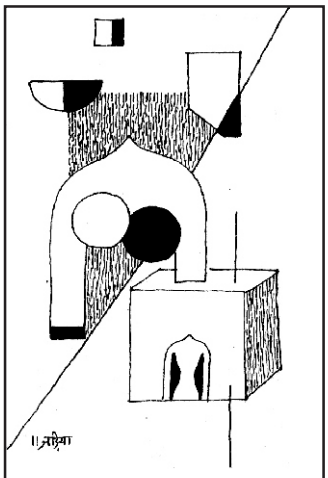

महाराज जी की करूणा तो देखो मुझे देखते ही बोले आसाम वाली बहन जी मैंने नारियल पानी इसलिये नहीं लिया क्योंकि ये अभी–अभी आने शुरू हुये हैं और बहुत मँहगा आ रहा है और मैं जो सभी लोग आसानी से दे सकते हैं वैसी चीजों का ही आहार लेता हूँ। इतनी ऊँची सोच, मुझे समझ आ गया कि ये सब बातें बिना ऐसे महान गुरु के मिले, मैं कभी नहीं सीख पाती।

इन्द्रिय विजेता हमारे गुरुवर

मैं आसाम (गोहाटी) में रहने वाली, धर्म और महाराजजी, माताजी के बारे में बहुत कम जानती थी। कारण कि इधर सिर्फ आर्यिका इन्दुमति माताजी, सुपार्श्वमति माता जी के संघ के अलावा तब तक कोई साधु आसाम नहीं आये थे और माताजी सिर्फ शूद्र–जल के त्यागी व्यक्तियों से ही आहार लेती थीं इसलिये मैंने कभी उन्हें आहार नहीं दिया।

कोटा में मैंने जब पहली बार गुरुवर के दर्शन किये। वहाँ दो महाराज और 20–25 चौके थे, यह मेरे लिये आश्चर्य से कम नहीं था और मालूम चला कि महाराज जी को मैं भी आहार दे सकती हूँ। मैंने लोगों को पूछा कि महाराज तो दो ही हैं तो दो चौके में ही जायेंगे, इतने चौके क्यों लगा रहे हैं आप लोग? तो मुझे एक आंटी ने बताया कि तो क्या हुआ महाराज के आने की हम भावना तो भा सकते हैं। हमारे पुण्य का उदय होगा तो करूणा सागर गुरुवर जरूर आयेंगे और हम लोग भी शुद्ध भोजन करके अपनी शुद्धि बढ़ायेंगे। मैं चकित थी कि ऐसा भी एक विचार हो सकता है। मुझे भी आहार देने के भाव हुये और जब मैं आहार देने गई तो अपने साथ नारियल पानी ले गई। इतने लोग आहार देने के लिये लाइन में लगे थे मेरा नंबर बहुत देर बाद आया और जब मैं महाराज श्री को नारियल पानी देने लगी तो महाराज जी ने लेने से मना कर दिया। मुझे कुछ समझ नही आया कि मुझसे क्या गलती हुई पास खड़े किसी ने मुझे दूसरी चीज हाथ में दे दी और मैं ग्रास देकर वापस आ गई। मन में बहुत खराब लग रहा था कि मुझे कुछ भी नहीं आता है कैसे आहार देना चाहिये। मैं महाराज जी की दोपहर की क्लास पढ़ने जाया करती थी। महाराज जी की करूणा तो देखो मुझे देखते ही बोले आसाम वाली बहन जी मैंने नारियल पानी इसलिये नहीं लिया क्योंकि ये अभी–अभी आने शुरू हुये हैं और बहुत मँहगा आ रहा है और मैं जो सभी लोग आसानी से दे सकते हैं वैसी चीजों का ही आहार लेता हूँ। इतनी ऊँची सोच, मुझे समझ आ गया कि ये सब बातें बिना ऐसे महान गुरु के मिले, मैं कभी नहीं सीख पाती। इतना प्रैक्टिकल जीने का तरीका गुरुवर ने अपने आचरण से मुझे सिखाया ये बात मुझे हमेशा याद आती है। उसके बाद तो गुरुवर के जब भी दर्शन किये उनको मौन ही देखा, मगर फिर भी उनकी सहन शक्ति, गुरु के प्रति श्रद्धा, सब देखकर, मुझे लगता था कि गुरुवर के मौन से भी बहुत शांति, जीने की कला आदि सिखाती थी। बहुत आश्चर्य इस बात का भी होता है कि गुरुवर ने कभी भी किसी वस्तु का त्याग करने को नहीं कहा मगर उनके दर्शन करते ही कुछ कुछ नियम लेने का मन करता था और गुरुवर के बताये प्रवचनों से सुनकर ही देवदर्शन, पूजा, जमीकंद का त्याग, पानी छान कर पीना कोई भी व्रती आवे तो आहार दान देना, ये सब खूब उल्लास से करने लगी। गुरुवर आपकी कृपा का गुणगान करना मेरे लिये नामुमकिन है बस मैं आज जो भी हूँ आपकी कृपा से हूँ। मुझे आगे बढ़ना है। आपकी दो बातें मुझे हमेशा याद रहती हैं, "मैं अगर बहुत आरम्भ और परिग्रह करूंगा तो नरक जाऊंगा" और "जीवन में यदि सुख चाहिये तो किसी से भी अपेक्षायें और शिकायत नहीं करनी चाहिये।" ये दोनों सूत्र जीवन को अच्छा बनाने के लिये बहुत उपयोगी हैं, ये मेरे जीवन में पूर्णरूप से आ जाएं यही आर्शीवाद चाहती हूँ, और मैं हमेशा प्रयासरत रहूंगी।

– कविता जैन, बैंगलोर

स्वावलम्बी मुनि

मुनि क्षमासागर महाराज जी को मैंने अपने बचपन से ही देखा, सुना, जाना है। मुनिश्री का अनुशासन, वात्सल्य, सरलता, अपने गुरु के प्रति समर्पण यह सब बहुत नजदीक से देखने का सौभाग्य मुझे मिला है क्योंकि शाहपुर में मुनि श्री के कई चर्तुमास हुये। वैसे तो मुनि श्री से जुड़ा प्रत्येक पल प्रेरणा का स्त्रोत रहा है लेकिन एक घटना जो मेरी आँखों से कभी ओझल नहीं होती है, वह है सन् 2007 का चतुर्मास जब उस समय मुनि श्री अस्वस्थ अवस्था में थे। उनकी आवाज लगभग जा चुकी थी और वे बिना किसी के सहारे के चल भी नहीं सकते थे। मुनि श्री जी जिस कमरे में रुके हुये थे उसी के पास वाले कमरे में एक जैन लाइब्रेरी थी (वर्णी वाचनालय)। मैं और कुछ और बहिनें मिलकर लाइब्रेरी साफ कर रहे थे कि देखा कि महाराज जी दरवाजे पर खड़े हैं। हम शांत उनको एकटक देखते रहे कि महाराज बिना किसी सहारे यहाँ तक कैसे आ गये। तभी महाराज जी धीमी आवाज में कहने लगे यदि तुम लोगों को यशपाल जैन का साहित्य मिले तो मुझे पढ़ने के लिये देना और वो ऐसा कहकर वापिस जाने लगे। हम सब बहिनें भी उनके पीछे उनके कमरे में चले गये और सभी बहिनें महाराज जी से पूछने लगीं– महाराज जी आपकी आवाज वापिस आ गई आप तो चलने लगे। मैंने महाराज जी से कहा आप हमें आवाज देते तो हम आपके पास आ जाते, आप को चलना नहीं पड़ता । तभी महाराज जी ने कहा आज चल पा रहा हूँ , बोल पा रहा हूँ, इसलिये स्वयं आकर कहा कल किसने देखा है। उसी दिन शाम की आचार्य भक्ति में गये तो देखा कि मुनि श्री की आवाज नहीं निकल रही थी। मेरी आँखें नम हो गईं महाराज जी की ऐसी स्थिति देखकर सोचने लगी महाराज जी ने कभी एक समय के लिये भी आलस्य नहीं किया अपने समय का सद्उपयोग किया। अपना कार्य स्वयं करना उन्हें पंसद था, वे कभी किसी को कार्य करने नहीं कहते थे। जहाँ तक उन पर बनता था वे अपने कार्य स्वयं ही करते थे। महाराज जी की इस घटना से मुझे यही प्रेरणा मिलती है कि जिस समय हम जो कार्य कर सकते हैं वह कार्य हमें उसी समय कर लेना चाहिये। स्वास्थ्य की इतनी विपरीतता के बावजूद भी गुरुवर की अपना कार्य स्वयं करने की सजगता सचमुच अविस्मरणीय है।

–आरती जैन, शाहपुर

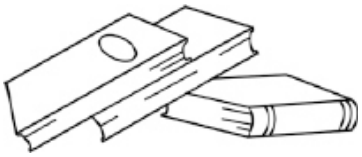

पुस्तकालय बनते गए

जिसने मेरे जीवन की दशा और दिशा ही बदल दी ऐसे परम पूज्य क्षमासागर जी महाराज जब प्रथम बार ग्वालियर आये तब उनके समीप बैठने का, प्रश्नोत्तर करने का तथा अपनी जिज्ञासाओं का समाधान करने का अवसर मिला।

महाराज जी ने बताया कि नयाबजार मंदिर जी में कोई प्राचीन मूल ग्रन्थ नहीं है। हमने महाराज जी से सूची मांगी और पुस्तकालय निर्माण होना शुरू हो गया ।

महाराज जी जहाँ–जहाँ भी रहे वहाँ से वे शास्त्रों की सूची हमें भिजवाते रहे एवं मंदिर जी के पुस्तकालय में पुस्तकें आती रहीं और एक सुंदर पुस्तकालय बन गया। महाराज जी के नाम से मंदिर जी महिला परिषद की ओर से "क्षमासागर बाल पुस्तकालय" का भी प्रारंभ हुआ।

महाराज जी ने दूसरा कार्य जनोपयोगी प्रारंभ कराया निःशुल्क पाठशाला का, पाठशाला बहुत श्रेष्ठ ढ़ंग से श्रुतपंचमी को प्रारंभ हो गयी, उनके समक्ष लगभग 100 बच्चे तक आना प्रारंभ हो गये थे ।ढ़ेरों स्मृतियां हैं गुरूवर की । उन्होंने हमें रत्नकरण्ड़ श्रावकाचार, महावीराष्टक, मोक्ष–शास्त्र आदि का अध्ययन कराया ।

कहाँ–कहाँ तक कहें, उनके जाने पर मुझे उतना ही दुख हुआ जितना कि अपने पति एवं बेटे के जाने पर हुआ।आज मैं अपने को असहाय महसूस करती हूँ लौकिक जीवन में प्रियजनों का साथ छूटा और जो अलौकिक जीवन में मार्ग निर्देशन कर रहे थे उनका भी साथ छूट गया ।

–उषा जैन, ग्वालियर

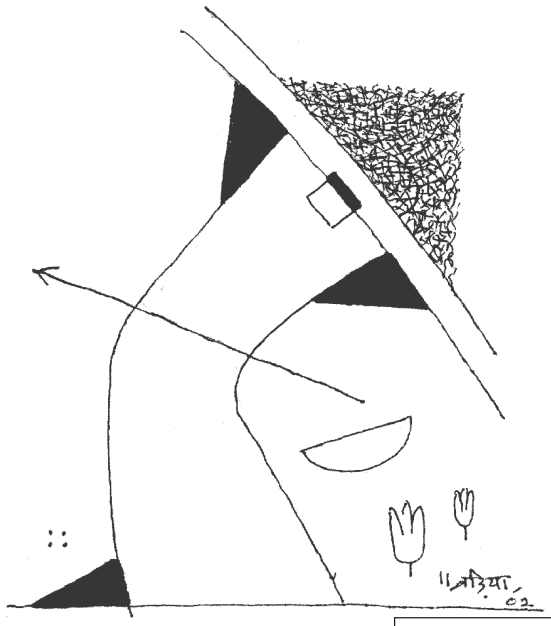

गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा

1) बात मगसिर शुक्ला छठ वि.सं. 2060 दिनांक 29 नवबंर 2003 शनिवार की है। मुनि श्री उस समय राजस्थान की धर्मपरायण नगरी (झालरा पाटन) में विराजमान थे। आहार चर्चा उपरान्त समाजोत्थान विषय पर हम मुनिश्री के साथ गहन चर्चा में रत थे। मुनि श्री वज्रासन में अपने चिरपरिचित अंदाज में सौंधी सी मुस्कान के साथ बड़े ही सहज व सरल भाव से जिज्ञासाओं का उचित समाधान करते हुए यथोचित दिशा निर्देश दे रहे थे। तत्क्षण समाचार विदित हुए कि मध्यप्रदेश की धर्मनगरी कटनी में संघस्थ मुनि श्री 108 प्रवचन सागर जी महाराज का समाधिपूर्वक देवलोक गमन हो गया है। समाचार सुनते ही मुनि श्री कुछ क्षण के लिए मौन हो गये, तदोपरान्त मुनि श्री ने प्रवचन सागर जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कई संस्मरण सुनाये व पुनः समाजोत्थान विषय पर चर्चा प्रारंभ की और करीब आधे घंटे तक मुनि श्री चर्चा तो करते रहे परंतु उनके दोनों नेत्रों से अश्रुधारा बहती रही, सामयिक विषय होने के कारण मुनि श्री चर्चा में तो रत रहे परंतु उनकी करूणा, वात्सल्य, प्रेम, समर्पण अश्रु के रूप में अनवरत प्रवाहित होती रही।

2) 1983–84 में आचार्य श्री का संघ श्री सिद्ध क्षेत्र श्री सम्मेद शिखर जी की ओर से आ रहा था। आचार्य श्री 108 पुष्पदंत सागर जी नवापारा राजिम में थे। दोनो संघों का मिलन महानदी के पुल पर होना था। दोनों के मिलन को दर्शकों ने राम भरत मिलाप की उपमा दी थी। मंदिर पहुँचने के बाद दोनों आचार्य काफी देर तक बंद कमरे में वार्ता करते रहे, अतएव दर्शकों ने अनुमान लगाया कि आचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी शायद आचार्य श्री के संघ में मिलना चाहते हैं। (आचार्य श्री 108 पुष्पदंत सागर जी को प्रथम दीक्षा आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी ने दी थी।) किसी महानुभाव ने मुनि श्री के सामने कह दिया कि आचार्य श्री को संघ में मिला लेना चाहिए? मुनिश्री 4–6 लोगों का वार्तालाप सुनते रहे फिर बोले, ''दोनों के दीक्षा गुरू अलग हैं। प्रथम तो उनके गुरू की अनुमति के बिना संभव नहीं है फिर जो स्वयं आचार्य हैं वे किसी के अधीन कितने दिन रहेंगे?'' आचार्य श्री बहुत दूरदृष्टि वाले हैं, ऐसा कार्य नहीं करते जो जग हँसाई का कारण बने। सभी लोग चुप हो गये।

3) एक बार कोटा में मुनि श्री के आहार के बाद हम लोग उनके सामने बैठे थे कि किन्ही महानुभाव ने निवेदन भरी मुद्रा में कहा कि मुनिश्री –कई मुनिराज संघ से अलग होकर, उपाध्याय पद प्राप्त कर अपने अपने धर्म क्षेत्र बना रहे हैं, आप तो पूरे देश में प्रसिद्ध हैं आपके पढ़े लिखे भक्त बहुत हैं, कहीं भी आपकी प्रेरणा से बड़ा क्षेत्र बन सकता है, यह बात मुनि श्री को अच्छी नहीं लगी – उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया कि ख्याति चाहिए थी तो कपड़े क्यों उतारे? परिग्रह क्यों छोड़ा? अपने गुरू को धोखा देने का सुझाव भविष्य में आप कभी किसी को मत देना। वो महानुभाव उत्तर सुनकर गलती पर पछताते हुए क्षमा माँगने लगे। यह थी अपने पद की गरिमा और गुरू के प्रति अटूट श्रद्धा भक्ति।

– सुभाष सिंघई, कटनी

विलक्षण प्रतिभा के धनी

प्रातः स्मरणीय संत शिरोमणि प.पू. 108 श्री क्षमासागर जी स्वयं में अत्यंत विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। मर्मभेदी, मार्मिक संवाद, सम्प्रेषण की ऐसी अद्भुत क्षमता मैंने शायद किसी और संत में नहीं देखी।

1) सन् का स्मरण नहीं हैं पर बात छतरपुर म.प्र. में श्रद्धेय मुनि श्री के चातुर्मास की है। अपने मित्र के पिता श्री के साथ दर्शनार्थ मैं भी पहुँचा था। शाम 4–5 बजे के लगभग गुरूवर के पास जाना था। सर्द–गर्म के प्रकोप से मेरे सीने में कफ जम गया था। सर्दी के कारण नाक बंद होने से बैचेनी भी हो रही थी। यह तनाव भी था कि भजन कैसे गा सकूंगा। मन भी खेद–खिन्न था। खैर! महाराज जी के सम्मुख पहुँचा। नमोस्तु करके बैठ गया। समझ से बाहर था कि क्या कहूँ? क्या करूँ? भजन हेतु संकेत पर अपनी समस्या बताई! मुनि श्री बोले चलो कोई बात नहीं ठीक हो जायेगा। बैठे–बैठे कुछ चमत्कार सा होने लगा थोड़ा–थोड़ा अच्छा लगने लगा। एक भजन उठाया शुरूआती दौर में कोल्ड–कफ का असर था पर वह भजन पूरा कर लिया। मन को कुछ राहत मिली और फिर चल पड़ा भजन गायकी का सिलसिला। यह चमत्कारिक मौका अविस्मरणीय है।

2) बात शहपुरा भिटोनी की है। मुझे जिस चौके में खड़ा होना था उसकी एक बुजुर्ग महिला ने मुझे महाराज जी के समीप होने का लाभ लेने के लिए कहा कि महाराज जी को चौके में खड़े होने का हिंट कर दो। मैंने भी सहजता में ऐसा कर दिया। कुछ देर पश्चात् शुद्धि के बाद पड़गाहन हेतु हम मुनिश्री की प्रतीक्षा में खड़े थे पर ये क्या गुरूवर मेरे सामने से निकल गये और अन्य चौके में आहार ग्रहण किया। बाद में जब हम उनके पास गये तो उन्होंने समझाने वाले अंदाज में कहा आनंद जी! यदि हमें आपने कहा न होता तो हम आपके चौके में आते पर आपका कहना एक आमंत्रण हो गया था और साधु कभी आमंत्रित नहीं किये जाते इसलिए विधि लेने का विधान है। जीवन–दर्शन का बड़ा पाठ उस दिन सीखने को मिला। किसी संत के साथ खुद का जुड़ा होना, वाकई आसमान के तारों को छू लेने का अहसास लगता है।

आज भले ही वे जीवंत नहीं हैं परन्तु उनके साथ हमें जो भी वक्त गुजारने मिला, वह निस्संदेह हमारे लिए बहुत खास है। खो जाता हूँ, उस सुखद कल्पना में, जब मेरे स्मृतिपटल पर वो प्रसंग उभरते हैं, जब उनका सनिध्य प्राप्त होता था। अरबों में एक ऐसा जीव जन्म लेता है, जो मुनि क्षमासागर बनता है।

– आनन्द कुमार जैन 'अकेला', कटनी

प्रश्नों के उत्तर बिना पूछे मिल जाते हैं

मैंने 2003 यंग जैना अवार्ड, रामगंजमंडी में मुनिश्री के पहली बार दर्शन किये। इसके बाद मैंने मुनिश्री के सानिध्य में गुना से अशोक नगर तक एक हफ्ते विहार किया था। मुनिश्री के साथ किये गए विहार की एक अलग ही अनुभूति रही। विहार में मुनिश्री का सानिध्य और प्रकृति के इतने समीप रहकर एक अदभुत ऊर्जा प्राप्त हुई।

मेरे मन में मुनिचर्या को लेकर बहुत सारे प्रश्न थे। पर मुझे कभी भी मुनिश्री से एक भी प्रश्न पूछने की जरुरत नहीं पड़ी। सारे प्रश्नों के उत्तर बिना पूछे, स्वतः ही मिल जाते थे। नंगे पाँव चलना, भूमि पर ही विश्राम कर लेना और धर्मचर्चा सुनकर अहसास हुआ कि विहार से ऊर्जा कम नहीं होती बल्कि और बढ़ जाती है। मुनिश्री अन्तर्यामी थे, वे मन में चल रही दुविधा को जान लेते थे और बिना पूछे ही सारी समस्याओं के हल बता देते थे।

मैं निरंतर मुनिश्री के दर्शन करता रहा और मेरे मन में जितना भी राग–द्वेष जमा होता था, उनके दर्शन मात्र से सारा दूर हो जाता था। मुनिश्री का स्वास्थ्य जब ठीक नहीं था तब भी मुझे वैसे ही भाव आते थे जैसे पहली बार दर्शन करने पर आये थे। मेरी समस्याओं का हल मुझे हमेशा उनके दर्शन करने से ही मिल जाता था।

–निकुंज जैन, नवी दिल्ली

क्षमा के सागर

क्षमा सागर– क्षमा के सागर, यथा नाम तथा गुण। जैसा नाम वैसे गुण। यों तो प्रायः हर मुनि महाराजों में क्षमाशीलता हुआ करती है, परन्तु मुनि श्री क्षमा सागर जी में यह गुण उनके नाम के अनुरूप कुछ अधिक ही रहा है। मुनि क्षमा सागर जी एक नहीं, अनेक गुणों के धनी थे, दृढ़ इच्छा शक्ति, श्रावक तथा भक्तजनों पर वात्सल्य, परीषह सहने की असीम शक्ति, विद्यार्थियों को ज्ञानदान देने तथा प्रोत्साहित करने आदि की अनेक कार्य योजनाएँ, इन सबके दृष्टांत उनके जीवन में समाहित रहे हैं।

मुनिश्री अपनी चर्या तथा मुनि धर्म पालन में बड़े निष्ठुर रहे हैं, इस संदर्भ में एक प्रसंग विचारणीय है। मुनिश्री को लौकिक जीवन में बुन्देली पकवान–गुनी, पपड़िया, बतियाँ आदि का बड़ा शौक रहा है तथा ऐसे पकवान आपको बड़े प्रिय रहे हैं। मुनिश्री दीक्षा के बाद एक बार सागर में विराजमान थे। अन्य सभी की तरह आपकी लौकिक जीवन की मातुश्री आशा देवी जी ने भी चौका लगाया। कई दिनों तक रोज चौका लगता रहा, पर मुनिश्री के चरण, माता के चौका में नहीं पड़े। कोई समझौता नहीं, कोई प्रश्रय नहीं ।

एक दिन माता के भाग्य जाग गये तथा मुनिश्री क्षमा सागर जी को विधि, माता के पड़गाहन में मिल गयी। सदा की भांति आहार पूर्व, भोजन सामग्री का निरक्षण किया। उनकी पूज्य माता जी ने मुनि श्री के बचपन के पसंदीदा पकवान, गुनि, पपड़िया, खुर्मा, बतियाँ, मोटे सेव आदि की थाली दिखाई, तो मुनि श्री ने वे सभी पकवान अलग करने का मौन निर्देश दिया। मनुहार का कोई प्रभाव मुनिश्री पर नहीं पड़ा । एक ऐसी माँ ने जिसने बचपन में बड़े शौक से बनाकर इन्हें खिलाया था अब वे ही पल स्वप्न हो गये थे आज ऐसा अवसर फिर मिला था, पर मुनिश्री को स्वीकार नहीं, विचारों के धनी, संकल्पों के दृढ़ी ने कोई मनुहार तथा दलीलें नहीं स्वीकारी। इतनी आत्मीयता, इतने वात्सल्य, इतने प्रेम से, कितनी कल्पनाओं से जो कुछ बनाया था, वही उनके लाड़ले, प्रिय बेटे को स्वीकार नहीं। पहले कभी जो ऐसे पकवानों को माँग–माँग कर खाते थे, आज अनुनय विनय के बाद भी लेने को तैयार नहीं।

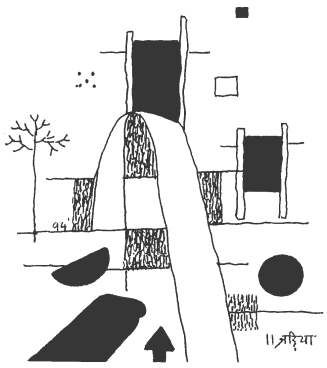

ममतामयी माँ का हृदय दुःखी हो गया, माँ के लाख प्रयासों के बाद भी मन–हृदय तथा आंखें फफक–फफक कर रो पड़ीं। दूर जाते हुये आँचल का पल्ला मुँह में लगाया, पर सभी बेकार । माँ का तन–मन–आंखें तथा गला सभी एक साथ रो पड़े। फिर क्या था ? क्रियाओं के संकल्पी, विचारों के निर्मोही मुनि श्री क्षमा सागर जी ने इसे अंतराय माना और अंजुलि छोड़, वापिस चल दिये अपने ठिकाने पर ।

अरे ! यह क्या हुआ? इस घर पर तो दुःख का पहाड ही टूट पड़ा। मातम की तरह सभी जन दुःखी और उस दिन प्रायः सभी का उपवास जैसा हो गया। दिन भर नगर में यही चर्चा। ऐसे निर्मोही तथा संकल्पी थे हमारे मुनि क्षमा सागर जी। दूसरा प्रसंग है मुनि श्री की स्मरण शक्ति का। मुनि श्री की स्मरण शक्ति इतनी तेज थी कि उनके लौकिक जीवन के तथा दीक्षा जीवन में आये, एक–एक व्यक्ति का पूरा परिचय उनके स्मृति में सुरक्षित रहता था। एक बार मेरे बड़े भाई इंजी. श्री नेमचंद्र जी जैन (एन.सी.जैन) चीफ इंजीनियर एम.पी.ई. बी., मुनि श्री क्षमा सागर जी के दर्शन करने गये, साथ में मैं भी गया। दर्शन कर उनकी शरण में बैठ गये पास बैठे एक परिचित महानुभाव ने भाई सा. तथा मेरा परिचय मुनि श्री को देना चाहा। कुछ शब्द बोले ही थे कि मुनि श्री ने इशारा किया तथा स्वंय मेरा तथा भाई सा. का, उनकी पद स्थापना आदि का, हमारे परिवार तथा मेरी ससुराल पक्ष का परिचय देना प्रारंभ कर दिया। मुनि श्री के इस वात्सल्य तथा स्मृति से भाई सा. तथा मैं अभीभूत तो हुये है, बड़ा हर्ष हुआ।

–इंजी. के.सी. जैन ''गोमित्र'', रीवां

वो प्रेमभरा सम्मान

"जैसे सूरज की गर्मी से तपते हुये तन को मिल जाये तरुवर की छाया।" कुछ ऐसा ही सुखद संयोग था क्षमासागर जी महाराज का अचानक हमारी जिदंगी में आना, मानो तूफां से लड़ती हुई किश्ती को किनारा मिल गया हो। आज रह–रह कर याद आ रही है वह घटना जिसने मेरा हृदय परिवर्तन कर क्षमासागर जी को गुरू के रूप में हृदय में प्रतिस्थापित कर दिया था।

रामगंजमंडी चर्तुमास के चंद दिनों बाद का एक दिन था, जब दोपहर को प्रश्नमंच का कार्यक्रम चल रहा था। किसी प्रश्न के जबाव में महाराज साहब ने ऐसा बोला कि "केवल रवि किरणों से जिसका संपूर्ण प्रकाशित है अन्तर" यह पूजा जिनकी लिखी मानी जाती है, यह उनकी नहीं बल्कि किसी और युगल जी की है, ऐसा मुझे अभी दीदी ने बताया है। संयोग से उसी सभा में कोटा से आये मेरे अंकल भी सुन रहे थे और वे बचपन से ही युगल जी से जुड़े थे। तो अंकल ने मुझे कहा कि हम लोगों को अच्छी तरह पता है कि यह पूजा कोटा वाले युगल जी ने ही लिखी है अतः महाराज को ऐसा नहीं बोलना चाहिए।

अंकल तो चले गये, लेकिन मैंने महाराज जी को एक पत्र लिखकर अंकल को हुए क्षोभ के बारे में अवगत करा दिया। अगले दिन प्रवचन के बाद जब महाराज जी बैठे हुये थे, तो महाराज ने मुझे हाथ के इशारे से बुलाया और बोले कि आपके अंकल की बात बिल्कुल सही है, और मैं जिस पद पर हूँ वहाँ मुझे किसी अन्य के कहने के आधार पर बिना कन्फर्म किये इस तरह की बात नहीं बोलनी चाहिए। इसके लिये मैं आपके अंकल से क्षमाप्रार्थी हूँ। यह आप अंकल को बता देना। यह सुनकर मैं हतप्रभ होकर महाराज जी को विस्मय से देखता रह गया। इतने बड़े मुनिराज हम जैसे तुच्छ लोगों से क्षमाप्रार्थी, यह कैसे संभव है। उनके हृदय की इस सरलता ने मेरे मन को छू लिया और झलकते नयनों के साथ मेरा सिर महाराज जी के चरणों में श्रद्धा से झुक गया। बरसों से जिसकी प्रतीक्षा थी, मुझे वो गुरूदेव आज मिल गये थे।

क्षमासागर जी की ऐसी सरलता के अन्य भी कई प्रसंग समय–समय पर देखने को मिलते रहे। लेकिन एक अवसर पर जिस तरह से उन्होंने मुझे सम्मान प्रदान किया वो क्षण मेरे लिये गुरू के आर्शीवाद के रूप में हमेशा स्मरण में रहेंगे, क्योंकि ऐसा आशीर्वाद किसी–किसी को ही नसीब होता है।

हुआ यूंकि महाराज जी के प्रवचन कर्म कैसे करें को मैंने और मेरी धर्मपत्नी अलका जैन ने कैसेट रिकॉर्डिंग को सुनकर पुस्तक के रूप में प्रकाशन के उद्देश्य से उन्हें कागज पर हस्त लिखित रूप में लिखकर देने का कार्य किया था। 4–5वर्ष बीत जाने पर भी वह पुस्तक प्रकाशित नहीं हो पाई थी, इससे हम निराश हो रहे थे। एक बार जब हम महाराज के दर्शन करने जबलपुर गये तो उस समय वे अस्वस्थ स्थिति में थे और उनकी आवाज भी बंद थी। मैं और मेरे ससुर जी दोनों ने जैसे ही महाराज को नमोस्तु किया महाराज ने इशारे से हमें बुलाकर और एक हाथ हम दोनों के कंधे पर रखकर खड़े हो गये। फिर वे हमें लेकर पास ही स्थित निर्मल जी की बुक स्टाल पर गये। वहां से उन्होंने एक पुस्तक उठाई और मुझे उसका नाम पढ़ाया, कर्म कैसे करें। फिर उसके पृष्ठ खोलकर प्रस्तावना वाले आलेख में जहाँ मेरा नाम कैसेट से लिपिबद्ध करने के लिये छपा था, वह दिखाया और फिर इशारे से ही यह भी बताया कि उसका प्रथम संस्करण समाप्त हो चुका है और यह दूसरा संस्करण निकल चुका है। मैं एक और जहाँ उक्त पुस्तक के प्रकाशित हो जाने के कारण अत्यन्त प्रसन्न था तो दूसरी और महाराज जी के द्वारा अस्वस्थ होने के बाद भी जिस तरह से अपने हाव भाव से मुझे सम्मान दिया उससे हृदय गदगद हो गया। हजारों लोगों की भीड़ के सामने सम्मान मिलना, इस अद्भुत सम्मान के सामने मानों बिल्कुल तुच्छ ही होता। कष्टों को समता से सहन करने की जो बहुमूल्य शिक्षा उन्होंने अपने आचरण से हमें सिखाई है, वह शायद उनके प्रवचनों से भी ज्यादा प्रभावशाली है। वे आज चाहे इस नश्वर संसार में नहीं रहे, लेकिन उनकी सरलता और सहनशीलता जीवन पर्यन्त हमारे हृदय में हमारे दिलोदिमाग में उनके होने का अहसास कराती रहेगी।

– दिनेश जैन, रामगंजमंडी

भावना ही बदल दी

ऐसे कौन से मुनिराज आज भी विद्यमान हैं जिनकी वाणी में इतना आकर्षण है जो अपनी वाणी से न केवल सोते हुए प्राणी को झकझोर सकते हैं बल्कि जीवन में नयी स्फूर्ति भी पैदा कर सकते हैं।पता चला कि वे प्रवचन मुनि श्री क्षमा सागर जी के हैं।

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी के परम शिष्य मुनि श्री क्षमा सागर जी के प्रवचनों का मेरे जीवन पर जितना प्रभाव पड़ा उतना शायद किसी भी महापुरुष की जीवनी दर्शन से नहीं पड़ा। मेरी नजर में मुनि श्री क्षमा सागर जी एक 'देव मूर्ति' हैं, जिनको हम आज देख पा रहे हैं।

बात वर्ष 2001 की है जब श्री धर्मेन्द्र बांझल (मेरे साले बाबू) ने झाँसी में मुझे एक केसेट सुनायी और मैं सहज ही यह जानने को उत्सुक हो गया कि ये प्रवचन किन मुनिराज के हैं? ऐसे कौन से मुनिराज आज भी विद्यमान हैं जिनकी वाणी में इतना आकर्षण है जो अपनी वाणी से न केवल सोते हुए प्राणी को झकझोर सकते हैं बल्कि जीवन में नयी स्फूर्ति भी पैदा कर सकते हैं।पता चला कि वे प्रवचन मुनि श्री क्षमा सागर जी के हैं। बस, उसी दिन से मन में एक भावना जाग्रत हो गयी कि मुनि श्री क्षमा सागर जी के समस्त प्रवचनों को न केवल सुना जाये बल्कि ऐसे तपस्वी मुनिराज के दर्शन भी किये जायें ।

कहते हैं 'जहाँ चाह वहाँ राह'—हुआ यूँ कि सेवा—काल के दौरान मेरे मित्र एवं भाई श्री के. के. जैन के साथ जयपुर और आस पास के तीर्थो के दर्शनों का प्रोग्राम बना। जयपुर में रुकने के लिए किसी जैन धर्मशाला खोजने के लिए निकले और संयोग यह रहा कि उसी पावन स्थल में रुकने की जगह मिली जहाँ मुनिराज के प्रवचन होते थे। उनका चातुर्मास भी जयपुर में ही हो रहा था। दो दिन मुनिश्री के प्रवचन सुने और उसी दिन से मेरे मन में जैन कुल में पैदा होने के गर्व की अनुभूति होने लगी। सहज इस बात में मुझे कभी विश्वास नहीं हुआ कि जैन कुल में पैदा होना भी कोई गर्व की बात है परन्तु क्षमा सागर जी के प्रवचनों का इतना प्रभाव अवश्य पड़ा कि अच्छे कुल में जन्म लेना या अच्छे कुल से संपर्क जुड़ना भी अपने पूर्व कर्मों का प्रतिफल ही है। धीरे—धीरे जो भी मुनि महाराज श्री के प्रवचनों के केसेट मिले उन्हें सुनता रहा। सौभाग्य से मुनि श्री का आगमन झाँसी भी हुआ और कुछ दिन उनके प्रवचनों एवं प्रश्नमंचों को सुनने का भी अवसर मिला। जब वे झाँसी आये थे तब तक उनके स्वास्थ्य में कुछ गिरावट महसूस होने लगी थी। फिर एक बार मुझे गुना में भी मुनि श्री के दर्शनो का अवसर मिला। गुना में उनके प्रवचन भी सुने। एक घटना जिसने मेरे जीवन में बहुत प्रभाव छोड़ा उसका उल्लेख करना बहुत जरूरी है, जिसके बिना यह लेख अधूरा ही रहेगा। हुआ यूँ कि सेवानिवृत्ति के पूर्व मैं अपने नवनिर्मित घर 'मणिमंगलम' में प्रवेश के पूर्व 'गृह प्रवेश' के कार्यक्रम में अपने स्वजनों को आमंत्रित करने गुना आया हुआ था। जिस दिन मैं झाँसी वापिस जा रहा था उससे एक दिन पूर्व मेरे राज मिस्त्री (श्री लक्षमण प्रजापति) का फोन आया कि मेरे पड़ोसी ने घर की बॉउंड्री की दीवार बन्दूक की नोक पर तुड़वा दी। मानव स्वभाव के अनुरूप मुझे क्रोध भी आना चाहिए था और पड़ोसी के खिलाफ कुछ न कुछ कार्यवाही करने को उत्तेजित भी होना चाहिए था। परन्तु झाँसी लौटते समय मुनि श्री के एक प्रवचन की केसेट हम लोगों ने बार बार सुनी और उस प्रवचन ने मेरी पूरी की पूरी भावना बदल दी और झाँसी पहुँचने पर मुझे न क्रोध आया और न ही कोई कार्यवाही की। उसका परिणाम यह हुआ कि मेरा तो क्रोध शांत हुआ ही आस पास के लोग भी मेरे इस व्यवहार से प्रभावित हुए बिना न रह सके।

— दिनेश चन्द्र मान्या

दूरगामी सोच

बात सन 1986 की है। आचार्य श्री विद्यासागरजी की अनुमति मिल चुकी थी गढ़ाकोटा चातुर्मास की मुनिश्री को। पूज्य मुनिश्री पटेरियाजी (गढ़ाकोटा) अतिशय क्षेत्र में चातुर्मास स्थापना करना चाहते थे। चूँकि उन दिनों पटेरियाजी क्षेत्र पर अनुकूल व्ययस्थाएँ नहीं थी, गढ़ाकोटा से मंदिर करीब 1–1.5 किलोमीटर दूर था, पहुँचमार्ग भी कच्चा था, वर्षा ऋतु से कीचड़ की अधिकता रहती थी, समाज के लोगों का आना–जाना बहुत कम था, क्षेत्र अविकसित था – इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए समाज ने मुनिश्री से विनम्र निवेदन किया कि आप चातुर्मास गढ़ाकोटा में ही करें तो उत्तम होगा। वहाँ (पटेरियाजी में) व्यवस्थाएँ अनुकूल नहीं हैं – आपकी चर्याओं में वांछित अनुकूलताएं शायद आप महसूस न कर पायें। पर मुनिश्री के भविष्य पारखी नयनों में तो पटेरियाजी क्षेत्र का अतिशय, उसकी प्राचीनता, भव्यता और उसके संरक्षण एवं संगठित विकास की तस्वीर /संकल्पना तैर रही थी। उन्होंने बड़े ही सहज भाव से समाज के श्रेष्ठियों से कहा – यह अतिप्राचीन मंदिर है, प्रतिमा अतिशययुक्त है, मेरे लिए मनोनुकूल है, यह सुरम्य वातावरण, बाह्य व्यवस्थाएं गौण हैं। आप जितना बने उतना करिये – हाँ, आप लोग कम–से–कम अष्टमी–चतुर्दशी आना–जाना प्रारंभ करें । हम यहीं चातुर्मास करेंगे।

जैसे–तैसे टीन शेड आदि जमाकर व्यवस्थाएँ की गईं। मुनिश्री का अथाह ज्ञान और चर्या तथा अनुकरणीय अनुशासन ही इतना प्रभावशाली था कि देखते ही संपूर्ण समाज का प्रतिदिन वहाँ जाना प्रारम्भ हो गया। क्षेत्र का कायाकल्प होना प्रारम्भ हुआ – विकास की सीढ़ियाँ स्वयं ही बनने लगीं। आज क्षेत्र पर भारतवर्ष के कोने–कोने से सभी दर्शनार्थी आने लगे हैं, शनैः–शनैः सुविधाओं का विस्तार हो रहा है। लोग प्रतिदिन नियमपूर्वक दर्शन–पूजन को आने लगे हैं, मार्ग सुधर गया है व इसका अतिशय सम्पूर्ण भारत में विस्तार पा रहा है।

यह थी मुनिश्री की भक्तिमयी पैनी दृष्टि। अपनी सुविधाओं को तिलांजलि देकर जैन धरोहर के संरक्षण, विकास और समाज को उपेक्षित क्षेत्र से जोड़ने की सोच। आज हम सोचते हैं कि वर्तमान में क्षेत्र की जो स्थिति है मुनिश्री की दूरगामी सोच और दृढ़ता के बगैर संभव नहीं था। भविष्यदृष्टा परम पूज्य मुनिश्री के चरणों में कोटि–कोटि नमन।

–प्रतिभा सेठ, गढ़ाकोटा

मेरी नौकरी लग गई

ये संस्मरण पूज्य गुरुवर समाधिस्थ 108 श्री क्षमासागर जी के चरणों में बिताये कुछ यादगार पलों में से वो पल है, जिसने जाने अनजाने में मेरी पूरी जिंदगी बदल दी। वो कठिन समय था जब में जॉब की तलाश करने घर से बाहर निकली और बैंगलोर गयी। काफी सर्च करने पर भी कहीं ना कहीं किसी मोड़ में आके मैं हार जाती थी। कभी मन भटकता था, तो कभी घबराहट होती थी। यह तो हम सभी जानते हैं कि गुरुवर को बच्चों से कितना स्नेह था। मैंने गुरुवर के दर्शन पाने पर जब उन्हें यह बात बतायी तब गुरुवर का स्वास्थ्य ठीक नहीं था, पर किसी तरह से उन्होंने मुझे उनके शिष्य जो कंपनियों में काम करते थे, उनका मार्ग दर्शन लेने को कहा। उनके आशीर्वाद के ठीक एक महीने बाद मेरी नौकरी एक कंपनी में लग गई। यह खुश खबरी जब महाराज श्री को मैंने बतायी तब वह बहुत ही भावुक हो गये। वह वात्सल्य देखकर लगता है कि ऐसी ही प्रेम और करुणा की बातें हम किताबों में पढ़ा करते थे, जो मुनि श्री के जीवन का अभिन्न अंग हैं, धन्य हैं ऐसे गुरुवर और धन्य हैं उनका प्राणिमात्र के प्रति प्रेम। और कुछ कहने को मेरे पास शब्द नहीं है। बस मुनि श्री की याद आती है, गुरूवर श्री के चरणों में बार बार नमन।

–समीक्षा सिंघई, पुणे

The Real Iron Man

I never knew Munishri until I came to US. As strange as it may sound but that is true. Living alone as bachelor in Boston, I wanted to do some dharma dhyan during daslakshan and was looking for some pravchan on 10 dharma. I came across Munishri's pravachan and started playing them.

That moment changed my life forever and I found solace and real meaning of Jain way of life through Munishri's pravachan.

I got the first golden chance of his darshan soon after my marriage in December 2009 at Madhiya Ji, Jabalpur. The last time we met Munishri was in December 2014 at Moraji Sagar. I remember how bad Munishri's health was and we did not get a chance to speak one to one with him this time. All I could see from outside the room was his raised hand in ashirwad mudra, as if munishri was giving his shubhaashish and saying "अच्छा अलविदा".

It was time for us to leave and we were getting late but strangely I was not feeling like leaving that place and wanted to stare at his hand continuously.

My dad used to be my only guide and margadarshak to show me the right path in difficult times. Munishri's pravachans made me independent and taught me the right way to think and live life and do karma.

My family and I have seen miracles happening in our lives with Munishri's ashirwaad. We would always send our Namostu to guruvar and he would raise his hand and will say the magic words "sab thik ho jayega" and that's it.Miracles happened afterwards. Munishri's kripa drishti took us out of every difficult situation in life.

I really wish that my son grows to become as samvedansheel and karunawaan as Munishri. Munishri is the real Iron Man that I have seen in my life. My prayers for Munishri to attain nirvana and my wish is to follow his margadarshan and make my life a little better each and everyday.

- Preeti Jain, USA

जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि

वो पल बहुत ही कुछ खास थे मेरे लिये जब पहली बार हम लोगों को 2005 में मुरैना में यंग जैना अवार्ड के लिय बुलाया गया। तब कुछ दिन पहले से महाराज श्री का स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था। पर फिर भी इस प्रोग्राम का आयोजन पहले जैसे ही किया गया। अवार्ड फंक्शन के लास्ट दिन हम सभी को अवार्ड मिलना था। प्रोग्राम शुरू हुआ सबसे पहले सीनियर अवार्डीज को अवार्ड दिय गए। साथ ही और भी कुछ लोगों को अवार्ड दिया गया।

पर कुछ ही समय के बाद अँधेरा घिरने लगा तो उन्होंने कहा कि उनकी सीमाएं हैं और उन्हें अँधेरे से पहले अपने स्थान पर पहुँचाना होगा। पर जो अवार्डीस रह गए हैं वे बुरा नहीं मानें, मैं उन्हें खुद अवार्ड दूंगा। फिर कुछ ही समय के बाद मंच से घोषणा होती है कि शेष अवार्डी महाराज श्री के कमरे में पहुँच जायें। उन्हें वहीं पर अवार्ड दिये जा रहे हैं।

हम सभी वहाँ पहुँच जाते हैं, महराज श्री का मुस्कुराता हुआ चेहरा और एक–एक अवार्डी को अपने हाथों से अवार्ड प्रदान करना वो पल बहुत ही अद्भुत पल थे। मैंने अपने जीवन में कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मुझे महाराज श्री के हाथों से अवार्ड मिलेगा। मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि मुझे उनसे ये अवार्ड मिला और आज भी वो पल मेरी आँखों के सामने झूलता है तो ऐसा लगता है की मैं अभी भी महराज श्री के सामने बैठा हूँ और वो हमें अपने आशीर्वाद दे रहे हैं। उनका आशीष जीवन भर हमारे साथ रहेगा।

– राहुल कुमार सतभैया, सागर

प्रेम ने आत्मा को भीगा दिया

परम पूज्य मुनि श्री क्षमासागर जी महाराज के प्रथम दर्शन का सौभाग्य मुझे 1998 में बीना चातुर्मास में प्राप्त हुआ, उनकी आहारचर्या, वैयावृत्ति में उनके पास रहना मुझे बहुत अच्छा लगता था परन्तु इन चार महीनों में उनसे कोई बातचीत नहीं हो पाई । फिर बीना से मुंगावली की ओर जब मुनि श्री का विहार हुआ तब मैं भी उनके साथ गया था। मुंगावली पहुँचकर जब सभी लोग वापस लौटने की बात करने लगे तो महाराज जी ने मुझसे कहा –सोनू जब तक हम ना कहें तुम कहीं नहीं जाओगे, यहीं रहना। मेरे माता–पिता भी वहीं थे, उन्होंने प्रसन्न होकर मुझसे कहा कि महाराज जी जब तक न कहें तुम घर मत आना। मैं वही रुक गया और गुरु की प्रेम भावना को हृदय से महसूस किया।

इसके बाद तो मंडीबामोरा, सहायपुर, कुण्डलपुर सभी जगह विहार में साथ रहा। कुण्डलपुर में सन 2000 में आचार्य श्री के सान्निध्य में पंचकल्याणक चल रहा था, बहुत भीड़ थी, तब महाराज जी मेरा हाथ पकड़कर मुझे आचार्य श्री के दर्शन कराने ले गए थे। उस समय उनके प्रेम ने मेरी आत्मा को पूरी तरह भिगो दिया था। इसी तरह जब शिवपुरी विहार हुआ तब बहुत पानी बरस रहा था और रात्रि विश्राम के लिए केवल दो कमरे ही उपलब्ध थे, लोगों की संख्या भी ज्यादा थी, तो जगह न मिलने के कारण मैं महाराज जी के तखत के नीचे जाकर लेट गया, अगले दिन उन्होंने मुझसे कहा – तुम रात भर सो नहीं पाए हो, इसलिए आज आराम करो, विहार में मत चलना। उनकी इस करुणा को देखकर मन श्रद्धा से नतमस्तक हो गया।

मैं हर शनिवार उनके दर्शनों को जाया करता था। जब उनका स्वास्थ्य खराब था, उस समय मेरी भी तबियत बिगड़ गई और मैं कई दिनों तक दर्शनार्थ नहीं जा पाया, फिर जब उनके दर्शन को गया तो उन्होंने इशारे से पूछा कि तबियत कैसी है? मैंने ठीक है, ऐसा कहा तो मुझे देखकर उनकी आँखों से आंसू बह निकले, उस समय अहसास हुआ की स्वयं तकलीफ में होकर भी दूसरों की पीड़ा का इतना ध्यान रखने वाले ये संत तो महावीर हैं । उनके साथ बिताया हुआ हर पल और उनकी दी हुई शिक्षाएं मेरे जीवन में सदा अमर रहेंगी। वे हमारे गुरु जल्द ही सिद्ध शिला पर विराजमान हों, यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है।

प्रभु को नहीं देखा हमने कभी,पर उसकी जरुरत क्या होगी?
गुरुदेव तेरी सूरत से अलग भगवान की मूरत क्या होगी?

– भूपेश (सोनू) जैन, बीना

अच्छे अवसर का लाभ लें

बी.ई. कमप्लीट करने के बाद मैंने बंगलौर में जॉब join कर लिया था। एक project के सिलसिले में China जाने का अवसर मिल रहा था। Opportunity अच्छी थी, पर मन में कुछ दुविधा भी थी क्योंकि पूर्व में मेरे परिवार से कोई भी विदेश नहीं गया था। यही सोच–विचार से भरी की जाऊँ या ना जाऊँ मैं अपने घर विदिशा आई। माँ–पापा से बात की और उनसे बात करके काफी हद तक जाने के लिए मन भी बना लिया था पर कुछ लोगों का कटाक्ष सुनकर की ये विदेश तो पैसा कमाने के लिए जाना है, क्या जरूरत है जाने की, बिटिया अकेले कैसे रहेगी अनजान देश में और अन्य तरह की नकारात्मक बातों से मेरा मन फिर विचलित हो गया। उस पल अनिर्णय की स्थिति में गुरू चरणों में पहुँच गई और महाराज जी को सारी बात बताईं। लोगों का नजरिया जो इस बात पर अच्छा नहीं था, वो भी बताया। तब गुरुजी ने बहुत विश्वास से भरे शब्दों में बोला की "आप जाओ, अच्छे अवसर का लाभ लेना चाहिए। अपने संस्कारों का पालन करना चाहे कहीं भी रहो और जो पूछे कि क्यों जा रही हो तो बोल देना कि महाराज ने कहा है इसलिए जा रही हूँ।" हर बच्चे के प्रति उनका दृढ़ विश्वास ही हम बच्चों को आज भी आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है।

–अंशु जैन, बैंगलोर

उस दिन महाराज जी ने प्रवचनों में एक ऐसी बात कही जो हमेशा याद रहेगी। उन्होंने कहा कि लोग मुझसे पूछा करते हैं कि **senior awardee** का क्या **criteria** है, तो मैं लोगों को बस यही जवाब दे दिया करता हूँ कि जिस बिटिया को बचपन से बड़े होते हुए देखा है, उसी को मंच से अवार्ड लेते देखना, बस यही **criteria** है । हम सभी **awardees** के आँखों से अश्रुधारा बह निकली।

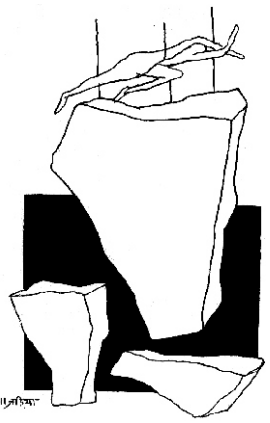

अवार्ड लेते देखना भी क्राइटेरिया

मुनिश्री से जुड़ने का सौभाग्य मुझे बहुत बचपन में ही मिल गया था, जब महाराजजी का 1993 में छतरपुर (म.प्र.) में चातुर्मास हुआ था। मेरे माता–पिता उनसे जुड़े थे तो हम भी उनके साथ महाराज जी के दर्शन को हमेशा जाया करते थे। जब भी उनके पास जाते,सवेरे से लेकर रात तक का अधिकतम समय महाराज जी के समीप ही व्यतीत होता था। जब उनका दरवाजा बंद होता था, हम कई बार बाहर बैठ कर ही दरवाजा खुलने का इंतजार किये करते थे, एक मिनट भी कभी देर से पहुँचने पर लगता था कि समय व्यर्थ गँवा दिया।

अधिकतर मैं चुपचाप उनके कमरे में एक कोना ढूंढ़कर बैठ जाया करती थी, जहाँ से उन्हें बस अनवरत देखती रहूँ। जब वे अस्वस्थ थे और नहीं बोल पाते थे, तब भी मैं कमरे के किसी एक कोने से उन्हें निहारती रहती थी, उनकी छवि इतनी शीतल इतनी आत्मीय थी कि नजर हटती ही नहीं थी। मेरे आते ही वे पूछा करते थे कि कब आये और जाते समय मैं उन्हें बता कर जाती कि जा रही हूँ । वैसे तो बस इतना ही संवाद होता था, परन्तु उनके सानिध्य में हर कठिन समय में भी जीवन की उजली राह हमेशा दिखती रही। उनके दर्शन पाकर हमेशा ही एक गहन शांति और ऊर्जा मिलती रही। उनके समीप बिताये बचपन से अब तक के अनमोल पलों की अनगिनत स्मृतियां हर दिन याद आती हैं, और वे सब अपने आप में एक संस्मरण हैं। वे सारे पल मेरे जीवन का अहम हिस्सा हैं और निश्चित ही वो श्रेष्ठ समय रहा जहाँ इतना कुछ पा लिया है कि जिसकी प्रेरणा और सम्बल से एक अच्छा जीवन जिया जा सकता है।

महाराज जी की प्रेरणा से बच्चों व युवाओं को धर्म से जोड़ने के लिए यंग जैना अवार्ड का आयोजन किया जाता रहा जहाँ 10th, 12th या उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों व युवाओं को सम्मानित किया था। परिस्थितिवश मैं कभी भी उस अवार्ड कार्यक्रम के लिए अपना आवेदन नहीं दे पायी, ना ही देखने ही जा पायी कभी! 2005 में जब मैंने Amity University, Noida में MBA में admission लिया तो महाराज जी के दर्शन को गयी थी। तब उन्होंने मुझे YJA 2005 में senior swardee के लिए apply करने को कहा। उस साल का award function मुरैना (म.प्र.) में था। मैं और awardees के साथ ही बैठी थी। उस दिन महाराज जी ने प्रवचनों में एक ऐसी बात कही जो हमेशा याद रहेगी। उन्होंने कहा कि लोग मुझसे पूछा करते हैं कि senior awardee का क्या criteria है, तो मैं लोगों को बस यही जवाब दे दिया करता हूँ कि जिस बिटिया को बचपन से बड़े होते हुए देखा है, उसी को मंच से अवार्ड लेते देखना, बस यही criteria है । हम सभी awardees के आँखों से अश्रुधारा बह निकली। सचमुच उनके मन में संसार के हर जीव के प्रति अथाह प्रेम था, और हर कोई उन्हें समान रूप से अपने अत्यंत समीप पाता था। आज उनके जाने के बाद भी उनका प्रेम, आत्मीयता और सशक्त सम्बल हम सबके साथ है और जीवन भर रहेगा। उन्हीं के शब्दों में–

तुम यहाँ हो तो लगता है
जैसे कोई अपना है
तुम कभी यहाँ नहीं रहोगे
तब लगेगा कि कोई अपना नहीं है
तुम यहाँ से कहीं चले जाओगे
तो लगेगा कि जैसे अपना कोई चला गया है
असल में, तुम अब सबके हो गए हो।

– प्रीति जैन, नॉएडा

एक महान संत

मुनि श्री ने मेरे जीवन को एक नई दिशा दी है। हर बात, बहुत ही सहजता से उन्हें बता देते थे और वे जो भी कहते थे उस पर कभी second thought नहीं आता था। वे एक महान संत तो थे ही, एक बहुत अच्छे इंसान भी थे। इसलिए न केवल जैन अपितु non जैन भी उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहते थे। वे प्राणी मात्र को समान स्नेह देते थे। हम सभी का बहुत पुण्योदय है कि हमें ऐसे गुरु मिले। 2003 Young Jaina Award, मुझे याद है कि कैसे 2–3 दिनों में जीवन को एक अच्छी दिशा देने के लिए इतनी सारी बातें सिखा दीं। Highly educated लोग, कैसे हमारी छोटी–छोटी चीजों का ध्यान रखते थे। यह सब बहुत ही inspiring और motivating था और हमेशा यादगार रहेगा। कई बार हमारे जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं कि आपके माता–पिता भी आपको समझ नहीं पाते । मेरे जीवन में भी ऐसा समय आया और उस समय मुनिश्री ने समझाया और रास्ता दिखाया। उस खुशी और संतुष्टि को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। पहले मैं धर्म सिर्फ पारम्परिक तरीके से, अपने माता–पिता को खुश करने के लिए करती थी, जैसा अधिकांश बच्चें करते हैं। पूजा–पाठ, नियम उपवास आदि को ही धर्म समझती थी। मुनिश्री से जुड़कर समझ आया धर्म का मूल स्वरुप क्या है। लोग पूछते थे कि महाराज जी तो बोलते नहीं हैं फिर क्या करते हो उनके पास? पर उनके पास बैठे रहकर ही हमने बहुत कुछ सीखा, बहुत कुछ पाया। जो अनमोल है। मैत्री समूह जैसा एक परिवार मिला जिससे मैं कभी जुदा नहीं होना चाहती। मुनिश्री की शिक्षाओं को अपने जीवन में तो उतारना ही है साथ ही उनकी वाणी को जन जन तक पहुँचाना है। सच कहा है –'दिन सब ढल जाते हैं, शेष रह जाती हैं स्मृतियाँ' और अब तो इन्हीं के सहारे हमें अपने जीवन को बहुत ऊँचा उठाना है।

– पारुल जैन, गोटेगाँव

A Magical Ray

I was an average student but I had never seen failure in studies till class 12th. After the completion of my schooling, I travelled to Munishri along with my family to discuss the stream I should be choosing for my future career. I was so keen to do engineering and had fully made up my mind to pursue engineering. I requested Munishri for his views on my choice of engineering. He replied within seconds, "What would you do after engineering?" I said, "It's a dream I have."

He being a personality of balanced nature said neutrally, "if you have decided, then should go ahead."

I so wanted to become an engineer that I joined an engineering college despite him not fully agreeing.However, as soon as I entered I encountered so many failures and roadblocks. I belong to a family where all the decisions were taken with his blessings. The way I was born and brought up has developed an unstated faith in him.

Within few months of failures in engineering made me realize that I should have listened to him. I went to him again and explained to him all the challenges that I was facing. Same day, after the aahar charya, he said "everything will be fine, don't worry."I bursted into tears of happiness.

Years have passed and I am still astonished by his far sightedness. I have never come across such a vibrant personality who has ability to understand both dharma and karma with such clarity. I feel glad to see, that today many youngsters are working unitedly for spreading his teachings.

- Swati Jain, Chennai

सच्ची गुरु भक्ति

बात तब की है जब 2010 में मुझे पहली बार जॉब के सिलसिले में canada जाने का offer मिला था। उस समय महाराज जी जबलपुर में थे। जीवन के हर महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए मैं मुनिश्री के पास ही जाता था। canada जाऊँ या ना जाऊँ यह पूछने के लिए भी उनके पास जबलपुर गया था। मैं बड़े सवेरे 5.30 बजे ही महाराज जी के पास उनके कमरे में पहुँच गया, उस समय उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था, यह देखकर मेरा मन पीड़ा से भर आया। वहाँ पहले से एक ब्रह्मचारी भैयाजी बैठे हुए थे, इसलिए मैं उनसे थोड़ा दूर एक कोने में बैठ गया। उस समय एक ऐसी घटना घटित हुई जिससे मैं बहुत परेशान हो गया, वो ब्रह्मचारी भैयाजी महाराज जी से कहने लगे कि महाराज जी आप अपना नाम बदल लो तो सारी बीमारियाँ ठीक हो जाएँगी। उनके ऐसा कहने पर मुझे बहुत बुरा लगा पर मैं कुछ कह ना सका और महाराज जी ने भी उस बात को avoid कर दिया, पर उन्होंने फिर वही बात दोहराई की आप क्षमा लिखते हैं उस शब्द में कुछ घटा बढ़ा दो, मैं gurantee से कहता हूँ आप ठीक हो जायेंगे। महाराज जी ने कुछ समय तक तो कोई प्रतिक्रिया नहीं की, पर उन भैयाजी का हठाग्रह देखते हुए उन्होंने अपनी पीछी उठाई और आचार्य महाराज के फोटो की तरफ इशारा कर नमोस्तु करने लगे, वे कुछ बोल नहीं पा रहे थे पर उनकी आंखों में जो भाव थे वो शायद यही थे कि आचार्य श्री यदि कहें तो मैं सबकुछ बदल लूँ, नहीं तो कुछ नहीं बदलना, सब ठीक है। उनके मौन उत्तर ने उन भैयाजी को निरुत्तर कर दिया। उस दिन मुझे जीवन का बहुत बड़ा सन्देश मिला अपने गुरुवर से कि चाहे कितनी भी विपरीत परिस्थिति क्यों न आ जाये पर हमारी श्रद्धा और समर्पण कभी भी कमजोर नहीं पड़ना चाहिए, उनकी दृढ़ता और सच्ची गुरु भक्ति देखकर मेरा मन उन चरणों में श्रद्धा से नत मस्तक हो गया।

– आकाश जैन, कनाडा

सब कुछ पा लिया

जीवन में जो भी अच्छा है वो महाराज जी के कारण ही है। धर्म की शुरूआत, अच्छा इंसान बनने की शुरुआत सब गुरू चरणों से ही हुई है। MCA करने के बाद मेरा Campus Selection TCS साफ्ट्वेयर कंपनी में हुआ था। पहली job opportunity थी और joining letter मिलने का इंतजार भी था। इसे गुरूजी का अशीर्वाद ही कहूँगी कि जिस दिन उनके दर्शन के लिए सागर से पथरिया जा रही थी, ठीक उसी समय joining letter भी आया। joining letter को बिना खोले ही अपने साथ रख लिया इस भाव से की इसे महाराज जी से ही खुलवाऊँगी ताकि हमेशा उनका आशीष मेरे साथ रहे। पथरिया पहुँच कर उनके दर्शन किये और joining letter भी उनके पास रख दिया। मुनिश्री ने पूछा ये क्या है? तो मैंने उन्हें job लगने का बताया और उन्हें बोला कि मेरा मन है कि सबसे पहले आप ही इसे पढ़ें। गुरूजी तो वात्सल्य की मूर्ति थे और बच्चों के अनुरोध को सहर्ष स्वीकार भी कर लेते थे। ऐसे विरले थे मेरे गुरुवर जो हम बेटियों को विश्वास देते थे आगे बढ़ने का, अच्छा करने का, शिक्षित और संस्कारवान बनने का। हर बेटी की उपलब्धि पर भावविभोर हो जाते थे वो। तो उन्होंने मेरा अनुरोध भी मान लिया और joining letter पढ़ा फिर मुस्कुराते हुए शुभाशीष के साथ मुझे दिया। अपना campus selection होने पर भी इतनी खुशी नहीं थी जितनी इस वक्त महाराज श्री के हाथ से ये letter लेते हुए महसूस हो रही थी। पूना से जब भी घर आती तो महाराज जी के दर्शन को जाते थे, हर बार उनका सानिध्य पाकर लगता की सब कुछ पा लिया। उनके वचन भी अनुपम थे और उनका मौन भी उतना ही मुखर था। जीवन के हर अच्छे बुरे वक्त में मुनिश्री का अशीष ही हमें अच्छा करने की प्रेरणा देगा।

–नेहा मोदी, पुणे

यादों के झरोखों से

✍ महाराज जी जब मंडीबामौरा में थे उस समय एक बूढ़ी माँ महाराज से नियम लेने पहुँची और महाराज से कहा कि हम नियम लेना चाह रहे हैं कि अब हम कुएं का पानी और हाथ का पिसा आटा ही लेगें। महाराज जी ने कहा कि थोड़ा और सुधार कर लो कि जब तक हमारी सामर्थ्य रहेगी नहीं तो फिर आप बहुओं से झगड़ा करोगी।

✍ दीपावली का समय था, हम सभी से महाराज जी ने कहा कि हम चाहते हैं कि इस वर्ष कुछ ऐसा करें जो प्रतिवर्ष से हटकर हो। तो उन्होंने कहा कि आप लोग गाँव के निराश्रित लोगों के घर जाकर उन्हें एक रजाई और पैकिट में चार पूड़ी और कुछ मीठा देकर आना, बगैर कोई प्रदर्शन के। उनके सुझाव का हम सभी ने पालन किया।

✍ बात अतिशय क्षेत्र पटेरिया जी पर महाराज जी के प्रथम चार्तुमास की है। जब महाराज जी के गृहस्थ जीवन के पिताश्री सिंघई जीवन कुमार जी पधारे तो उन्होंने महाराज श्री कहा कि हमारा विचार इस क्षेत्र पर कुछ निर्माण कार्य कराने का हो रहा है। चर्चा के समय श्री सिंघई जी ने कहा कि अपने घर के सामने जो दर्जी रहता है उसे लकवा लग गया है, उसका लड़का भी ध्यान नहीं देता। महाराज जी सभी बातों को ध्यान पूर्वक सुनते रहे बाद में सिंघई जी जब नमोस्तु कर वापिस जाने लगे तो महाराज जी ने बुलाकर कहा कि सिंघई जी आप क्षेत्र पर कुछ निर्माण कार्य करें अथवा न करें मगर उस दर्जी की कुछ अच्छी व्यवस्था कर देना। हाँ, मगर इस बात का ध्यान रखना कि वह आपके बोझ से दब न जाये । यानि जो भी कार्य करें वह बगैर नाम के हो।

–लक्ष्मीचंद शाह (कक्काजी), गढ़ाकोटा

नियमों के साथ समझौता नहीं

मुझे याद है जब मुनिश्री कुछ कुछ बीमार रहने लगे थे। उन्हें इतनी पीड़ा में देख कर बहुत तकलीफ भी होती थी और अफसोस भी रहता था कि निजी जिम्मेदारियों से इतने वशीभूत हैं कि अपने गुरुवर के पास रहकर उनकी सेवा भी नहीं कर पा रहीं हूँ । हर बार कि तरह इस बार कि छुट्टियों में भी मैं मुनिश्री के दर्शन को पहुँची। उनकी आहारचर्या के वक्त तक पहुँच गयी थी। थोड़ी देर हो जाने के कारण से आहार देने का सुअवसर तो नहीं प्राप्त हुआ पर आहारचर्या देखने को मिली। देखकर कुछ अच्छा सा नहीं लग रहा था क्योंकि मुनिश्री बहुत पीड़ा से गुजर रहे थे। पर इन सब कष्टों के बाद भी उन्होंने अपने किसी भी नियम के साथ कोई समझौता नहीं किया, हर क्रिया व्यवस्थित नियमों के अनुसार ही चल रही थी। आहारचर्या के पश्चात मैं मुनिश्री के समीप जाकर बैठ गयी। हर बार मेरे नमोस्तु बोलते ही मुनिश्री एक मुस्कराहट के साथ आशीर्वाद देने को हाथ जरुर उठाते थे, कुछ बातें करते थे और हाँ एक भजन जरुर सुनते थे। शायद ये भजन उन्हें बहुत पसन्द था "मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है, करते हो तुम गुरुवर मेरा नाम हो रहा है"। निश्चित ही वो इस भजन में अपने गुरु को याद करते होंगे। सच्ची श्रद्धा और विश्वास किसे कहते हैं आखिर ये भी तो हमने उन्हीं से सीखा था।

वहीं बैठे–बैठे उन्हें घंटों निहारती रही। बिना शब्दों के ही मानो सारी बातें कर ली थीं मैंने उनसे। कुछ देर में जब देखा कि जाने का वक्त हो गया और मुनिश्री से कुछ बात ही नहीं हुई तो मैंने धीरे से बोला "महाराज जी, अब तो जल्दी से ठीक हो जाइए, हम सब बच्चों को आपके मार्गदर्शन की बडी आवश्यकता है, हम सब आपसे ही तो हैं।" इतना सुनते ही वे भावुक हो गये और उनकी आँखों से अश्रु बहने लगे। आँख मे अश्रु लिये फिर वही प्यारी सी मुसकराहट के साथ हाथ उठा कर मेरी बात का समर्थन किया मानो कह रहे हों कि अभी तो तुम बच्चों को धर्म और कर्म की राह में बहुत आगे ले जाना है। उनकी मुसकराहट में वो दर्द तो देखा था पर उस दर्द का उन्हें कोई गम नहीं था। उन्हें भली भाँति ज्ञात था कि भैया कर्मों को तो बडे शांत भाव से सहन करना होता है तभी तो इनकी निर्जरा होगी। जिन्होनें प्रगाढ़ तकलीफों में भी अपने नियम और संयम को बनाए रखा, तकलीफों से जूझते रहे पर साहस को कम ना होने दिया, अपनी विषम परिस्थिति में भी अपने गुरु पर से श्रद्धा कम ना होने दी, कुछ ऐसे ही है हमारे क्षमा के सागर, हमारे गुरुवर।

– स्वाति

आशा की किरण

मुनिश्री के पावन प्रवचनों से हम सभी के जीवन में बहुत से सकारात्मक परिवर्तन आए हैं, विशेषकर कर्म–सिद्धांत प्रवचनों में मुनिश्री के द्वारा कर्मों को करने की कला पर, जो प्रकाश डाला गया है, वह अद्‌भुत है। कर्म–सिद्धांत से ही मेरा परिचय मुनिश्री से हुआ, जिसके बाद मैं सदा के लिए उनका भक्त हो गया। बात 2004–05 की है, जब मैं 12वीं कक्षा के बाद PET और AIEEE परीक्षा देकर इंजिनियरिंग कालेज में एडमिशन लेने की प्रतीक्षा कर रहा था। उस समय मैं पहली बार घर से अकेले AIEEE की काउन्सलिंग के लिए निकला था, पर समय पर काउन्सलिंग में ना पहुँच पाने के कारण, मुझसे काउन्सलिंग छूटी और एक अच्छे कॉलेज मे एड्‌मिशन का अवसर भी। घर लौटने पर बहुत डाँट पड़ी, मुझे स्वयं से भी बड़ी निराशा हुई क्योंकि हाथ से अच्छा अवसर निकल गया था। क्योंकि घर पर करने के लिए कुछ ज्यादा नहीं था, इसी कारण मेरी सोच बहुत नकारात्मक होने लगी। सोच का प्रभाव व्यवहार में आने लगा। मुझे ध्यान है, मेरी माताश्री मेरे चिड़चिड़े स्वाभाव से बहुत चिंतित होने लगी थी। उस समय अपना ध्यान दूसरी ओर करने के लिए मैं घर मे रखी हुई सभी सीडी आदि सुनने लगा। इसी प्रक्रिया में मेरा ध्यान मुनिश्री की कर्म–सिद्धांत की सीडी पर गया।

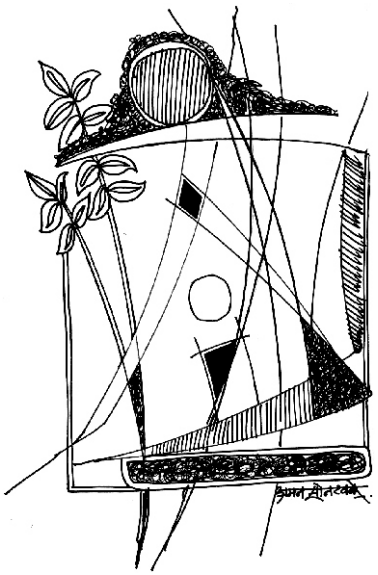

मुनिश्री के द्वारा कहा गया एक–एक शब्द मुझे अद्‌भुत शांति देने लगा। मन शांत हुआ तो विचार भी सकारात्मक होने लगे। प्रवचन सुनते–सुनते ही मेरे मन मे स्वयं और दूसरों के प्रति क्षमा के भाव बने, और मैंने स्वयं में सुधार की ठानी। उनके ये प्रवचन, मेरे लिए मार्गदर्शक हुए।

वो पल मेरे लिए बहुत सौभाग्यशाली थे, जो मेरे मन में प्रवचन सुनने की रुचि जागी। प्रवचन प्रारंभ हुए, प्रवचन का विषय कर्मों के बंधने और उनके फल देने पर था। मुनिश्री ने समझाया, अज्ञानवश किस तरह हम अपने कर्मों के अच्छे और बुरे परिणामों से प्रभावित होते हैं। प्रवचन मे कहे गए सभी संस्मरण, मेरे लिए दर्पण के समान थे, क्योंकि मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे मुनिश्री मेरी ही स्थिति का वर्णन कर रहे हों। मुनिश्री के द्वारा कहा गया एक–एक शब्द मुझे अद्‌भुत शांति देने लगा। मन शांत हुआ तो विचार भी सकारात्मक होने लगे। प्रवचन सुनते–सुनते ही मेरे मन मे स्वयं और दूसरों के प्रति क्षमा के भाव बने, और मैंने स्वयं में सुधार की ठानी। उनके ये प्रवचन, मेरे लिए मार्गदर्शक हुए। प्रवचन की सीडी लगाते समय, मैं कहीं ना कहीं, यह सोच रहा था कि, थोड़ी देर सुनता हूँ, पर जब मैंने प्रवचन सुने तो कब समय निकल गया पता ही नही चला, और इस थोड़े से समय ने जीवन के एक कठिन दौर को सरल बना दिया।

मुनिश्री के मार्मिक वचनों से जो अनुभूति मुझे प्राप्त हुई थी, वह शब्दों के परे है। शायद इसीलिए यह 10 साल पुरानी बात आज भी मेरे मन में चलचित्र की तरह बसी हुई है। तब से अब तक, मैं लगातार मुनिश्री व उनकी अद्‌भुत कृतियों के द्वारा धर्म लाभ ले रहा हूँ। मुझे जबलपुर, सागर और गढ़कोटा मे उनके पावन दर्शन के शुभ अवसर भी मिले। मैं मैत्री समूह का विशेष अभिवादन करता हूँ, क्योंकि आपकी प्रेरणा से ही मैंने अपने इस संस्मरण को शब्दों में ढाला है और आप सभी के कठिन श्रम से ही इंटरनेट पर मुनिश्री की रचनायें उपलब्ध हुई हैं । उनके जीवन से न जाने कितनों को मार्गदर्शन मिला । धन्य हैं ऐसे गुरु और उनकी मैत्री की भावना।

– रचित कुमार जैन, बैंगलोर

लेना एक देना सवाया

गुरुवर मुनिश्री क्षमासागर जी से सभी YJA (यंग जैना अवार्ड) अवार्डीस के कुछ विशेष अनुभव अवश्य जुड़े हुए हैं। सौभाग्यवश मुझे मुनिश्री से पहले यंगजैनाअवार्ड (2001) से ही जुड़ने का अवसर मिला। मेरे मुनिश्री के साथ जुड़े अनुभव से मैं अपने और अन्य अवार्डीस के बारे में कह सकता हूँ कि हम लोगों में जो भी अच्छे या पॉजिटिव संस्कार हैं उनमें एक बड़ा भाग मुनिश्री से सम्बद्ध है।

एक ऐसा ही संस्मरण मुनिश्री से मेरी पहली भेंट का है। मैं यंग जैना अवार्ड 2001 के लिए पिताजी के साथ शिवपुरी पँहुचा, मेरा एडमिशन एनआईटी भोपाल में हुआ था, परन्तु परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण फीस आदि की चिंता बनी रहती थी इसलिए पिताजी चाहते थे कि स्कालरशिप हेतु मैत्रीसमूह से चर्चा की जाए मगर कहने में संकोच भी हो रहा था। इस स्थिति में हम किसी से बात करते इससे पहले मुनिश्री के दर्शन का अवसर हमें मिला, और बिना हमारे कुछ कहे मुनिश्री ने स्वयं ही कहा –सुना है पढ़ाई को लेकर कोई आर्थिक परेशानी है? यह सुनकर पिताजी और मैं सोचते रह गए कि कैसे मुनिश्री ने बिना कहे मन की बात जान ली और पिताजी ने कहा –हाँ महाराज जी, परेशानी तो है। मगर सहायता माँगने में हमें संकोच हो रहा है। इस पर मुनिश्री ने जो बात कही वह सुनकर जीवन में उपकार लेने और देने वाले की भूमिका स्पष्ट हो गई और मन में कुछ दृढ़ संस्कार बन गये। मुनिश्री ने कहा –देखो भैया,सहायता लेने में संकोच कैसा? सहायता लेने से न लेने वाला छोटा होता है न देने वाला बड़ा हो जाता है, देने वाले में तो विनय की भावना होनी चाहिए और उसे अपने को धन्य मानना चाहिए कि मुझे सहायता करने योग्य कोई सुपात्र मिल गया और लेने वाले में सिर्फ कृतज्ञता का यह भाव होना चाहिए कि यदि आज हम किसी से एक रूपया ले रहे हैं तो कल हम सवाया लौटाएँगे। यह सुनकर मन का संकोच दूर हो गया और यह संस्कार मन पर दृढ़ हो गया कि मुझे भी अपनी मेहनत और लगन से इस योग्य बनना है कि कल कोई सुपात्र मिलने पर मै भी विनय–पूर्वक उसकी मदद कर सकूँ और सवाया लौटा पाऊं। आगे के वर्षों में मुनिश्री के दर्शन का जब भी अवसर बनता ऐसा कोई न कोई संस्कार और सीख मेरे जीवन में जुड़ती गयी। अब भले ही मुनिश्री हमारे साथ प्रत्यक्ष रूप में न हों, पर मैं यह भावना भाता हूँ कि हम इन्हीं संस्कारों पर चलते हुए अपनी भावनाओं और अपने जीवन में गुरुवर को जीवित रखें।

– योगेन्द्र जैन, लंदन

प्रखर प्रज्ञा के धारक

बात सन् 92–93 की होगी। मेरी पोस्टिंग दमोह (म.प्र.) में थी। बैंक में एक पुस्तक आयी जो लगभग 300–350 पेज की थी। उसमें जैन धर्म से सम्बन्धित लेखों के अतिरिक्त अन्य आलेख भी पठनीय थे।

चूँकि पूज्य क्षमासागर जी अच्छी पुस्तकें खूब पढ़ते थे, चाहे वे किसी भी लेखक की ही क्यों न हों। या यूँ कहूँ कि उन्हें स्तरीय पुस्तकें, आलेखों को पढ़ने का व्यसन था तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। मैंने बहुत गौर से, नजदीक से देखा है– वे अपने अमूल्य जीवन का एक क्षण भी जाया नहीं करते थे। वह पुस्तक मैंने उन्हें विशेष आग्रह के साथ दी – "आप जब समय हो, आराम से पढ़ लीजिएगा।" आश्चर्य तो तब हुआ जब दूसरे ही दिन उन्होंने वह पुस्तक वापस कर दी। मैंने उनसे कहा –"आप इसे रखें, जब पूर्ण हो जावे तो दे दीजिएगा। ऐसी कोई जल्दी नहीं है।" उन्होंने कहा – "मैंने इसे देख (पढ़) लिया है।" जब मैंने इस पुस्तक में से कुछ आलेखों पर चर्चा की तो मैं दंग रह गया। उन्होंने सारी बातों, तथ्यों का उल्लेख बड़ी सटीकता और प्रामाणिकता के साथ किया कि वह बात पुस्तक में कहाँ विद्यमान है। ऐसी प्रखर प्रज्ञा–स्मृति के धारक थे मेरे गुरुदेव। मुझे लगा कि किसी जमाने में अगर 'अकलंक' को एक बार में और 'निकलंक' को दो बार में याद हो जाता था इसमें क्या आश्चर्य! ऐसी एकाग्रता और प्रखरता, मेरे लिए तो एक अनोखा और सुखद एहसास था।

–राज कुमार जैन, बिलासपुर

सच्चे मुनि

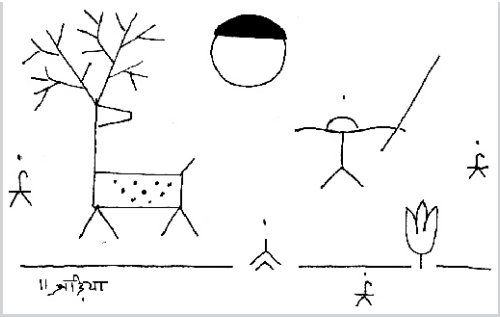

हम बड़े होते हैं, दुनिया समझने लगते हैं। बहुत सारी जीवन से जुड़ी बातें सीखतें हैं। पर जैसे–जैसे बड़े होते हैं कई सवालों के उत्तर हमें ठीक से नहीं मिलते हैं। धर्म और जीवन के बारे में, जैन सिद्धांत की वैज्ञानिकता, जीवन, मृत्यु, कर्म, वीतरागता, पाप, पुण्य, आत्मा और उनसे जुड़े सवाल– ये क्या हैं? क्यों हैं? किस लिये हैं? किसके लिये हैं? ऐसे अनगिनत सवालों के उत्तर हमें गुरूदेव क्षमासागरजी से प्राप्त हुए और हमारी दुविधा दूर हुई।

यह मेरा सौभाग्य था कि मैं महाराज के सान्निध्य में आया और महाराज ने मेरे आग्रह पर उनकी बातों–विचारों को website के माध्यम से सब तक पहुँचाने के लिये मुझे मौका दिया। जैसे–जैसे महाराज के करीब आये तो समझ में आया कि मुनि कैसे होते हैं? मुनि कोई आसमान से उतरे हुये अवतार नहीं होते हैं। वे तो हम लोगों में से ही असाधारण विचार धारा रखने वाले इन्सान होते हैं जो भगवान बनने का मार्ग चुनते हैं। सुनते है कि चौथे काल में मुनि बहुत कठिन तपस्या करते थे, करते होगें पर वे सब किताबी बातें हैं, हमें विश्वास है पर आँखों से नहीं देखा, हमने तो क्षमासागरजी महाराज की चर्या और भाव/विचार देखे, उनको देखने के बाद लगता है कि चौथे काल में मुनि वाकई कठिन तपस्या करते होंगे। महाराज की चर्या की जितनी तारीफ की जाये, उतनी कम है। कई बातें जो भूल ही नहीं सकते– उनके पीछी उठाने का तरीका, उनका चलने, उठने–बैठने, बोलने का तरीका, आहार का तरीका, अद्भुत आशीर्वाद, प्रवचन शैली इनमें कभी परिवर्तन नहीं आया। और ये बातें मन में ऐसी बसीं कि अगर समय अनुसार आँख बंद करके सोचें कि महाराज इस समय क्या कर रहे होंगे तो हमें एकदम जैसे महाराज के दर्शन हो जायें। हमने हमेशा महाराज को समाज, बच्चों को बेहतर बनाने के बारे में सोचते/कार्यरत देखा। महाराज ने खुद से लड़ना सिखाया अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिये। बहुत सारी बातें जो अक्सर याद आती हैं– वे हमेशा कहते थे कि धर्म आडम्बर नहीं पर भावों/विचारों की निर्मलता है। आप अच्छे विचार रखेंगे वो सर्वोपरि हैं, उसके बाद ही बाकी क्रियाओं का महत्त्व है। हमेशा दो बातों का ध्यान रखना चाहिये– एक मन्दिर में चावल अपने पैसे के चढ़ाओ और दूसरा तीर्थयात्रा अपने पैसों की करो, तभी फल मिलता है। क्या खायेंगे–पीयेंगे और कहाँ सर झुकायेंगे (वीतरागता)इस पर किसी दूसरे का जोर नहीं चलना चाहिये।

महाराज से जुड़ा किस्सा जिसे हम चमत्कार कहते हैं, बताना चाहूँगा। अक्टूबर 2006 की बात है, मेरे छोटे भाई की शादी के लिये आशीर्वाद लेने के लिये मैं, मेरी पत्नि के साथ महाराज के दर्शन के लिये जा रहा था। महाराज ग्वालियर के पास एक गाँव में विराजमान थे, जो कि मेन हाइवे से करीब 40 कि.मी. अन्दर था। सुनसान सिंगल ट्रेक सड़क पर हम चले जा रहे थे। अचानक मेरी नजर पेट्रोल इन्डिकेटर पर पड़ी, वो एकदम ई पर आ चुका था। कभी भी गाड़ी बन्द हो सकती थी, अभी भी महाराज के पास पहुँचने में 25 किमी. बाकी थे और हमें दर्शन करके वापिस भोपाल पहुँचना था। हम घबराये कि अब क्या होगा, पर सोचा कि महाराज के पास जा रहे हैं सब कुछ अच्छा होगा, महाराज का नाम लेकर चलते रहे, कि अचानक सुनसान रोड़ पर, सुनसान इलाके में एक छोटी सी झोपड़ी नजर आयी। मैंने एकदम गाड़ी रोकी और उसें आदमी से पूछा, भैया यहाँ पेट्रोल कहाँ मिलेगा, हम भौंचक्के रह गये जब उसने कहा भाईसाहब मेरे पास मिल जायेगा, उससे पेट्रोल लिया और महाराज से आर्शीवाद लेकर वापिस आये। यह हमारे लिये एक चमत्कार ही था कि जहाँ पर न चाय की दुकान न कोई आदमी दिख रहा हो, वहाँ एक झोपड़ी मिले और वो हमारी परेशानी दूर करे।

–शिशिर सेठी, जयपुर

कठिन समय में दृढ़ता की परीक्षा

मुनिश्री से जुड़ने का पहला अवसर 2004 यंग जैन अवार्ड अशोकनगर में मिला और मुनि श्री की बातें आगे के जीवन के लिए आधार शिला बन गईं –'हम जो भी करें, अच्छा करें; हम जो भी करें, पूरे मन से करें; और हम जो भी करें, पूरी विनय से करें क्योंकि हम ही नहीं हैं करने वाले, हमसे पहले भी बहुत से लोग हुए हैं और उन्होंने बहुत कुछ किया है। हमारे मन में उनके प्रति सम्मान होना चाहिए कि उन्होंने हमें पथ दिया।'

उसके बाद मुनिश्री के दर्शनों को अक्सर जाती थी क्योंकि बहुत कुछ था जो मुझे उनसे पा लेना था। समय निकलता रहा और मैं आगे की पढ़ाई के लिए 2011 में मुनि श्री से आशीर्वाद लेकर हैदराबाद आ गई। माहौल एकदम अलग था, अलग–अलग प्रांतों के लोग, भाषाएँ, खानपान, लाइफस्टाइल सब कुछ अलग और मेरे घर के संस्कार एकदम अलग! अधिकांश नॉनवेजीटेरियन लोग थे सो मैं उनके ग्रुप पार्टीज, ट्रिप, ज्वाइन नहीं करती थी, वे सब मुझे एकदम अलग समझते और मेरे लिए सामंजस्य करना कठिन हो गया! दो माह के बाद जब मैं मुनि श्री के पास वापस गई तो बस एक मूक संवाद था जिसमें शब्द नहीं थे बस आँसू बह रहे थे, उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था सो उन्होंने डायरी में कुछ शब्द लिखे 'कठिन समय में ही तो दृढ़ता की परीक्षा होती है, विकल्प रहित होकर अपना करना कर्म करो और सब कुछ नियति पर छोड़ दो।'

मैंने उनका आशीर्वाद लिया और वापस हैदराबाद आ गई। मैंने अपना ध्यान लोगों से हटाकर रचनात्मक कार्यों मे लगाना शुरू किया। मैंने Helping Hearts Group NIPER ज्वाइन किया जो orphan children और old age लोगों को सपोर्ट करता था और बाकि समय मैं मुनिश्री की बारह भावनाओं के प्रवचन सुनती थी जो मुझे आत्मबोध कराती थीं, मेरे अंदर पहले से ज्यादा दृढ़ता थी। अब मेरे साथ वाले लोगों के मन में एक सम्मान था मेरे विचारों के प्रति, मेरी श्रद्धा के प्रति और जैन धर्म के सिद्धांतों के प्रति! मुनिश्री की बातों ने मुझे हमेशा मार्गदर्शन दिया और आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी।

– अंजलि जैन, हैदराबाद

विधि मिल गई

छतरपुर चातुर्मास का समय था, दीपावली के बाद भाई–दोज के दिन मैं और मेरी बहन उपमा महाराज श्री के दर्शन के लिये पहुँचे। लगभग 10 बजे का समय हो रहा था और मुनिश्री आहार चर्या के लिये उठने वाले थे। हमनें भी नमोस्तु किया और शुद्ध वस्त्र पहन कर एक चौके में पड़गाहन के लिये खड़े हो गए। मुनिश्री आहार के लिये निकले पर विधि नहीं मिली और मुनिश्री ने दो चक्कर लगा लिये पर कहीं भी विधि नहीं मिली। सब लोग चिंतित और तरह–तरह की विधि बना कर मुनिश्री के पड़गाहन को आतुर थे और मैंने और उपमा ने सोचा की आज शायद हमारा पुण्य पड़गाहन का नहीं है तो हम मुनिश्री के पीछे–पीछे चल दिए इस भाव से की जहाँ भी पड़गाहन होगा वहीं आहार दे देंगे। चलते–चलते एक dead-end आया और मुनिश्री वहाँ से पलटे। अब उनके सामने मैं और उपमा ही थे और हम दोनों ने मुनिश्री का पड़गाहन कर लिया और फिर अरविन्द भैया (समाधिस्थ मुनिश्री सुमतिसागर जी महाराज जो उस समय मुनिश्री के साथ ब्रहम्चारी अवस्था में थे) की ओर देखा तो उन्होनें अपने पीछे आने का इशारा किया। उनके पीछे हम चले और हमारे पीछे मुनिश्री भी। महाराज जी के निरंतराय आहार हुए और आहार के बाद हम सभी उनके पास बैठे थे। सबने महाराज जी से पूछा की आपकी विधि क्या थी? तब महाराज जी बोले कि भाई–बहन की विधि थी। और कुछ दिन पहले किन्हीं बहन जी ने मुझे बोला था कि आपकी कोई विधि नहीं होती तो हमने सोचा की आज अपना पुण्य ही आजमा लेते हैं। आज ऐसी विधि लें जो थोड़ी मुश्किल हो सो भाई– बहन में संजय और उपमा और सिर्फ वे दोनों ही पड़गाहन करें ऐसी विधि ले ली । मुझे उम्मीद नहीं थी, मैं तो बस अपना चक्कर पूरा करके वापस लौटने का ही सोच रहा था पर पुण्य था तो कठिन विधि भी मिल गई। मुनिश्री के मुख से ये सब सुनकर हम नतमस्तक हो गए गुरू चरणों में। अपने व्रतों के प्रति इतनी सजगता मुनिश्री को अनूठा संत बनाती है।

–संजय जैन (सखी), जबलपुर

संस्कारों से बड़ा बनना

हम सभी के जीवन में परम पूज्य मुनि श्री क्षमासागर जी महाराज का एक विशिष्ट स्थान है। वो निश्चित ही हमारे प्रेरणा–पुंज थे। हमारे जीवन को दिशा देने में, उसे अच्छा बनाने में उनके व्यक्तित्व का, उनकी वाणी और उनकी लेखनी का योगदान है। यूँ तो जीवन में जो भी अच्छा है उसकी नींव, उसकी वजह मुनिश्री ही हैं। ऐसी ही कई यादों में से एक आप सबके साथ साझा कर रही हूँ । 2010 में मुनिश्री शाहपुर (म.प्र.) मे विराजमान थे। मुनिश्री का स्वास्थ कुछ नरम सा था परंतु उनकी चर्या में कोई परिवर्तन नहीं। दोपहर के स्वाध्याय के बाद मुनिश्री अपने कक्ष में गये और अस्वस्थ होने की वजह से सभी को बाहर से ही दर्शन हो रहे थे। मैंने भी दरवाजे से उन्हें नमन किया और बोला आपसे कुछ बात करना है तो उन्होंने शाम के प्रतिक्रमण के बाद का समय दिया। शाम को हम उनके पास पहुँचे, मेरे हाथ में मेरा graduation का मेडल था। मैंने वो उनके चरणों में रखा और बोला कि आपके आशीर्वाद से मुझे ये मिला है। तब सजल नेत्रों और अधर पर मुस्कान के साथ बहुत प्रसन्नचित्त मुद्रा में ढ़ेर सारा आशीष दिया और बोले कि अपन को ऐसे ही और अच्छा करना है, खूब पढ़ना है और बड़े बनना है। बड़े बनने के मायने धन पैसे से नहीं लेना बल्कि हमको अपने संस्कार और विचारों से बड़े बनना है। जब हमारे पास होने से किसी को छोटे होने का एहसास ना हो, जब हमारे अन्दर इतनी सरलता आ जाए, तब हम सही मायनों में बड़े बनेंगे। सबके लिए हमारे मन में मैत्री का भाव हो और हमसे किसी का अहित ना हो, हमें ऐसा विचार रखना चाहिए। उनके ये आशीर्वचन सुन कर एक बार फिर नतमस्तक हो गये हम! असीम वेदना होने पर भी हम बच्चों को आगे बढ़ने की प्रेरणा देना मुनिश्री के असीम वात्सल्य का ही तो परिचय देता है।

–निशि मोदी, सागर

तुम भी उनके जैसी शिष्या बनना

इंदौर के चौमासे में पहली बार मुनि श्री को सुना, उनके प्रवचनों में इतनी भीड़ होती कि खड़े रहने को भी जगह नहीं मिलती थी, परंतु इतनी शांति से सभी सुनते कि सुई के गिरने की भी आवाज आ जाए, खास कर के युवा लोग उनके प्रवचनों को सुनने आते थे। फिर कुछ सालों बाद जीवन का सबसे अनमोल खजाना मिला, "कर्म कैसे करें" प्रवचनों की CD, जीवन की इतनी गहरी बातों को मुनि श्री ने इतनी सरलता से समझाया है कि हर बात मन को छू लेती है। मैंने उन प्रवचनों को कई–कई बार सुना और हर बार कुछ नया सीखा । बहुत बार ऐसा हुआ कि कुछ गलत करने जा रही हो या मन को किसी की बात का बुरा लग रहा है तो अचानक महाराज श्री बात याद आ जाती और अपने आप सब ठीक हो जाता। महाराज श्री की आवाज में इतना सम्मोहन है कि यदि सिर्फ 10 मिनट भी उनकी आवाज सुन लो तो सारा तनाव, सब दुःख अपने आप दूर हो जाते हैं। सब कुछ शांत और अच्छा लगने लगता है। दूर हो कर भी महाराज श्री के प्रवचनों और उनकी लिखी किताबों ने सदैव मार्गदर्शन दिया।

उनके दर्शनों की अभिलाषा तो हमेशा मन में रहती थी, चार साल पहले उनके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महाराज श्री का स्वास्थ बहुत ठीक नहीं था, परंतु उन्होने लिख–लिख कर सभी बातें कीं। वो दिन मैं जीवन में कभी नहीं भूल सकती ! पहली बार महाराज श्री से बात कर मन इतना प्रफुल्लित हो गया कि लगा अब और कुछ नहीं चाहिए, जीवन सार्थक हो गया।

महाराज श्री ने पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? मैंने कहा कि निवेदिता, तो वे बोले ये तो स्वामी विवेकानन्द जी की शिष्या का नाम था। फिर ऐसा लगा की महाराज श्री कह रहे हों, तुम भी उनके जैसी शिष्या बनना!

महाराज श्री ने अपने हाथों से आशीष लिख कर अपनी एक किताब दी और यह जीवन का दूसरा कीमती खजाना मिला। वो किताब मेरे लेये बहुत ही अनमोल है और जब भी महाराज श्री से मिलने का बहुत मन होता उसे खोल कर देख लेती हूँ और लगता है उनका आशीष सदैव मेरे साथ है।

–निवेदिता जैन, बैंगलोर

छोटा सा प्रायश्चित

मैं अवार्डी तो नहीं हूँ पर मुनि श्री के सान्निध्य में जो अवार्ड मैंने पाया है, वह मेरे लिए अविस्मरणीय है। महाराज जी अक्सर कहा करते थे कि अगर बुरा कर्म उदय में हो तो अच्छी बातें भी हमें समझ में नहीं आती। शायद मेरे साथ भी ऐसा ही हो रहा था। बाजू में महाराज जी के अक्सर प्रवचन चलते थे पर मेरा ध्यान ही नहीं जाता था। एक दिन माताजी को आहार दिये और उन्होंने सिर्फ 10 मिनिट रोज जिनवाणी पढ़ने का नियम दिया और मैंने वो ग्रहण किया। बाद में मेरे रिश्तेदार के हाथों मुझे मुनि श्री की 'कर्म कैसे करें' की किताब माताजी ने मुझे भिजवाई और कहा 10 मिनिट के नियम में इसे पढ़ना। वह किताब ना केवल पढ़ने योग्य है अपितु अपने जीवन में शास्त्र की तरह काम करती है। धीरे–धीरे उसे अपने जीवन में उतारने के लिये कोशिश करने लगा तो बहुत बार मुझे अपनी पुरानी गलतियाँ अहसास में आईं। एक दिन यह निर्णय भी लिया कि महाराज जी से ही प्रायश्चित लूंगा। मैंने महाराज जी के निकट पहुँच कर सारा वृत्तान्त सुनाया और पूछा कि अब आप प्रायश्चित दें तो उन्होंने कहा कि रोज एक बार भक्तामर पढ़ लेना। मैंने कहा इतनी बड़ी–बड़ी गलतियों का प्रायश्चित सिर्फ इतना सा तो उन्होंने हँस के आशीर्वाद दे दिया। उस दिन समझ में आई वो महान गुरु कि परिभाषा जहाँ पर गुरु इतनी बड़ी गलतियों का छोटा सा प्रायश्चित देकर शिष्य को अपना लेते हैं। कई बार हम अपनी गलतियाँ या बड़े पापों को गुरु के समक्ष नहीं रख पाते क्योंकि हमें लगता है कि गुरु हमारे बारे में क्या सोचेंगे? पर मुनि श्री बिरले थे, वे क्षमास्वभावी और सच्चे गुरु थे। शिष्य को सुधारकर फिर अपने वात्सल्य में रख लेते थे। अगली बार जब दर्शन हुये थे तो अपने बाजू में बैठा कर कर कन्हैया लाल मिश्र की किताब उन्होंने मुझ से सुनी। बहुत याद आती है उनकी!

– आकाश जैन, अमेरिका

वात्सल्य और आत्मीयता की छाँव

सर्वप्रथम 1993 में महाराज श्री के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। इससे पहले किन्हीं भी मुनि–महाराज का इतना नजदीक से सानिध्य प्राप्त नहीं हुआ था। ना ही किन्हीं का इतना सामीप्य पाया था।

छतरपुर की ओर आते समय जब रास्ते में महाराज श्री से मिला, उनके दर्शन से आत्मीयता और वीतरागता की अनुभूति हुई। उनके वात्सल्य और आत्मीयता ने मेरे हृदय को स्पर्श किया, मन श्रद्धा और भक्ति से भरता गया और मेरा मन उनका हो गया। कुछ ऐसा प्रतीत हुआ जैसे किसी ने ममता भरा हाथ मेरे सिर पर रखा हो। मैं रात को वापिस लौट आया पर सुबह जैसे उनकी ओर खींच रही थी। माँ से मैने पहली बार कहा चौका लगाना है, महाराज जी आये हैं, और मैं उन्हें लेने चला गया। छतरपुर पहुँचने के बाद महाराज श्री मंदिर की वन्दना करने के बाद आहारचर्या के लिए निकले। शहर में चारों तरफ चौके लगे हुए थे। मैं भी श्रद्धाभाव से पड़गाहन करने के लिए खड़ा था। निर्ग्रंथ साधु, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, सधे–सजग कदमों से आगे बढ़ रहे, चारों तरफ से एक ही आवाज आ रही थी, नमोस्तु, नमोस्तु, आहार जल शुद्धहै, अचानक मैं स्तब्ध सा रह गया। महाराज जी मेरे सामने आकर खड़े हो गए। द्वार क्षेपण करके महाराज जी को श्रद्धा के साथ आहारचर्या करवाई और फिर चरण स्पर्श करते ही आँखों से अविरल धारा बहने लगी। उनका वात्सल्य और निर्दोष चर्या देखकर माँ की आँखों में भी आँसू आ गए, वो बोलीं आज मन में यही इच्छा थी कि पहली बार बेटा बहू दोनों साथ में आहार दें। धन्य भाग हमारे। महाराज श्री धीमे से बोले श्रावक की भक्ति खींच लाई और आगे बढ़ गए। मेरा मन गद्‌गद हो गया। उनकी आत्मीयता कितनी सघन थी जो आज भी हमें शीतलता दे रही है। उनसे दूर रहकर आज भी ऐसा लगता है जैसे उनके समीप हों और उनकी आत्मीयता की छाँव में ही बैठे हों।

–देवराज जैन, छतरपुर

The Real Devotion

I was lucky enough to get a chance to connect with Munishri at a very young age, since my parents were devotees of Munishri. Even though I was very young to understand dharma and karma, the style and content of his pravachans was so simple and mesmerizing that everyone could understand how to live our lives in a better way. I saw many youngsters getting attached to him and the change in all of our lives was very visible. When I was a kid, I used to be too excited to give aahar to munishri. I could hardly reach his anjuli, but he used to gently lower his hands to take aahar from kids like me. It used to be a very nervous moment, but he always looked at me and smiled so calmly that it felt like an achievement!

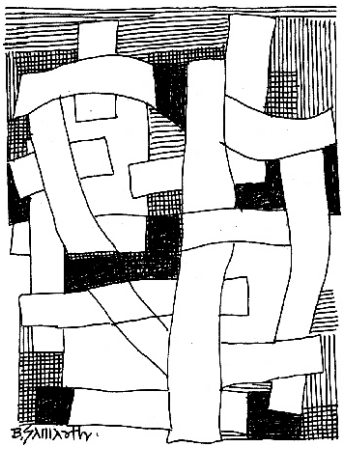

In March 2014, my sister asked me to come to Gadakota to take some pics of Munishri. It was a long break since I had darshan of munishri, so I went over the weekend. His health was not good, but I could see that his daily routine did not change even a bit. I spent almost all the time in the day in Munishri's room and was able to capture some memories which will remain with me for lifetime. While shravaks read aloud the shastras and other books, I was able to see Munishri's emotions flowing seamlessly within seconds. One moment he would be laughing his heart out, the other he will be in tears, the other he will spread his captivating smile. I wondered how sensitive can a human be even to triflest of things in life. I understood that probably, that's the quality that makes you a human!

I am not very fond of books or literature. But I have read all of munishri's poems a number of times, and even have referred those books to many of my friends. All his poems are so simple, yet I can feel them. His stories like "Arihant Bhaiya Ki Kahani" have made a lot of impact in my life.

I did not speak much with him. I preferred sitting quietly watching him, listening to him, with heart full of deep reverence for what he meant, what he taught, and what he idolized for me. There was just this feeling, which I cannot explain in my words, but can be explained in Munishri's words: हम पर कोई बंधन नहीं लगाया पर फिर भी हम उससे बांधकर रहना चाहते हैं यही तो हमारी श्रद्धा है।

- Anurag Jain, Pune

त्याग करते समय अहंकार या विषाद का भाव नहीं होना चाहिए। अत्यंत सहज–भाव से त्याग होना चाहिए। जैसे अपने घर को साफ– सुथरा और सुन्दर बनाए रखने के लिए हम कूड़ा–कचरा घर से बाहर सहज–भाव से फेंक आते हैं। कूड़ा–कचरा फेंकते वक्त हमारे मन में संक्लेश (विषाद) नहीं होता और न ही ऐसा अहंकार का भाव आता है कि मैंने इतना ढेर–सा कचरा त्याग दिया। मन में भाव आता भी है तो इतना ही की कचरा फेंकना जरूरी था सो मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा किया। **–मुनि क्षमासागर जी**

इंसानियत के इन्द्रधनुष

पूज्य मुनि क्षमासागर जी एक ऐसे संत थे जिनकी सरलता का कोई अंत नहीं था। जिनके अंतःकरण में वात्सल्य और स्नेह का झरना सतत् प्रवाहमान होता रहता था। जिनकी वाणी से जन–जन के कल्याण की भावना प्रगट होती थी। उन्होंने अपने उपदेशों के माध्यम से ही नहीं अपितु अपनी आदर्श चर्या के द्वारा सभी को सफलतापूर्वक अच्छा जीवन जीने का पाठ पढ़ाया। मुनि श्री करूणा, दया, प्रेम, भाई–चारे, सहयोग एवं पूर्ण विश्व बन्धुत्व के गुण सूत्रों के आगर थे। वे तो साक्षात संवर–निर्जरा की प्रतिमूर्ति थे। मुनिश्री आध्यात्मिक आकाश में इंसानियत के इन्द्रधनुष थे। सौहार्द्र के सितार पर सद्भाव के संगीतज्ञ थे। विपत्ति में धीरज और उन्नति में समभाव के गुणों को हमारे परिवार ने उन्हीं से प्राप्त किया।

सर्वप्रथम मुनिश्री के प्रवचन सुनने का सौभाग्य 10–11 अक्टूबर 1993 को हमें छतरपुर में प्राप्त हुआ। उस समय मैं अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, भोपाल के पद पर पदस्थ थी। उनके शब्द तीर की भाँति मेरे अंतर्मन में प्रवेश कर गए। प्रथम दर्शन में ही मैं उनकी भक्त बन गई। मुनिश्री हमेशा ''जीवन को अच्छा कैसे बनाएँ, इस पर आज फिर विचार करेंगे'' इस वाक्य से प्रवचन की शुरूआत करते थे। मुझे याद है कि मेरे पति सुरेश जी के गाल ब्लेडर के ऑपरेशन के तुरंत बाद ही उन्हें मुनिश्री के सानिध्य में होने वाले कार्यक्रम में झाँसी में जाने का निमंत्रण मिला। चिकित्सकों की सलाह के अनुरूप झाँसी यात्रा संभव नहीं हो पा रही थी, तब मुनिश्री ने प्रेरणा से भरपूर संदेश भिजवाया कि 'अभी आपके पास अस्वस्थ रहने का समय नही है, बहुत कार्य करना है।' इस बात ने हमें बहुत ऊर्जा से भर दिया। हम झाँसी गये और चार दिनों तक रुककर सभी कार्यक्रमों में शामिल हुए। वहाँ से स्वस्थ ही लौटे।

उनके प्रवचन सुनकर मैं उनके प्रति अटूट श्रद्धा से भर जाती थी। मुनिश्री छात्र–छात्राओं के हृदयों में भीतर तक समा गये। इसका प्रमाण मैंने उनके महाप्रयाण के दिन स्वयं देखा जब अनेक विद्यार्थी स्कूल ड्रेस में ही अपने बस्तों सहित उन्हें नमन करने समाधि स्थल पर एकत्रित हो गए।

मुनि श्री के भोपाल चातुर्मास के समय मेरा बड़ा पुत्र विकास कनाडा से आया हुआ था। वह अपनी पत्नि वीनू एवं दोनों बेटियों – विधि और विदुषी के साथ महाराज श्री के दर्शन करने पहुँचा। हम लोग भी साथ थे। मुनिश्री ने उसे समझाया कि ''कहीं भी रहो संस्कारवान रहना। अपनी सामर्थ्य के अनुरूप दूसरों की सहायता करना।'' मुझे गर्व है कि मेरा पुत्र विकास और उसका पूरा परिवार उनके द्वारा दी गई सीख का सदैव पालन करने के लिए कटिबद्ध रहता है।

– श्रीमती विमला जैन, भोपाल

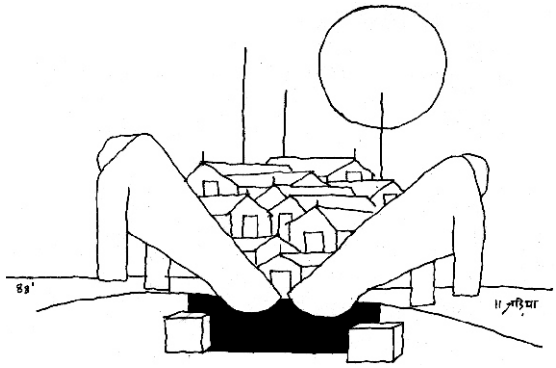

नहीं लौट पाया

परम पूज्य मुनि श्री क्षमासागर जी महाराज, एक ऐसी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे कि जिनके बारे में जितना गुणगान किया जाए उतना कम है,उन महान उपसर्ग विजेता गुरुवर के दर्शन प्रथम बार मुझे 2001 शिवपुरी चातुर्मास के दौरान हुए, परन्तु मेरा दुर्भाग्य कि मैं उस दौरान मुनि श्री से ज्यादा जुड़ नहीं पाया। चातुर्मास के बाद जब मैंने सुना कि उनका विहार ग्वालियर की और हो रहा है, तब मन इतना विचलित हुआ कि वो आज हमें छोड़कर जा रहे हैं, विहार के समय जब मैंने मेरे ऑफिस के सामने से मुनि श्री की आरती की तो मुनि श्री के सामने जलते उस छोटे से दीप के प्रकाश में मेरा जीवन भी कुछ इस तरह प्रकाशित हुआ कि मेरे जीवन की दिशा ही बदल गयी, वहीं से मैं भी उनके साथ चल दिया, शिवपुरी से 8 km पर रात्रि विश्राम हुआ और अगली सुबह जब ५.३० बजे विहार होना था तो मैं सबसे पहले पहुँच गया, महाराज जी को नमोस्तु निवेदित किया तो उन्होंने पूछा – आप कहाँ से हो?मैंने शिवपुरी कहा तो वे बोले अरे चार महीने में तो आप कभी दिखे ही नहीं, मैंने कहा वो मेरा दुर्भाग्य था। फिर तो मैं महाराज जी के साथ चलता गया और उनसे जुड़ता गया।

ग्वालियर प्रवेश के बाद जब हम लोगों को लौटना था तो मन बहुत व्यथित हो गया पर लौटना तो था,उस समय गुरुवर के चरणों में सिर रखकर जो आँसुओं की धारा बही तो लगा जैसे पूरे जीवन का दर्द, कषाय, उलझनें, व्यथा, तनाव सब कुछ बह गया, और एक नया राजेश मैंने अपने अन्दर महसूस किया। उस दिन मैं शिवपुरी तो वापस लौट आया पर मेरा मन कभी वहाँ से नहीं लौट पाया। इसके बाद तो ग्वालियर से आगरा, महावीरजी, जयपुर, किशनगढ़ तक विहारों में साथ चलने का सौभाग्य मिला। महावीरजी में आहार के बाद प्रश्नमंच के समय भरी सभा में उन्होंने कहा कि आज राजेश जी भजन सुनायेंगे, उस दिन पहली बार मैंने किसी सभा में गाया और वो भजन "तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊ मैं, सुनता मेरी कौन किसको सुनाऊ मैं।" महाराज जी को बहुत पसंद आया और तभी से मेरा भजन गाना शुरू हो गया और ये भजन कई बार चातुर्मास में गाने का मौका मुझे गुरुवर ने दिया। उन्होंने जो प्यार और करुणा हम पर लुटाई उसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता,वास्तव में वो हमारे सच्चे गुरु तो बन गए पर हम उनके सच्चे शिष्य नहीं बन पाए,उनकी कठिन साधना ने जिस तरह उँचाइयों को छुआ है,उसके लिए यही कहना चाहूँगा कि –

"उँचाइयों का सत्य केवल जानते बढ़ते चरण,
हर शिखर बौना हुआ है सीढियां चढ़ने के बाद।

– राजेश जैन, शिवपुरी

- अपने को त्याग करते समय प्रत्युपकार की कामना नहीं करनी चाहिए। ऐसा भाव नहीं आना चाहिए कि मैं इतना त्याग कर रहा हूँ, मुझे कुछ मिलेगा या नहीं। सोचो, त्याग करने से जो निराकुलता मन में आयी, जो आत्म–सन्तोष और आनंद मिला वही तो उसकी उपलब्धि है। त्याग करने से मुझे यश–ख्याति मिले, मेरा नाम हो, मेरी बढ़ाई हो, मुझे मान–सम्मान मिले, ऐसी आकांक्षा नहीं रखनी चाहिए। त्याग का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए।
- अच्छी भावना से किया गया एक कर्म अनंत फल देता हैं, बुरी भावना से किया गया वही अच्छा कर्म शून्य फल देता हैं।

– मुनि क्षमासागरजी

मेरे अस्तित्व की पहचान

मेरे अस्तित्व की पहचान करवाने वाले, मुझे मोक्ष मार्ग का द्वार बताने वाले मुनिवर श्री क्षमा सागर जी ही थे। जैन कुल में पैदा होने से महावीर भगवान का नाम तो मैं बचपन से सुनती थी पर उनके अस्तित्व और उनके वचनों पर श्रद्धा दिलाने वाले क्षमासागर महाराज ही थे। पहली बार जब झाँसी के चातुर्मास में उनके दर्शन हुए और उनके ओम का उच्चारण सुना तो लगा जैसे महावीर भगवान स्वयं ही समवशरण में अशोक वृक्ष के नीचे बैठे हैं और उनकी दिव्यध्वनि खिर रही हो। उनका 1 मिनट लम्बा ओम का उच्चारण और वह 1 मिनट जैसे थम गया था पूरा करगुवां जी, हजारों यात्री, चिड़िया और सब पक्षी पेड़ पौधे और मैं सब स्तब्ध खड़े सुनते रहे। शायद मेरे मन में उनके प्रति शिष्यत्व का बीज तो उन क्षणों मैं ही पड़ गया था।

सालों बीत जाने के बाद जब कैलिफोर्निया में मुझे उनके कर्म सिद्धांत प्रवचनों को casatte से cd में convert करने का अवसर मिला तो उनके प्रवचन मेरे हृदय को छू गए। उनकी प्यारी–प्यारी कहानियों के द्वारा कर्म सिद्धांत का रहस्य बता देने वाली करुणापूर्ण वाणी ने कब धीरे–धीरे मेरे जीवन को अच्छा बनाना शुरू कर दिया पता ही नहीं चला। मैंने वो प्रवचन 10–15–20 बार सुने। कभी–कभी तो मन उदास होता और प्रवचन सुनो तो लगता था कि वह मेरे सब प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं। कैलिफोर्निया के JCNC के मंदिर में cd को बहुत लोगों ने सुना और अपने जीवन को अच्छा बनाने की शुरुआत की।

मुनिश्री से जब मैं मिली तब उनके स्वर और उनकी आत्मा की गहरायी उनकी आँखों से दिखाई देती थी। हमनें मुनिश्री के चरणों में कुछ व्रत लिए और अपने बच्चों को भी मद्य–माँस–मधु के आजीवन त्याग के नियम दिलाये। जब जाने लगे तो मुनिश्री ने सर हिला के कहा – जा रही हो, कब आओगी? और मैं उस प्रश्न का उत्तर अपने स्वर में नहीं दे पायी और रो पड़ी और मुनिश्री की भी आँखें भर आईं। वहाँ से लौटते समय दुःख के साथ खुशी थी कि जैसे उनके आशीर्वाद

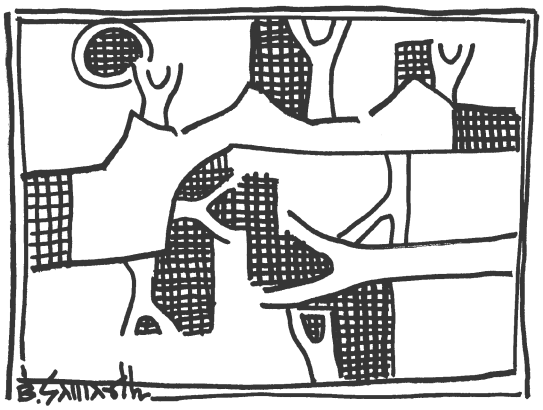

से हम भर से गए हैं। वह स्नेह जो उनसे मिला वह अतुलनीय है और किसी भी भाषा में लिखा नहीं जा सकता, वह तो सिर्फ महसूस किया जा सकता है। मुनिश्री को जानकर मैं अपने को जान पायी, अपने स्वरूप को जान पायी। मुनिश्री जैसा कोई इस धरती पर था तो भगवान महावीर भी जरूर होंगे। मुनिश्री ने जैसे करुणा पूर्ण वाणी से तत्त्व ज्ञान के रहस्यों को बता दिया तो भगवान महावीर की दिव्यध्वनि भी खिरी होगी। जैसे मुनिश्री के सानिध्य जैसे में शांति और सुख महसूस होता था वैसे ही भगवान महावीर के समवशरण में जानवर भी अपने जन्म के बैर को भूल के एक हो जाते होंगे। मुनिश्री ने अपने होने से मुझे अपने धर्म परे श्रद्धान कराया है। मुनिश्री आपने जैसे इस जन्म में मुझे कल्याण के मार्ग परे लगाया है, वैसे ही मुझे भव सागर से भी पार उतारना।

–रुचि जैन, California USA

यदि एक बार हमारे जीवन में सच्चाई आ जाती है तो जरूरी नहीं कि वह हमेशा बनी रहे, इसके लिए उसकी साज–सँभाल करना जरूरी है। जो व्यक्ति अपने आप पर नियंत्रण नहीं रखता है, अपना जीवन लापरवाही से जीता है तो उसके हाथ से सच्चाई को फिसलने में देर नहीं लगती। **–मुनि क्षमासागर जी**

विनयांजली

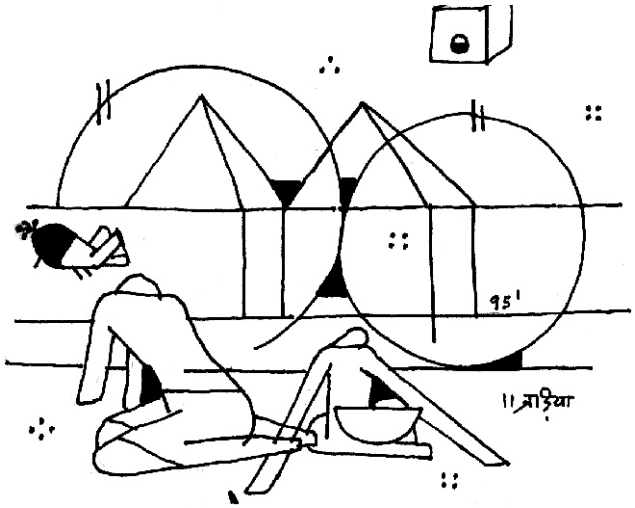

विज्ञान से धर्म को जोड़ा

आज की युवा पीढ़ी प्रतियोगिता के कारण इतनी व्यस्त होती जा रही है कि वह अपनी जीवन की बहुमूल्यता को भी भूलती जा रही है। दौड़ पैसे के लिए शुरू होती है और पैसे पर ही खत्म हो जाती है, ऐसे में धर्म करने का समय किस के पास है? मैं भी कुछ ऐसा ही था और हो सकता है। आज भी ऐसा ही होता, लेकिन मेरा और मेरे जैसे कई भाई–बहिनों का सौभाग्य था जो मुनि श्री क्षमासागर जी जैसे गुरु का सानिध्य मिला.. उनकी परम ओजस्वी वाणी मिली जो जिससे कठिन लगने वाला धर्म भी सहजता से जीवन में आने लगा। मुनिश्री का जीवन हर एक मोक्षमार्गी की लिए प्रेरणा का स्रोत है क्योंकि जीवन की विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने मुनिधर्म को नहीं छोड़ा। मुनिश्री का नाम ही सिर्फ क्षमासागर न था बल्कि उनका पूरा जीवन क्षमा मूर्ति का साक्षात् उदाहरण रहा। कोई भी गंभीर विषय हो जिसकी व्याख्या भी गंभीर हो लेकिन मुनिश्री की वाणी में इतनी सरलता थी कि हर आयु वर्ग उसे ठीक से समझ जाता था। क्षमासागर जी महामुनिराज का बड़ा योगदान नई युवा पीढ़ी के जीवन को धार्मिक संस्कारों के साथ गुणात्मक शिक्षा देने में रहा है। वर्तमान समय में तेजी से बदलता माहौल, आधुनिकता की चकाचौंध एवं विज्ञान और धर्म में से एक को चुनने का संघर्ष, हर एक युवक को असमंजस में डाल देता है, लेकिन मुनिश्री की असीम कृपा थी जो उन्होंने विज्ञान से धर्म को जोड़ दिया। मैंने अपनी आँखों से देखा है, साधना के अंतिम कई वर्षों में मुनि श्री का स्वास्थ्य काफी खराब रहा फिर भी मुनि श्री ने हमेशा छोटे बच्चों को प्रोत्साहित किया, वह छोटे बच्चों को पेंसिल दिया करते थे जिसे बच्चे अपने गुरु का आशीर्वाद समझकर धन्य–भाग्य हो जाते थे। ऐसे गुरु बिरले ही होते हैं।

मुनिश्री कहा करते थे कि प्रवचन याद रहे या न रहे लेकिन कहानी अवश्य याद रहेगी इसलिए विषय को ठीक से समझाने के लिए कहानी हमेशा सुनाते थे। उनकी हर कहानी सटीक और मन को छूने वाली होती थी। मुनिश्री अपने गुरु आचार्य महाराज १०८ श्री विद्यासागर जी के प्रति हमेशा समर्पित थे, जिसे वह अक्सर प्रवचन के दौरान कृतज्ञ भाव से स्वीकारते थे। उनका हर एक प्रवचन एवं कृति बहुमूल्य निधि है, जिसे हमें अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए संजोकर रखना है।

–अशोक जैन, बैंगलोर

वाणी में सरस्वती

पूज्य क्षमासागर जी का जन्म सागर की पुण्य धरा पर हुआ। सागर पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी की कर्मभूमि थी। पूज्य क्षमासागर जी गृहस्थ जीवन के प्रारम्भ से ही वर्णी जी से अत्यधिक प्रभावित थे एवं उनको आदर्श मानकर ही वे आगे बढ़े। 'पूत के लक्षण पालने में दिखाई देते हैं', इस लोकोक्ति के अनुसार उन्होंने विद्यार्थी एवं गृहस्थ जीवन विवेकवान एवं चारित्रवान श्रावक के रूप में ही बिताया। आचार्य श्री ने मुनि श्री में युक्ति एवं आगम का अद्भुत संयोग देखकर उन्हें एकल विहार करने की अनुमति दी। मुनिश्री ने भी स्वयं को अपने गुरू के प्रति भक्ति का अनुपम एवं अनुकरणीय उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया। एक प्रवचन में मुनि श्री ने कहा है कि सतना–मध्यप्रदेश से एक विद्वान प्रश्नों की बड़ी फेरिस्त लेकर आये। मुनि श्री आगत विद्वान को उनके प्रश्नों का उत्तर प्रमाण सहित दे रहे थे। इसी प्रश्नोत्तर की श्रृंखला में आगत विद्वान ने मुनिवर की प्रशंसा में कहा आपकी जिह्वा पर साक्षात् सरस्वती विराजती है, कितना गहन अध्ययन है आपका आदि–आदि। मुनि श्री प्रवचन में कहते हैं कि 'उन विद्वान की बात सुनकर एक क्षण को लगा कि सही है, मैं प्रश्नों का तर्कयुक्त उत्तर दे रहा हूँ। ऐसा विचार आते ही अगले प्रश्न का उत्तर देने में कुछ सेकेण्ड लग गये, फिर लगा कि मैं यह क्या सोच रहा हूँ, यह सब तो आचार्य श्री की कृपा है। ऐसा विचार आते ही वे पुनः पूर्ववत उत्तर देने लगा।' ऐसी गुरूभक्ति अन्यत्र दुर्लभ है।

गर्भपात समाज में बड़ी विकृत समस्या है। गर्भपात न करवाया जाये इस विषय पर बहुत प्रवचन हुए। शासन के भी इस विषय में सख्त नियम हैं परन्तु ज्यों–ज्यों दवा की त्यों–त्यों मर्ज बढ़ता गया। पूज्य मुनि श्री ने समझाया कि देखो किसी जीव ने सारी दुर्लभताएँ निगोदिया से लेकर चतुरेन्द्रिय तक पार कर लीं, फिर वह जीव पंचेन्द्रिय जैसी दुर्लभ पर्याय को प्राप्त हो गया और उसे मार डाला जाये कितना बड़ा अनर्थ है, पाप है। ऐसी हृदयस्पर्शी वाणी को सुनकर हजारों दम्पत्तियों ने गर्भपात न करवाने का निर्णय लिया। इसी अवसर पर सैकड़ों चिकित्सकों ने भी निर्णय लिया कि वे इस घृणित एवं पापमय कार्य में सहयोगी नहीं बनेंगें। आज इन निर्णयों के सुखद परिणाम दिख रहे हैं।

मुनिश्री में आचार्य श्री के प्रति भक्ति, विषय–वस्तु, वाणी एवं अभिव्यक्ति का अद्भुत संयोग था। उन्होंने जैनधर्म के मर्म को सरलतम एवं जन सामान्य को समझ में आने वाली भाषा में समझाया। मुनिश्री कहा करते थे कि सिद्धांत तो आप लोगों को याद नहीं रहेगा परन्तु कहानी याद रहेगी, कहानी के माध्यम से सिद्धांत को समझना। आपका प्रवचन सदैव– 'आज एक दिन और हमें अपना जीवन ऊँचा उठाने को मिला है' इस वाक्य से प्रायः शुरू होता था। महाराज जी जब कहते थे, 'न मैं किसी से बड़ा हूँ और न कोई मुझसे छोटा है।' ऐसी उद्देश्यपूर्ण और विनयपूर्ण मधुर वाणी से प्रभावित होकर अपार जन समूह मुनिवर के पीछे चल पड़ा। दुखद बात यह रही कि मुनिवर की वाणी सुनने के लिए लालायित अपार जन समूह विगत 10 वर्षों से उनकी वाणी नहीं सुन पाया।

–गुलाब चन्द्र सिंघई, भोपाल

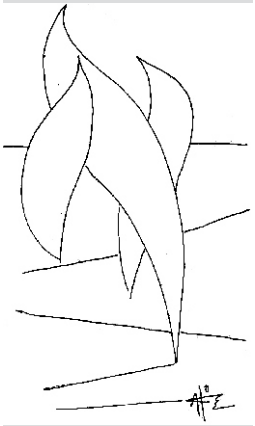

हे गुरुवर

हे गुरुवर क्षमासागर
आँखों में तो बस जाओ
नस नस में समा कर के
धर्म राह दिखा जाओ।।

मैं करूँ नित्य पूजा
श्रावक तो बन पाऊं
श्रावक बनकर गुरु के
चरणों में जगह पाऊं।।

मैं धारूँ धैर्य तुमसा
तुमसी समता पाऊं
कर्मों का सामना भी
तुमसा ही कर पाऊं।।

इस भव में नहीं संभव
तुमसा बनना गुरुवर
अगले भव में तो गुरुवर
अपना सा बना लेना।।

–चौधरी सुधीर,
गढ़ाकोटा

अनुपम पुरुषार्थ एवं समर्पण

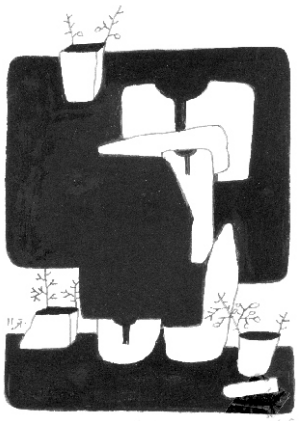

पुरुषार्थ और निश्छल व्यक्तित्व के धनी क्षमा सागर जी ज्ञान, ध्यान और तप की जीवंत प्रतिमा थे। क्षमासागर जी श्रेष्ठ संत, मनीषी, कवि, चिंतक, प्रभावी प्रवचनकार, मौलिक साहित्य सृष्टा, वैज्ञानिक एवं अन्वेषक थे। उन्होंने अहिंसा, शाँति और नैतिकता के स्वरों को नई ऊर्जा एवं तेजस्विता प्रदान की है। शिशु वीरेन्द्र से लेकर क्षुल्लक/ऐलक/मुनि क्षमासागर तक की यात्रा अनुपम पुरुषार्थ एवं समग्र समर्पण की कहानी है। जैन अध्ययन के पारंगत विद्वान क्षमासागर को जैन धर्म और अध्यात्म प्रभावी विरासत के रूप में मिला।

मुनि क्षमासागर जी के प्रखर नेतृत्व में इक्कीसवीं सदी में मानवीय चेतना ने बहुत ऊँचाई प्राप्त की है। इक्कीसवीं सदी में विज्ञान और टेक्नालॉजी के साथ जी रहे आधुनिक व्यक्ति को अध्यात्म के पथ पर आगे बढ़ाने के लिए ऐसे संत ही सक्षम हैं। उन्होंने कंप्यूटर और इन्टरनेट के साथ जीने वाले मनुष्य को उसके चतुर्मुखी विकास के लिए सहज, सरल, प्रभावी और वैज्ञानिक ढंग से आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान की। नई पीढ़ी उनके व्यक्तित्व के मधुर आकर्षण तथा उनकी गुणवत्तापूर्ण, शक्तिशाली एवं वैज्ञानिक प्रवचन विधि से अत्यधिक प्रभावित एवं अभिभूत है। वे पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी के शैक्षिक अवदान, पूज्य विद्यासागर जी के आध्यात्मिक अवदान तथा पूज्य विद्यानन्द जी के सामाजिक अवदान के पावन संगम स्थल थे। उनकी वीतरागता – सहजता, सरलता और सहिष्णुता से अलंकृत है। ध्यान, स्वाध्याय और सृजन उनके जीवन के अभिन्न अंग थे। संवर और निर्जरा से ओतप्रोत उनका व्यवहार श्रमण संस्कृति के आदर्श व्यक्तित्व का प्रतीक था।

. क्षमासागर जी की प्रज्ञा जागृत थी और दृष्टि समन्वय शील। अपने सतत् अध्ययन, मनन एवं चिंतन के प्रभावी निष्कर्षों से क्षमासागर जी ने जैन धर्म की मौलिकता को सुरक्षित रखा और उसके परिष्कृत एवं वैज्ञानिक पक्षों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने जैन संस्कृति के विविध आयामों को विश्व के समक्ष प्रमाण व तर्क सहित रखा। उनके लेखन ने जो ऊँचाई पायी है वह एक मिसाल है। सरल, सहज और मन को छू जाने वाले उनके प्रवचन, साहित्य और कवितायें अद्वितीय हैं। वे जैन धर्म की प्रस्तुति आध्यात्मिक परिपक्वता, दूरदर्शिता, विनम्रता और सापेक्षता के साथ करते थे। आग्रह के अभाव में उनकी प्रस्तुति स्वाभाविक और विरोधाभास से पूर्णतः परे थी। उनकी प्रभावी, सापेक्ष, और विनम्र प्रस्तुति भिन्न वैचारिक पृष्ठभूमि के श्रोता को भी अपने विचार परिवर्तन हेतु सफलतापूर्वक प्रेरित करती है। उनके विचार, उनकी शिक्षाएं, उनका स्मरण हमारे विचारों को ऊर्जा एवं सौन्दर्य प्रदान करते हैं। उनसे हमें साधना पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा मिलती है और हमारे व्यक्तित्व में प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है।

जैन धर्म उनके जीवन का मूलमंत्र था। इस मूल मंत्र का प्रतिपादन और अनुसरण करते हुए वे अपने गुरु द्वारा निर्दिष्ट पथ पर आगे बढ़ते रहे। उन्होंने धर्म को अपने व्यक्तित्व में धारण किया और अध्यात्म के क्षेत्र में उन्होंने अभूतपूर्व सफलता एवं शीर्षस्थान प्राप्त किया है। अकलुषित आचार, अप्रतिम करुणा और संवेदनशीलता से परिपूर्ण उनके व्यक्तित्व के स्मरण मात्र से ही हमें अभ्युदय एवं निःश्रेयस की प्राप्ति होती है। मुनि क्षमासागर जी ने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि भगवान न सही पर एक बेहतर इंसान बनने का प्रयास हम सभी को करना चाहिए। उनका स्वयं का जीवन संवेदना, करुणा, परोपकार की प्रतिमूर्त्ति था, जो सभी के लिए प्रेरणा स्रोत रहेगा। ऐसे महामुनि के चरणों में कोटि–कोटि नमन।

–सुरेश जैन (आई.ए.एस.), भोपाल

कबीर सी सीधी सादी शैली

पूज्य क्षमासागरजी के संबंध में अपने भाव शिशुओं को शब्दों की पोशाक पहना पाने की कोशिश कैसे सफल हो? दिगम्बर मुनिराज के विषय में पोशाकी शब्द तो कुछ भी कह सकने में असमर्थ हैं। भावों की मुद्राएं तो होती हैं, पर उनके शब्द नहीं होते। पूज्य मुनिश्री के पावन चरणों में मैं अपनी श्रद्धा शब्दों के माध्यम से नहीं, अपितु भावों के जल चंदन से ही समर्पित करता रहता हूँ। मैंने जब जब भी उनके दर्शन किए अतृप्त ही लौटा हूँ और फिर जहाज के पंछी की तरह उनके दर्शनों को पहुँचता रहता था। उन्हें सुनना और सुनते रहना तो जैसे स्वयं को मंत्र कीलित करने की घड़ियों को आमंत्रण देना होता है। मैं जब भी उनके प्रवचन सुनता हूँ, तब प्राणवीणा के तार झंकृत होकर जिस आनंदमय संगीत की रचना करते हैं, उससे अतीन्द्रिय सुख सा अनुभव होता है। उनके प्रवचन पांडित्य से बोझिल नहीं होते, वे तो कबीर की सीधी सादी शैली में अंतर के पट खोलते जाते हैं। उनके प्रवचनों में प्रामाणिकता, व्यवाहरिकता और प्रायोगिकता होती है। भाषा में शब्द कम और अर्थ अधिक होते हैं। छोटी–छोटी रोचक कथाओं के माध्यम से भाषा की लक्षणा और व्यंजना शक्तियों के सहारे वे ऐसी बातें करते थे कि हर श्रोता अपनी गांठ में बांधकर ले जाने के लिए उत्सुक रहता था। वे सीख देते थे जीवन विज्ञान की, धर्म को वैज्ञानिकता के सहारे जीना सिखाते थे। हमारा आचरण दिखावटीपन से अपमिश्रित न हो। जैसे हम हैं, वैसे ही हमें होना चाहिए। वैसा दिखने या बनने के लिए हम कोई मुखौटा न लगा लें। प्लास्टिक के फूलों को बिना पानी भरे हजारे से सींचने का सा अभिनय हमें मुक्ति के द्वार की ओर नहीं ले जाएगा। ऐसा अभिनय तो हमारे संसार भ्रमण की श्रृंखला को और अधिक मजबूत करेगा। उनके प्रवचन तो संस्कारों का हितकारी प्रसाद ही निरन्तर बांटते रहते हैं। उनकी पावन प्रेरणा से आयोजित की गई वैज्ञानिक गोष्ठियों ने जहाँ एक ओर जैन दर्शन की मान्यताओं की प्रामाणिकता उजागर की है वहीं दूसरी ओर यह भी स्थापित किया है कि जैन आचार्यों द्वारा अनुभूत सत्य तथ्य के रूप में स्वयं सिद्ध है।

सरल होना बहुत कठिन है और कठिन होना बहुत सरल। जो अत्यन्त कठिन है उसी सरलता को पूज्यश्री ने अपनी सतत् साधना से अंतर में अनावृत्त किया है कि –

'जहाँ तरलता थी मैं डूबता चला गया,
जहां सरलता थी मैं झुकता चला गया,
संवेदनाओं ने मुझे जहां से छुआ,
मैं वहीं से पिघलता चला गया।'

पूज्य मुनिश्री जैसे संतों के दर्शन करने से, उनकी आत्मानुभूति से उपजे चिंतन से स्वयं को संवारने, सहेजने के अवसर जब जब मिलते थे, मैं धन्यता से मंडित होता था। वे हमेशा–हमेशा हमारी स्मृति में रहेंगे। वे हैं और हमेशा हमारे साथ रहेंगे। उनके चरणों में विनयांजलि समर्पित करता हूँ और यही मंगल भावना करता हूँ कि पूज्य मुनिवर क्षमासागरजी के प्रति हमारी श्रद्धा उनके होने के एहसास के साथ प्रतिपल वृद्धिगत हो।

– पूरनचंद जैन, गुना

आत्म–कल्याण की प्रेरणा

– सी.बी.जैन, नवी मुम्बई

मुनि श्री क्षमासागर जी का प्रखर व्यक्तित्व, उनके आसपास पॉजिटिव ऊर्जा का आभामंडल, जिन धर्म–ज्ञान का अथाह सागर, उनकी स्नेहयुक्त मधुर वाणी, उनके सरल भाषा में सारगर्भित प्रवचनों की श्रृंखला एवं उनके द्वारा रचित मार्मिक कविताओं का संकलन, ये सभी संस्मरण, हम सभी साधर्मी जन के लिये प्रेरणास्रोत बनकर हमारे जीवन में मार्गदर्शक के रूप में आत्मकल्याण का माध्यम बने रहेंगे। एक दशक से मुनि श्री के मुनि जीवन में आये हुये उपसर्ग के बावजूद अन्तिम सांस तक मुनि श्री के द्वारा मुनि धर्म का पूर्णरूप से पालन, अवश्य ही उनके अगले भव में मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। उनके सान्निध्य में बीते हुये कुछ पल इतने जीवंत हैं कि उनका चिरस्मरणीय स्वरूप हर पल आँखों के सामने रहता है। उनकी उपसर्ग विजय की क्षमता अद्‌भुत थी।

जैन धर्म के प्रभावक संत

मुनिश्री के प्रवचन सर्वग्राही होते थे। जैन धर्म के गूढ़ सिद्धांतों को वे बिना किसी की आलोचना के इतनी सरल भाषा में प्रस्तुत करते थे कि प्रत्येक व्यक्ति उन्हें आसानी से ग्रहण कर लेता था। आपकी प्रवचन शैली इतनी विशिष्ट थी कि जो भी एक बार सुन लेता था, वह उनसे प्रभावित हुए बगैर रह ही नहीं सकता था। अपने प्रवचनों में वे प्रायः यह कहा करते थे कि हम सभी को अपने जीवन को और बेहतर बनाने का निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए। उस दिशा में वे स्वयं भी प्रयत्नशील रहे तथा दूसरों को भी इस कार्य के लिए प्रोत्साहित करते रहे। आचार्य श्री के सान्निध्य में मुनिश्री क्षमासागर जी ने अनेक जैन ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। तत्पश्चात् गुरु की आज्ञानुसार आपने अनेक स्थानों पर भ्रमण किया और जैन धर्म की प्रभावना की। गुरु को समर्पित उनके जीवन पर आधारित मुनिश्री की कृति "आत्मान्वेषी" उनकी गुरु भक्ति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। मुनिश्री ने माँ को आधार बनाकर आचार्य श्री के जीवन को समर्पित भाव से प्रस्तुत किया है। जो भी मुनिश्री से मिलने जाता था तो आप प्रायः उन्हें प्रेरित करते थे कि आचार्य श्री के दर्शन को जायें। मैं जब भी उनसे मिला तब उनका एक प्रश्न यह अवश्य होता था कि क्या मैं उनके दर्शन करके आया हूँ। और जब मैं बताता कि मैं उनके दर्शन करके आया हूँ, तब बालकवत् उनका मन प्रसन्न और रोमांचित हो उठता था। जैन धर्म की गूढ़ बातों को कविता के माध्यम से प्रस्तुत करने में मुनिश्री की विशेष रुचि थी। मुनिश्री की सभी रचनाएँ बहुत सुन्दर हैं, जिन्होंने सभी बुद्धिजीवियों को प्रभावित किया। अधिकतर धार्मिक विद्वान मानते थे कि विज्ञान धर्म विरोधी बातें बताता है। चूँकि मुनिश्री स्वयं विज्ञान के छात्र रहे थे, अतः उस विषय पर गंभीरता से विचार किया। उन्होंने महसूस किया कि विज्ञान धर्म का विरोधी नहीं है बल्कि धर्म की व्याख्या करने में सहायक है। मुनिश्री का मत था कि "विज्ञान सीमित धर्म है और धर्म असीमित विज्ञान"। आगे आने वाली पीढ़ी का रुझान भी विज्ञान की बातों को स्वीकार करने में रहता है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने धर्म और विज्ञान पर संगोष्ठी कराने का मन बनाया। जैन धर्म के इतिहास में संभवतः यह पहली संगोष्ठी थी। इन संगोष्ठियों का परिणाम यह रहा कि उसने विज्ञान की शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं को मुनिश्री के निकट ला दिया।

"मैत्री–समूह" के गठन के पीछे मुनिश्री का एक प्रमुख उद्देश्य यह था कि युवाओं तथा बच्चों में धर्म के प्रति रुचि जागृत की जाये तथा उन्हें नैतिक एवं सदाचार जीवन जीने की प्रेरणा दी जा सके। इस ग्रुप की सदस्यता की मात्र एक शर्त थी कि प्रत्येक वह जो धर्म में श्रद्धा रखता हो और नैतिक जीवन एवं सदाचार का पालन करता हो, इसका सदस्य बन सकता है। आज मुनिश्री हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके द्वारा किए गए धर्म प्रभावना के कार्यों को सदा याद करा जाता रहेगा तथा प्रेरणा प्राप्त की जाती रहेगी। मुनिश्री को मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि।

–डॉ. अनिल कुमार, कुवैत

The Guiding Light

I can't express through words how I felt when I heard the news on March 13th about Munishri's demise. Indeed it's an immense loss to our community. The reflection of calmness, equanimity in his spiritual discourses was immortal. Munishri was a guiding light to so many people and touched so many lives in so many different ways. He had strong principles that he believed in and lived by and loved people for what they were. I listen to his spiritual speeches almost daily. Munishri will always live in our hearts and we know that his blessings will guide us always as a shining light. **– Dr. Raj Patil, Canada**

गगनवत् निर्लिप्त संत

अपने साधनामय पवित्र जीवन के पिछले तीस वर्षों से पूज्य क्षमासागर जी अपनी हित, मित एवं प्रिय वाणी के माध्यम से जन–जन को धार्मिक सद्भाव और समन्वय तथा अध्यात्म के विज्ञानीकरण एवं विज्ञान के अध्यात्मीकरण का व्यवहारिक एवं प्रभावी संदेश देते आ रहे थे। उन्होंने जैन संस्कृति के उदारीकरण एवं वैश्वीकरण में श्रेष्ठतम एवं अनुपम योगदान दिया है। उनकी सरल, व्यावहारिक एवं प्रभावी वाणी अल्पकाल में ही आकाशवाणी का स्वरूप ग्रहण कर आधुनिकतम संचार माध्यमों से विश्व के कोने–कोने से प्रसारित हो रही है।

धर्मनिष्ठ मुनिश्री में धार्मिक सहिष्णुता का प्राचुर्य था। धर्म को वे अत्यन्त विशाल, व्यापक और विशद् मानते थे, संकीर्ण नहीं। उन्हीं के शब्दों में –जो अशान्ति से रहना सिखाये, आपस में लड़ाये, एक–दूसरे के विरुद्ध शस्त्र उठाये, वह धर्म कभी नहीं हो सकता। धर्म तो शान्ति, दया व प्रेम से रहना सिखाता है। अकेला धर्म ही मनुष्य को आपदाओं से मुक्ति दिला सकता है।

धार्मिक दृष्टि से उनके विचारों में औदार्य अत्यधिक था। उन्होंने जैनेतर धर्मों एवं मतों का भी अध्ययन, पठन, अन्वीक्षण किया है, लेकिन कहीं पक्षाग्रह या दुराग्रह देखने को नहीं मिलता। उनकी दृष्टि में धर्म केवल मनुष्य या जाति–विशेष का नहीं है, अपितु प्राणी मात्र के लिए है या सभी के कल्याण के लिए हैं।

नयी पीढ़ी का आह्वान करते हुए उन्होंने इस बात पर बल दिया कि धर्म को पुस्तकों से नहीं, आचार, न्याय और नीति से जानना चाहिए। मुनि श्री क्षमासागर जी एक उत्कृष्ट लेखक, प्रवचनकार और कवि थे। उनकी अत्यन्त लोकप्रिय पुस्तक "कर्म कैसे करें ?" में कर्म सिद्धान्त का सरल व तार्किक वर्णन है। मुनि श्री क्षमासागर जी की कविताओं को सुनना, मौन को सुनना है। इस मौन में पाठक को मुनि श्री के शब्दों के साथ अकेले ही यात्रा करनी होती है, जैसे कि वे स्वयं अपने भीतर के एकान्त में सदा अकेले होते हैं।

सन् 2002 में मैंने पहली बार मुनि श्री के जयपुर में दर्शन किये थे। पहली दृष्टि में ही मुझे लगा कि वे एक मनोज्ञ मुनि है, क्योंकि उनके दर्शन करते ही मन में अपार आनन्द की अनुभूति हुई थी। अपने विद्वता आदि गुणों के द्वारा मुनि श्री क्षमासागर जी का नाम समस्त भारतीय जैन जनता में अत्यन्त प्रसिद्ध था। इस युग में ऐसा निःस्पृह परम तपस्वी साधु होना कठिन है।

पिछले 10 वर्षों से मुनि श्री क्षमासागर जी अस्वस्थ चल रहे थे। उनकी वाणी भी अवरुद्ध हो गई थी, इसलिये प्रवचन भी नहीं कर पाते थे। फिर भी समस्त जैन समाज में वे एक उच्चकोटि के परम आदर्श गुरु के रूप में पूजे जाते थे। वे देशना दें अथवा न दें, उनकी दिनचर्या, उनके आचरण की पवित्रता से आनुभविक उपदेश प्रतिक्षण प्राप्त होता ही रहता था। प्रतिदिन उनके दर्शन करने हेतु सैकड़ों भक्त आते रहते थे तथा उनका दर्शन करके अपने आप को धन्य मानते थे। साक्षात् देवों के अभाव में स्थापना के रूप में स्थापित प्रतिमाओं की, की गई पूजा भक्ति वन्दनादिक से मन्दिर में उपलब्ध शांति, लौकिक व्यवसायों में फंसने पर मन्द या लुप्त प्राय हो जाती है, परन्तु ज्ञान चारित्र के धारी ऐसे दिगम्बर संतों का समागम एवं उनका आदर्श जीवन पुनः–पुनः पवित्रता एवं शान्ति प्राप्ति हेतु नई चेतना प्रदान करता है।

संस्कृत भाषा में सूक्ति है "संतः परार्थतत्पराः"– सत्पुरुष सदा प्राणियों का कल्याण किया करते हैं। मराठी में संत तुकाराम की यह सूक्ति है "जगा च कल्याण संता च विभूति"– विश्व में प्रेम, तत्वज्ञान और संयम की त्रिपथगा में स्नान कर जीवन को परमविशुद्ध बनाने वाले परम दिगम्बर संत, विश्व गौरव, तत्वज्ञानी, ब्रह्मयोगी, बाल ब्रह्मचारी पूज्य मुनि श्री क्षमासागर जी महाराज की आध्यात्मिक साधना, सरस्वती की समाराधना और साहित्य सेवा जैन जगत में अपना अनुपम स्थान रखती है। पूज्य मुनि श्री क्षमासागर जी महाराज के दिव्य व्यक्तित्व में एक अनोखी प्रभावोत्पादक शक्ति थी जिसका अनुभव उनके सम्पर्क में आने पर ही हो पाता था। जैन आगम के दुरूह और गूढ़तम रहस्यों तक उनकी जिज्ञासु दृष्टि पहुँचती थी और वे तत्व विवेचना में एक परिश्रमी विद्यार्थी की तरह रुचि लेते थे एवं कठोर अध्यवसाय करते थे।

– कपूरचन्द जैन पाटनी, गुवाहाटी

वे जोड़ते थे सबको-सबसे

पूज्य मुनि श्री का स्मरण करते ही आँखों के सामने उभर कर आती है–सरल, सौम्य, निश्छल मुखमुद्रा के साथ दुर्बल–क्षीण काया में आत्मबल–मनोबल से भरपूर एक तपस्वी छवि।

आत्मबल की पहचान प्रतिकूलता में होती है। सर्व विदित है कि पूज्य मुनिश्री ने घोर दैहिक व रोगजन्य मानसिक पीड़ा को अत्यंत शांति एवं समतापूर्वक सहन किया। उस प्रतिकूल परिस्थिति में वे अपने नियम–संयम से डिगे नहीं, स्खलित नहीं हुये। सदैव अपने लक्ष्य की ओर सजग रहे, संलग्न रहे। ऐसा आत्मबल ''वीरों'' की पहचान होती है, मुनिश्री ''वीरेन्द्र'' ही तो थे। वीर की सहनशीलता ''क्षमा'' कहलाती है, वे तो ''क्षमासागर'' ही थे। उनके बारे में ''कुछ'' लिखना कठिन है, क्या जोड़े–क्या छोड़ें–असमंजस है।

कवि हृदय मुनिश्री का अंतस् करुणा एवं मृदुता से संसिक्त था। तभी तो उनके सान्निध्य से मन में शांति का संचार होने लगता, आनंद का अनुभव होने लगता था। जो उनके सानिध्य में आता था उसे भावात्मक प्राप्ति होती थी। यह मुनिश्री की सदाशयता थी, जिसे उन्होंने अपनी एक कविता में इस इस प्रकार व्यक्त किया है –

''देने के लिये
मेरे पास क्या है?
सिवाय इस एहसास के
कि कोई खाली हाथ
लौट न जाये।''

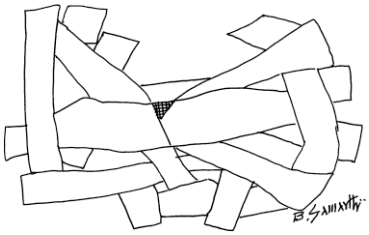

सच, जो एक बार उनके सानिध्य में आ गया वह उनसे जुड़ गया। वे जोड़ते थे सबको सबसे, धर्म से, समाज से, उन्होंने कभी कुछ तोड़ा नहीं; स्वयं निरपेक्ष रहे, निर्लिप्त रहे। मुनि श्री विवादों–मतभेदों से दूर रहे–वादहीन, विवादहीन! उनकी चर्या और क्रिया दोनों निर्मल, निर्दोष, निर्विवाद रही।

निरीह, निस्पृह, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी मुनि श्री आत्म कल्याण/स्वकल्याण के साथ लोक कल्याण में भी संलग्न रहे। उनके सकारात्मक चिंतन से युवा पीढ़ी स्वतः ही उनके प्रति आकर्षित होती थी, श्रद्धावनत होती थी। उन्होंने अपने संपर्क में आने वाली युवा पीढ़ी को सीधी सरल, उन्हीं की भाषा में, आधुनिक व वैज्ञानिक शैली में धर्म का मर्म समझाया, धर्म व संस्कृति के प्रति उनकी रुचि जागृत की; उन्हें नई सोच दी, नई भावनाऐं दीं, नये विचार दिये; उन्हें सदाचार और सदविचार की ओर प्रेरित किया, प्रोत्साहित किया। वे युवा पीढ़ी को उनकी अपनी योग्यता–क्षमता और सामर्थ्य से परिचय कराने वाले एक सक्षम गुरु थे। उनके वे युवा शिष्य विश्व के विभिन्न देशों में उच्च पदों पर कार्य करते हुये सात्विक, सदाचारी व आस्थामय जीवन यापन कर रहे हैं, इससे गुरुदेव की श्रीकीर्ति स्वतः ही सर्वत्र प्रसारित है।

मुनिश्री की प्रवचन शैली अद्भुत थी। जैन दर्शन के गूढ़–गम्भीर विषय अत्यंत सीधी सरल भाषा में, सर्वग्राह्य शैली में समझाना उनकी विशेषता थी। बारह भावना, सोलह कारण भावना, दशलक्षण धर्म, सल्लेखना, कर्म कैसे करें आदि गम्भीर विषयों पर प्रदत्त आपके प्रवचन मार्मिक हैं, सारगर्भित हैं, रोचक हैं। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के कारण पिछले कुछ वर्ष हम उनके साक्षात प्रवचनों से वंचित रहे, किन्तु उनके पूर्व प्रदत्त प्रवचनों के कैसेट, सी.डी., प्रवचन संग्रह की पुस्तकें विपुल मात्रा में सुनी व पढ़ी जाती रही हैं, इससे उनके प्रवचनों की लोकप्रियता स्पष्ट होती है।

ऐसे तपस्वी मनीषी का सानिध्य हम दीर्घकाल तक न पा सके यह हमारी पुण्य–अल्पता है। संतोषप्रद है कि उनकी कीर्ति प्रसार में जयपुरवासी भी जुड़े, संलग्न रहे।

पूज्य गुरुदेव को मेरी ओर से मेरे परिवारजनों की ओर से, गुरुवाणी प्रकाशन परिवार की ओर से बारम्बार नमन, शत्–शत् वंदन, चिर स्मरण!

हम तुम्हें कभी भुला न पायेंगे,
दिन महीने साल बीत जायेंगे,
गुरुवर! आप सदैव याद आयेंगे
सादर नमन, वंदन, स्मरण !

–प्रीति जैन, जयपुर

साहसी, साहिष्णु और समदृष्टि श्रमण

आचार्य कुंदकुंद के प्रवचनसार की निम्नलिखित गाथा में सच्चे श्रमण (दिगम्बर जैन साधु) का लक्षण बतलाते हुये लिखा है –

समसत्तुबंधुवग्गो समसुह दुक्खो पसंसणिंद समो।
समलोट्ठकंचणो पुण जीविदमरणो समो समणो।। 241।।

अर्थात जो शत्रु और मित्र, सुख और दुःख, प्रशंसा और निन्दा, मिट्टी और स्वर्ण तथा जीवन और मरण इन परस्पर विरोधी तत्वों के जीवन में आने पर समभाव रखता है, किसी से राग और किसी से द्वेष नहीं करता, हर्ष–विषाद नहीं करता, वही सच्चा श्रमण है।

पूज्य मुनिश्री क्षमा सागर जी महाराज ने सच्चे श्रमण के इन लक्षणों को अपने जीवन में अक्षरशः उतारा था। जीवन के उत्तरार्ध में तो भयंकर असाध्य व्याधियों ने उनके शरीर को अपना आवास बना लिया था। उससे उत्पन्न असह्य वेदना को वे धैर्यपूर्वक सहते हुये अपने मुनि व्रतों पर अडिग रहे, उनसे तनिक भी च्युत होने का भाव मन में नहीं आया और अंत में समाधिपूर्वक, निर्ममत्व भाव से देह का परित्याग कर दिया। पूज्य मुनि श्री क्षमासागर जी न केवल एक उत्कृष्ट साधु परमेष्ठी थे अपितु अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी तत्वों की तह तक पहुँचने वाले, स्वाध्यायी, मर्मस्पर्शी शैली में उपदेश प्रदान करने वाले गुरु, और अज्ञ से अज्ञ, विज्ञ से विज्ञ प्रश्नकर्ताओं के प्रश्नों को रोचक ढंग से, सरल भाषा में पानी–पानी करके समाधान कर देने की कला में पटु विद्वान भी थे। अपनी इस पटुता के कारण वह सदा जिज्ञासुओं से घिरे रहते थे ।

न केवल इतना ही, वे एक अच्छे साहित्यकार भी थे। वे उत्कृष्ट कवि और मंजे हुये लेखक थे। मुनिश्री क्षमासागर जी की सभी कविताएं पाठक और श्रोता के हृदय पर गहराई तक असर करती हैं।

प्रतिभाशाली, निर्धन भावी पीढ़ी की शिक्षा–दीक्षा को सुकर बनाने के लिये मुनि श्री की प्रेरणा से प्रतिवर्ष प्रतिभा सम्मान का कार्यक्रम आयोजित किया जाता था, जिसमें छात्रों को छात्रवृत्ति दिलाई जाती थी। इसके लिये भावी पीढ़ी मुनिश्री को सदा याद रखेगी।

मुनिश्री क्षमासागर जी ने दीर्घ शारीरिक वेदना को सहते हुये भी अपनी मोक्षमार्ग की साधना को सफल बनाने के साथ जैन धर्म की प्रभावना और भावी पीढ़ी के जीवन को संवारने के लिये एक–एक क्षण का सदुपयोग किया है। वे अल्प आयु में ही हमें छोडकर चले गये, यह हमारी महान क्षति है। हमारे हृदय में जीवन पर्यंत उनकी प्रेरक स्मृतियां छायी रहेंगी।

–प्रो. डॉ. रतनचंद जैन, भोपाल

मेरी भावना के महावीर

सागर के सागार (गृहस्थ) की अनगार (निरग्रंथ साधु) तक के जीवन सागर को शब्द–भाव के घट में समावेशित कर पाना दुष्कर है। उनका हर पहलू अनुकरणीय ग्रंथ है। मेरी आस्था में वे यथानाम तथा गुण की जीवनकृति थे ।

क्योंकि गोद में ही नवजात के लक्षणों को देखकर जनक–जननी ने उनका प्रथम नाम ''वीर'' व उपनाम ''इन्द्र'' जोड़कर वीरेन्द्र रखा। इस पर्याय का प्रथम पग वीर नाम से उद्घाटित हुआ अतएव वे ''वीर'' हैं।

महाचार्य विद्यासागर जी महाराज के संघ की महती श्रृंखला को वृद्धिगत करने वाले वे मेरी निष्ठा में ''वर्धमान'' हैं। उच्च कुल, उच्च शिक्षा सम्पन्नतादी से परिपूर्ण युवा संसार सागर से विरक्त होकर यौवन का स्वागत ब्रह्मचर्य से करने वाला वीरेन्द्र ''सन्मति'' हैं। कृशकाया किन्तु दृढ़ मनोबल से मुनि पद की कठोर साधना की चुनौती स्वीकारने से वह मेरी निष्ठा में ''अतिवीर'' है । लगभग एक दशक मृत्यु तुल्य वेदनाओं को परास्त कर मुनि पद से देह विसर्जित करने वाले मेरी भावना के वे ''महावीर'' हैं। **–उमेश जैन, सागर**

हाईटेक युग के संस्कार संवाहक महान संत

अपने जीवन को 36 वर्ष पूर्व की कल्पना में रखकर देखें और सोचें वह समय जिस जमाने में इक्का–दुक्का प्रतिभाशाली युवा ही एम.टेक की उपाधि कर पाते थे। कॉलेज की संख्या भी अत्यंत सीमित थी। इंजीनियर या डॉक्टर बनना घर को पहचान दिलाता था। वीरेन्द्र ने सन् 1980 में सब कुछ छोड़कर क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण कर ली थी। सागर के श्रावक श्रेष्ठी जीवन कुमार सिंघई परिवार के जीवन में एक स्तब्धता सी छा गई थी। 20 अगस्त 1982 को सिद्ध क्षेत्र नैनागिरी में वर्तमान में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से मुनि दीक्षा अंगीकार करने वाले पूज्य मुनि श्री क्षमासागर जी ने अपने चर्याकाल में अभूतपूर्व धर्म प्रभावना कर स्वयं को चर्या कर शिरोमणि साबित किया। अत्यंत अस्वस्थ्य होने के बाबजूद पूर्ण चेतना में दिगम्बरत्व के प्रति दृढ़ता व महाव्रत को खंडित न करने का संकल्प उन्हें महान व महानतम संत निरूपित करता है।

करुणा से लबालब, दया के भण्डार, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, प्राकृत आदि भाषाओं के जानकार, हाईटेक युग में वर्तमान की भाषा में संदेश देने के तलस्पर्शी महामना, युवा बच्चों में विलोपित होते संस्कारों को वैज्ञानिकता के साथ रोपण कर समय–समय पर उनका सिंचन करने वाले, कवि हृदय, साहित्यकार और न जाने क्या–क्या कहूं, शब्द ही बोने होते हैं जिनके आगे, ऐसे तपस्वी तपोपूत संत क्षमासागर जी मुनि महाराज का 13 मार्च 2015 को समाधि पूर्वक मोराजी सागर में मरण हो गया।

मैंने सन् 1996 के इन्दौर चातुर्मास के दौरान समवशरण मंदिर में पहली बार प्रवचन सुने थे। उन प्रवचनों में मुझे हृदय से रोना आ गया था। प्रवचनकार मुनिश्री क्षमा सागर जी को सुनकर ऐसा लगा था कि ''संसार क्या है, यहाँ कैसे जीना, क्या करना, कैसे करना'' सहित अनेक प्रश्नों के समूह का निराकरण हो गया था। उपरांत पावागिरि में 5–7 दिन का उनका प्रवास और उनका सान्निध्य, मेरे जीवन में जीवन का पाठ सिखा गया। वास्तव में मैंने महसूस किया ''मुनि मन सम उज्जवल नीर'' मैंने अहसास किया ''मुनि सकल व्रती बड़भागी, भव भोगनतें वैरागी।'' पूज्य श्री आहार चर्या के बाद शंका का समाधान किया करते थे, साथ ही वे एक न एक संस्मरण अवश्य सुनाते थे। ''मैत्री भाव जगत में मेरा'' का पाठ कराते थे। उनके संस्मरण सुनकर ऐसा लगता था मानो हम उस घटना को साक्षात होते देख रहे हों।

गुरु के प्रति समर्पण, सामान्य जन के प्रति समता, सहजता, सरलता, समभाव उनके जीवन को ऊँचाइयाँ प्रदान करता था। आज के दौर में बड़े–बड़े लाउड स्पीकरों में चिल्ला–चिल्ला कर भी जो प्रभावना नहीं हो पा रही वह उनके कुछ सहज शब्दों में हो जाया करती थी। वे इस युग में मेरे विचार से सबसे पहले ऐसे संत थे जिन्होंने एम.टेक जैसी उच्च शिक्षित डिग्री को दिगम्बरत्व के आगे खूंटी पर टांग दिया और समर्पित हो गये अपने दिगम्बरत्व व महाव्रत की ओर।

उनकी छोटी–छोटी कविताएँ मानो बड़ा भारी रहस्य खोलकर अंतरमन को झकझोरने वाला संदेश प्रदान करती थीं। वे आधुनिक युवा बच्चों के सभी प्रकार के प्रश्नों का सहज समाधान भी देते थे। प्रतिवर्ष प्रतिभाशाली बच्चों का सम्मान समारोह करवाकर उनमें संस्कारों का बीजारोपण करना उनका अभिनव प्रयोग था, जिससे आज आधुनिक पीढ़ी में जैनत्व के संस्कार हमें दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने जो लिखा सार्थक लिखा, जो कहा सार्थक कहा, जो किया वह भी सार्थक किया। वे जिस क्षेत्र में रहे उसके साथ उन्होंने न्याय किया। ऐसे महान संत के प्रवचनों की सी. डी., पेन ड्राइव उपलब्ध हैं, ऐसा कोई विषय नहीं रहा जिस पर उन्होंने बोला न हो। आज भी संस्कारों से विमुख होती पीढ़ी ''कर्म कैसे करें'' पढ़ ले या उनके प्रवचनों का संग्रह ''गुरुवाणी'' पढ़ ले तो हम सब में सुधार दिखाई देगा। वे भले ही चले गये, लेकिन हमें जो जीवन जीने का तरीका दे गये उसके प्रचार–प्रसार की आवश्यकता है। पंथवाद, उपजातिवाद, संतो–पंथों–ग्रंथों के नाम पर अलग–अलग समूहों में बंटता वर्तमान का जैन समाज आज भी यदि मुनि क्षमासागर जी के साहित्य का, प्रवचनों का अनुकरण करे तो हम पुनः अपनी व जैन धर्म की विशिष्ट पहचान स्थापित कर पायेंगे।

–राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद

वैज्ञानिक सिद्धांतों को आत्मसात करने वाले संत

भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक सिद्धांतों का अनुपालन करने वाले वैज्ञानिक चितंनधारी मुनिश्री क्षमासागर जी महाराज की उत्कृष्ट अनुशासित चर्या, प्रकृति को आत्मसात् करके अपने गुरु संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रति मनःप्राण से समर्पित व्यक्तित्व की आभा संसारी जीव को सदैव प्रकाशस्तंभवत् आलोकित करेगी।

जिन शासन की अनुशासित चर्या को युवा शक्ति में ढालने का सम्यक् पुरुषार्थ मैत्री समूह के माध्यम से यंग जैन अवार्ड की स्थापना अलौकिक आयाम है। विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण पूज्य मुनिश्री की ओर मेरा आकर्षण स्वभावतः था। जीव विज्ञान की शिक्षा के उपरांत पंचकल्याणक प्रतिष्ठा जैसे मांगलिक अनुष्ठान विधि को आत्मसात करना अत्यंत दुरुह था। इसमें सहयोगी बने मुनिश्री क्षमासागर जी, समता सागर जी, प्रमाण सागर जी और आर्यिका दृढ़मति माता जी। शुद्ध उच्चारण का वरदान एवं वैज्ञानिक चितंन का वरदान मिला। पूज्य पिताश्री के अभिनंदन ग्रंथ के काल में जिज्ञासा समाधान के अन्तर्गत कई शंकाओं का शास्त्रोक्त एवं व्यवहारिक समाधान पूज्य क्षमासागर जी महाराज से प्राप्त किया।

जिनका समाधान शास्त्रों से नहीं मिला उनका सम्यक् समाधान पूज्यश्री से प्राप्त हुआ। आपका भाव था – जय भैया कोई भी समाधान वीतरागता एवं अहिंसा से परे नहीं होना चाहिए। आचार्यों की दृष्टि उनकी सोच हमारी कल्पना से परे है, अतः उसमें अपनी अल्प क्षायोपशमिक बुद्धि कभी नहीं लगाना। यदि भूलवश कोई विरुद्ध समाधान उच्चरित हो गया तो उसके अनुसरण करने वाले जीवों की श्रद्धा के आघात का दोष हमें लगेगा।

प्रतिष्ठा विधि की कई गूढ़ ग्रंथियां महाराज श्री के द्वारा सुलझाई गयीं। उनका एक ही भाव था – जिन मंत्रों से पाषाण भगवान का रूप प्राप्त करता है उन मंत्रों के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं निष्ठा बनाये रखना। उनकी क्रिया एवं उच्चारण शुद्ध, एवं आंतरिक भावना को जितना विशुद्ध रखोगे उतना ही अतिशय प्रतिफलित होगा। ऐसे वैज्ञानिक निस्पृह उत्कृष्ट साधक की साधना मेरे जीवन का आधार बने।

–ब्र. जयकुमार 'निशांत', टीकमगढ़

बिना कुछ बोले समझ जाते हैं

मेरी पत्नी जून 2013 मे महाराज श्री के दर्शन कर उनकी प्रवचन की सीडी लाई थी, जिसको कार में सुनकर मेरे मन में उनके पास जाने की भावना जागृत हुई। दर्शन का मौका मुझे 2013 में ही मिला। उनका स्नेह, निश्छलता, भोलापन और मुनि चर्या दिल को बरबस ही छू गई, साथ ही मन ही मन गहरा अफसोस हुआ कि पहले मुनि श्री के समीप आने का मौका क्यों नहीं मिला? उसके बाद पिछले दो वर्षों में कई बार गढ़ाकोटा और सागर जाकर उनके दर्शन करने का मौका मिला।

उनकी सबसे बड़ी खूबी यह थी कि बिना कुछ बोले ही वो दिल की सभी बात समझ जाते थे, मैं और मेरी बेटी अपने और साथियों के साथ मुनि श्री के सामने भजन गाकर अपने दिल की भावना व्यक्त करते और वो मुस्कुरा कर हमारा उत्साह बढ़ाते। मुझे क्या पता था कि मुनि श्री का आशीर्वाद और उनकी कर्म सिद्धांत की सीख मेरी लाइफ के सबसे कठिन समय में मेरा मार्ग दर्शन करेगी। उस कठिन समय में मुनि श्री के कहे हर शब्द मेरे कान और दिमाग में घूमते रहे तथा मेरा मार्गदर्शन करते रहे और मुझे उस मुश्किल वातावरण से बाहर निकालने में सहायक सिद्ध हुए।

– शरद जैन, नोएडा

साधना के तपोवन

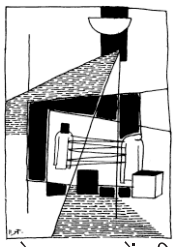

"ज्ञान के मर्मज्ञ, प्रतिपल वंद्य,
आपमें वात्सल्यमय औदार्य था।
मौन हो गई वह दिव्य वाणी
जिसमें साधना का सौंदर्य था।।"

जैन वाङ्यम के अलौकिक प्रस्तोता पूज्य मुनि श्री क्षमासागर जी, श्रमण संस्कृति के महायात्री, प्रामाणिक, शलाका पुरूष अकस्मात् महाप्रयाण पर चल पड़े। उनका साहित्यिक, सांस्कृतिक अवदान एक अमूल्य विरासत है, उनका जीवन दर्शन समयसार, नियमसार, मूलाचार से अनुवेष्टित था, हमारे समय के ऐसे नक्षत्र चले गए जिनकी दिव्य दृष्टि, सदाशयता, गम्भीरता, परिपक्वता और सहृदयता से सम्पन्न थी, किसी विद्वान ने लिखा है–

"अध्वन्यध्वनि तरवः पथि पथिकैरुपास्यते छाया
विरलः स कोऽपि विटपी यमध्वगो गृहगातः स्मरति।"

सारांशतः प्रत्येक मार्ग के किनारों पर कई वृक्ष हैं और हमारे हर मार्ग में पथिक उनका आश्रय लेते हैं किन्तु ऐसा वृक्ष विरला ही होता है, जिनका स्मरण घर पहुँचकर भी पथिक कृतज्ञता से करता है। वे ऐसे ही दिव्य विटप थे जिनकी आशीष छाया में सारस्वत जिज्ञासा, अध्यवसाय और स्वाध्याय का अद्भुत अंकुरण होता रहा।

परमपूज्य मुनि 108 श्री क्षमासागर जी आज वस्तु जगत में नहीं हैं किन्तु मेरे भाव जगत में वे और गहरे उतर गए हैं, विद्या का वे प्रदर्शन नहीं करते थे, उनकी बौद्धिक चेतना की परिधि अत्यन्त विस्तीर्ण और व्यापक थी। उनमें शास्त्र और लोक, परम्परा और आधुनिकता, प्राचीन और नवीन सबकी पहचान और परख विद्यमान थी। विश्वमयता की अवधारणा की साक्षात् प्रतिमा, सांस्कृतिक अभ्युत्थान के चूड़ामणि आदर्श पूज्य मुनिवर युवाओं के लिए तो अवतार बनकर अवतरित हुए। शिक्षणरत, उच्चशिक्षित एवं उच्चपदस्थ सभी को धर्म के मर्म के नव व्याख्याकार और उन्हें सन्मार्गारूढ़ करने वाले मसीहा मिले। मैत्री समूह की मौलिक अवधारणा प्रतिभाओं का सम्मान, जैन विज्ञान संगोष्ठी, जहाँ जिज्ञासाओं का समाधान मिलता था, वहीं समाज को भी संचेतना की नवोपलब्धि होती थी।

असमय ही असाता वेदनीय के कुचक्र में भी घिर जाने पर दृढ़ महाव्रती असाध्य रोगों की चुनौतियों को शूरवीरता से झेलते रहे। अन्तिम दीक्षा दिवस वर्णी आश्रम (सागर) में उनके दर्शन करने का सौभाग्य मेरे जीवन की उपलब्धि है – उनकी कृति "कर्म कैसे करें" के शब्द वायु की तरह बहने लगे, श्वासों को चंदन गंधी करने लगे। उनकी पूर्व श्रुत गुण युक्त अर्थ–गर्भित वाणी न सुनने की पीड़ा अश्रुधार बन बह निकली। यही शब्द निकले– ओह पार्श्वनाथ का उपसर्ग अल्पकालीन था, धरणेन्द्र–पद्मावती भी तत्काल आ गए, पर ये गुरुवर कितनी लम्बी अवधि से उपसर्ग सह रहे हैं और धन्य हैं साथ में ये वैयावृति करने वाले श्रावक जिन्होंने धरणेन्द्र और पद्मावती को भी अल्प कर दिया।

साधना के चरम शिखर नवमुक्ति एवं संस्कृति के आलोक स्तम्भ, श्रमणत्व के अक्षत मूल्यों के संवाहक का व्यापक विस्तृत व्यक्तित्व 13 मार्च 2015 को अनंत में समा गया। मैं समझती हूँ बिन्दु का सिन्धु में मिल जाना बिन्दु का नष्ट हो जाना नहीं होता है, अपितु बिन्दु का सिन्धु बन जाना है। उनके कृतित्व और व्यक्तित्व को हम उनकी कृतियों और उनके आदर्शों का सर्वत्र प्रसारित करने हेतु संकल्पित मैत्री समूह सदृश संस्थाओं में देखेंगे।

अनेक कॉन्फ्रेंसेज में पूज्य मुनिवर का आशीर्वाद मुझे मिला, वस्तुतः वे युगपारखी एवं युगनिर्माता थे। वे हमें मिलेंगे उन दिव्य अक्षरों में, उस दिव्य वाणी में और हमें अनुभव होगा, वे कह रहे हैं, 'आगे आगे अपनी अर्थी के मैं गा रहा हूँ सुनो तो सही! सच आपकी अमर स्वरांजलि में हम आपके दर्शन करते रहेंगे। आप सिद्धों के कुल में विराजमान हो गए हैं। हमारी आवाज, हमारी विनती, हमारी श्रद्धा वहीं आपके चरणों में नमोस्तु करेगी।

– डॉ नीलम जैन, पुणे

दिल की जीत

यह घटनाक्रम जो मैं आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ, वह बिलकुल सत्य घटना है। बात उस समय की है जब पूज्य मुनिश्री क्षमासागर जी का चातुर्मास शाहपुर में चल रहा था। मैं मंदिर जी में पूजन कर रहा था जो समाप्ति की ओर थी तभी एकदम दिल ने कहा कि आज तो मुनिश्री क्षमासागर जी आहार चर्या देखना है। पूजन की शान्ति विसर्जन करके घर आया। मंदिर के कपड़े उतारकर नित्य के कपड़े पहनकर जाने लगा। श्रीमती जी ने पूछा कहाँ जा रहे हो? उत्तर दिया कि पू. क्षमासागर जी की आहार चर्या देखने शाहपुर जा रहा हूँ। एकदम जल्दी–जल्दी चलकर बस स्टैंड पंहुचा। मालूम पड़ा कि दमोह बेगमगंज गाड़ी निकल गयी है। बस से गिरवर पहुंचकर ट्रेन से शाहपुर पहुँच जाता पर कोई साधन नहीं था। असमंजस की स्थिति थी। तभी एक सोयाबीन लदा ट्रक पथरिया जा रहा था। ड्राईवर से बात की और पूछा कि क्या पथरिया से शाहपुर गाड़ी मिलवा दोगे ? उसने जवाब दिया कि चलो बैठो, पूरी कोशिश करूँगा कि गाड़ी मिल जावे। ट्रक में अन्य सवारियां भी बैठी थी जिन्हें उतारने बैठाने में काफी समय लग गया। जब ट्रक पथरिया के मेन मार्केट में पहुँचा, तभी गाड़ी ने सीटी दे दी। मैं तत्काल ट्रक से उतरकर पैदल स्टेशन की ओर दौड़ा। एक शार्टकट रास्ता जो स्टेशन की तरफ जाता है। जैसे ही स्टेशन वाली सड़क पर पहुँचा कि एक बाइक सवार स्टेशन तरफ जा रहा था। उसे हाथ देकर रोका, उसके रुकते ही मैंने कहा, प्लीज, गाडी ने सीटी दे दी है, मुझे शाहपुर जाना है। उसने तुरंत ही बैठने को कहा। जैसे ही हम स्टेशन के पास पहुंचे देखा कि गाड़ी प्लेटफार्म छोड़ धीरे–धीरे बढ़ रही है जैसे मेरा इंतजार कर रही थी। उसने पगडण्डी पकड़कर इंजन के पास मुझे उतार दिया । प्रभु कृपा से ड्राईवर ने गाड़ी एकदम मंदी कर दी । जैसे ही मैं एक डिब्बे के सामने पहुंचा तो देखा कि श्री ताराचंद जी बाँझल पथरिया वाले खड़े हुए हैं । उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर ऊपर चढ़ा लिया। उन्होंने पूछा कैसे जा रहे हो। मैंने बताया कि पूज्य क्षमासागर जी की आहार चर्या देखना है। जैसे ही गाड़ी शाहपुर (गणेशगंज) स्टेशन पहुंची तो उन्होंने एक लड़के को मुझे गेट से बाहर पहुँचाने भेज दिया। मैं जैसे ही गेट के बाहर आया कि एक टैक्सी खड़ी थी जो शाहपुर नगर तक जा रही थी । मैं उस पर सवार होकर नगर पहुंचा और महाराज श्री की आहार चर्या देख कर दिल को बड़ा सुकून मिला।

आहारों के पश्चात मंदिरजी में प्रश्नों का समाधान कार्यक्रम प्रतिदिन चलता था। प्रश्नोत्तरों के पश्चात महाराजजी से आशीर्वाद लिया। महाराजजी ने सामायिक के बाद मिलने और धर्म चर्चा के लिए समय दिया। अपरान्ह में महाराजजी से धर्म चर्चा हुई। इसके बाद महाराज श्री आशीर्वाद व आज्ञा लेकर वापिस स्टेशन पर आया। लौटने के समय कई बाधायें आईं, इसके बाद भी मैं समय पर घर पहुंच गया।

पूरे दिन का घटनाक्रम जब विचार में आया तो रोमांच हो आया। कैसे मैं महाराज श्री की आहार चर्या देख पाया और कैसे घर वापस आ गया । सुबह मंदिर में जो बात दिल में आई थी वह पूरी हो गई । ऐसा लगा जैसे दिल की जीत हो गई। निश्चित ही मेरा अहोभाग्य, ईश्वर और धर्म का अवलंबन और पूज्य मुनिश्री क्षमासागर जी का आशीर्वाद जो मुझे प्राप्त हुआ था। वही सब दिल की बात साकार करने में फलीभूत हुआ । यह घटना जब याद आती है तो पूरा घटनाक्रम आँखों के सामने घूम जाता है।

–चौधरी जवाहरलाल जैन, गढ़ाकोटा

कोई भी मुझे भला और बुरा फल नहीं देता,मेरे अपने पूर्व में किये हुए संचित कर्म ही फल देते हैं। उसमें में कैसे कुछ बेहतर कर सकता हूँ,अगर ये चीज हमारे मन में बनी रहे तो हम आसानी से दुःखों को जीत सकते हैं। **–मुनि क्षमासागर जी**

कविताओं में वीतरागी साधक जीवन झलकता है

दिगम्बर मुनि एक घोर तपस्वी मोक्षमार्ग के साधक के रूप में प्रणम्य व पूज्य परमेष्ठी हैं। पूज्य क्षमासागर महाराज ऐसे ही तपस्वी साधक थे। मुनि ही हमारे साक्षात गुरु हैं, जो अपना आत्मकल्याण करते हुए गृहस्थों का कल्याण करते हैं। वे इस जीवन को जीने की कला सिखाते हुए परलोक का मार्ग प्रशस्त करते हैं। हम देखते हैं कि प्राचीन परम्परा में गृहस्थ अपने बालकों को मुनियों के पास पढ़ने भेज देते थे और वे धार्मिक शिक्षा के साथ लौकिक विषयों की शिक्षा भी दिया करते थे। बालक उनकी चर्या को निकट से देखते हुए उनके सानिध्य में सदाचारी विद्वान बनता था। उसके बाद वह अपनी योग्यता अनुसार गृहस्थ या संन्यास जीवन व्यतीत करता था। मुनि श्री क्षमासागरजी ने अपने इस दायित्व का भली भाँति निर्वाह किया है। इस परम्परा का निर्वाह कर वे बालक–बालिकाओं, किशोरों व युवाओं की समस्याएं धैर्यपूर्वक सुनते थे, फिर वे चाहे उनकी व्यक्तिगत या पारिवारिक समस्याएं हों, या फिर भावी आजीविका के चयन विषयक सलाह लेनी हो। वे उन लोगों को धैर्य, आश्वासन, सलाह व प्रेमपूर्ण आशीर्वाद देते थे। प्रोत्साहन के लिए मुनिश्री ने प्रतिभा सम्मान आयोजित किए, जिस सम्मान को पाने के लिए युवक–युवतियाँ विदेश से भी आते रहे। बालक, किशोर और नवयुवाओं ने उन पर अपने माता–पिता से अधिक प्रेम और विश्वास किया। चातुर्मास में आबाल–वृद्ध सभी लाभान्वित होते थे। उनके प्रवचनों का विषय ना तो सामान्य सामाजिक जीवन होता था और न ही गूढ़ दार्शनिक विषय। वे जैन सिद्धांतों को ही सरल करके आज के समय के अनुकूल उदाहरणों द्वारा समझाते थे। "कर्म कैसे करें" उसका एक उदाहरण है। प्रवचन के साथ ही निरंतर लेखन भी करते रहे। सामान्य लोगों के लिए जैन दार्शनिक शब्दों का पारिभाषिक कोश भी बनाया।

कवि तो अनुपम थे ही। उनकी कविताओं में उनका वीतरागी साधक जीवन झलकता है, पर उनकी कविता साधु का उपदेश नहीं है। मैंने जिन जिन जैनेतर विद्वानों को उनकी कविताओं को पढ़वाया, वे उन कविताओं से प्रभावित ही नहीं सम्मोहित भी हुए। किसी को उनमें पर्यावरण–विद् की दृष्टि दिखी, किसी ने उनमें जीवन की परिभाषा पाई। किसी ने कहा ये कविताएँ विश्वप्रसिद्ध कवियों की तुलना में कहीं अधिक मूल्यवान हैं। वस्तुतः ये कविताएँ उनके कोमल संवेदनशील मन व सूक्ष्म–निरीक्षण की मुखर रचनाएं हैं। पूज्य क्षमासागर महाराज जी के चरण कमलों में सादर नमोस्तु ।

–डॉ. कुसुम पटोरिया, नागपुर

संयम तप के धारी

चले गए वो संत क्षमा, जीवन में क्षमा को धारा।
अंत समय में सिद्ध प्रभु का मुख से नाम पुकारा।

सागर की माटी में जन्मा रत्न क्षमा सा प्यारा।
विलीन हो गया उस माटी में संत समाज का तारा।

विद्या गुरु का शिष्य अनोखा सम्यक तप का धारी था।
परम प्रभावक शिष्य रहा गुरुवर का आज्ञाकारी था।

जैन जगत ने जो खोया है वो मोती नहीं पा सकते हैं।
संतों में भी संत क्षमा सम संत नहीं ला सकते हैं।

गुरुवर मेरा पाप उदय था अंतिम दर्श न कर पाया।
तेरी हर तस्वीर के आगे परोक्ष नमोस्तु कर पाया।

अल्प समय गुरु वत्सल जीवन भर भूल न पायेंगे।
जब भी गुरु की चर्चा होगी परोक्ष में शीश झुकायेंगें।

–अजय कुमार जैन, सिमरिया

धर्म का मर्म

जब गुना नगर की धरा पर जैनत्व, वीतरागता एवं दर्शन, ज्ञान और चारित्र रूपी रत्नत्रय की गंगा मुनि श्री क्षमासागर जी के द्वारा अवतरित हो रही थी, तब मेरे जैसे कई ऐसे युवा इस गंगाजल को शिरोधार्य कर रहे थे, जिनकी धर्म में रुचि या तो न के बराबर थी या बाहरी क्रियाओं में ही उलझे थे। उनकी मिश्री सी मधुर वाणी सुनने वालो के कानों से होकर सीधे अंतरात्मा तक पहुँच जाती थी, और उनकी चर्या से जैन ही नहीं अपितु अजैन भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहते थे। चातुर्मास में हम प्रातः मुनि श्री के प्रवचन सुनते, आहारचर्या में साथ जाते, फिर शंका समाधान का कार्यक्रम, ये मेरा routine बन गया था, क्योंकि अब हमें समझ आ रहा था कि धर्म सिर्फ एक बाहरी क्रिया नहीं बल्कि निरंतर अशुभ से दूर होकर शुभ में प्रवृत्त होने से होता है। मुनिश्री मन की शुद्धता–पवित्रता पर बहुत जोर देते थे, कई बार हम लोग प्रश्न करते कि हमें जनकल्याण के कार्य जैसे school और hospital आदि ज्यादा करना चाहिए, तो वे सहज ही उत्तर देते कि बड़ी बड़ी योजनायें अक्सर विफल हो जाती है इसलिए हमें अपने स्तर पर जरूरतमंद लोगों की मदद करते रहना चाहिए और इस तरह छोटी सी शुरुआत भी हम कर सकते हैं।

उनका व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा था, सुकोमल वाणी पर कठोर चर्या के धनी, सरल पर विशाल हृदय के स्वामी श्रेष्ठ कवि, विचारक और जैन वैज्ञानिक, उनकी विशेषताएं बताने के लिए ये सारे विशेषण भी कम हैं। मुझे गुना के अतिरिक्त भी कई और जगह उनके दर्शन का सौभाग्य मिला और अपनी शिक्षा सम्बंधी चर्चा भी हुई । दो तीन वर्षों के प्रयास के बाद भी जब मुझे public administration exams में सफलता नहीं मिली तो मंडी बामोरा में गुरुवर से बात करके मैंने आईटी में जाने का निर्णय लिया और वो मेरे जीवन का सबसे बडा मोड़ था। मेरा छोटा भाई जो दो तीन बार प्रयास के बाद भी PMT में नहीं निकल पाया था उसने भी मुनि श्री से मार्गदर्शन के बाद उत्साह के साथ MP PMT ही नहीं बल्कि Raj PMT, CPMT करके MCH भी clear किया, ये सब उनकी प्रेरणा का ही असर था। मुनिश्री M.Tech करने के बाद जब अपने कैरियर की ऊँचाइयों पर थे तब वे आसानी से कहीं भी अच्छी नौकरी करके सुखी जीवन बिता सकते थे, पर उन्होंने वो रास्ता चुना जो करोड़ों लोगो में बिरले ही चुनते हैं। उन्होंने वीतरागता और रत्नत्रय रूपी मोती चुनकर सिद्ध शिला पर जाने का मार्ग चुना और लोगों को सांसारिक जीवन की नश्वरता का दर्शन कराया। उन्होंने इतना असाध्य रोग और पीड़ा होने के बावजूद भी दिगंबर मुनि धर्म की चर्या को कम नहीं होने दिया, बल्कि वो असीम ऊँचाइयाँ प्रदान की जो सबके लिए एक प्रेरणा हैं।

काफी लम्बे अन्तराल के बाद मुझे कुछ माह पूर्व उनके दर्शन का मौका मिला, उन्हें इस अवस्था में देखकर बहुत तकलीफ हुई, मुनि श्री ने उसी सहज भाव से मुस्कुराते हुए आशीर्वाद दिया, बच्चों को पेन दिया और मुझे जैनेन्द्र जी की पुस्तक पढ़कर सुनाने को कहा। बहुत अच्छे लगे वो पल। इतने शारीरिक कष्ट भी उनकी आत्मिक शांति को भंग नहीं कर पाए यही उनकी हमारे लिए सबसे बड़ी सीख है। उनके समाधिमरण के समाचार से हृदय पीड़ा से भर गया और अब उनके दर्शन की उम्मीद भी टूट गई। मुनि श्री ने तो अपना लक्ष्य पा लिया, उनकी भाई हुई भावना मेरी भावना बन जाये, यही मेरी विनयांजलि है।

–कपिल जैन, बैंगलौर

संवेदनशील साधु

महाराज श्री क्षमासागर जी में आचार्य विद्यासागर जी जैसी ही योग्यता, सरलता, गंभीरता, त्याग और अनुशासन पूर्ण रूप से देखने को मिलता था। मुनि श्री क्षमा सागर जी महाराज जी अत्यंत संवेदनशील प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनके प्रवचनों कि सरल शैली अपने आप सामान्य व्यक्ति को भी समझ में आ जाती थी। क्षमासागर जी जैसे विरले साधु के चरणो में शत्–शत् नमन। **–धन्नालाल जैन**

गुरवः पान्तु नो नित्यं, ज्ञानदर्शननायकाः।
चारित्रार्णवगम्भीराः, मोक्षमार्गोपदेशकाः।।

अनादिकाल से संसार में निमग्न आत्मा को मोक्षमार्ग अभीष्ट होता है। मोक्षमार्ग में लगने के लिए मुनिपना अनिवार्य है। जिस तरह श्वासों से जीवन की डोर बंधी होती है उसी तरह मोक्षरूपी लक्ष्य प्राप्ति के लिए मुनिपना आवश्यक है। चिंतामणि रत्न के समान दुर्लभ यह मुनिमुद्रा सामान्य मनुष्यों के लिए दुर्लभ है। इसे तो कोई अनुपम पुण्यशाली निकट भव्य ही धारण कर पाते हैं।

जिनवाणी के सिद्धांतों को जीवंत रखने वाले

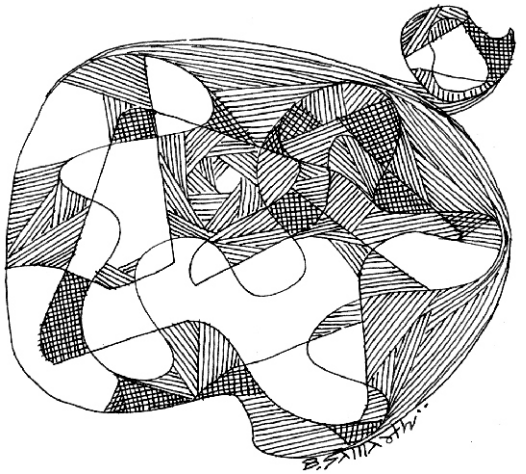

एम.टेक. जैसी उच्च शिक्षा प्राप्ति के बाद भी आपको मन में कुछ खालीपन सा लगता था। जिसके द्वारा हजारों लाखों लोगों का जीवन सुधारने जैसा महान कार्य होना हो, भला उसका मन संसार में कैसे रम सकता है? मन के इसी अन्तर्द्वन्द्व को बल मिला गुरुदेव आचार्य श्री विद्यासागर जी के दर्शन एवं सानिध्य पाकर। प्रथम दर्शनोपरान्त ही गुरु का स्वरूप अन्तर्मन में रम गया तथा उनके जैसे ही बनने की इच्छा बढ़ती गई जिसे मूर्त रूप मिला सन् 1980 में, जब गुरूदेव के करकमलों से सिद्धक्षेत्र नैनागिरी में क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की गई।

पूज्य मुनि श्री ने गुरु सानिध्य पाकर उनके ही आशीर्वाद से जिन श्रुत का गहन अध्ययन किया। प्रत्येक पल सार्थक चिन्तन करते रहना एवं तद्नुरूप कविताओं की रचना करना आपके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग था। आपकी कविताएँ आपके इसी गुण का उद्घोष करती हैं। प्रवचनों के दौरान जब आप अपनी मधुर वाणी में कविता सुनाते थे तो जनसामान्य चुम्बित चित्त होकर आपके शब्दपाश में बिंध जाता था। जब आप प्रवचनों में आगम के गूढ़ रहस्यों को भी जनसामान्य के समक्ष अत्यन्त सरलता से उपस्थित करते थे, तो श्रोतागण धन्य हो उठते थे। जीवन में घटने वाली छोटी–छोटी घटनाओं में जैन सिद्धांतों को घटाकर मानो आप जिनवाणी के सिद्धांतों को जीवन्त कर देते थे। आपकी लेखनी से निस्सरित महान कृतियां यथा कर्म कैसे करें, अमूर्त शिल्पी, आत्मान्वेषी, पगडंडी सूरज तक, मुनि क्षमासागर की कविताएं, अपना घर, एकीभाव स्त्रोत इत्यादि आपके व्यक्तित्व के विविध आयामों की परिचायक हैं।

मुनिश्री श्रमण चर्या की जीवन्त प्रतिमूर्ति थे। अशुभ कर्मोदय से प्राप्त विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य धारण किस तरह करें यह उनके जीवन से सीखा जा सकता है। विगत 10 वर्षों से शरीर के व्याधिग्रस्त हो जाने के बावजूद आप धीरतापूर्वक श्रमणपथ की साधना करते रहे तथा गुरु द्वारा आरोपित 28 मूल गुणों में रंचमात्र भी शिथिलता नहीं आने दी। सामायिक, वन्दना, आहारचर्या, ध्यान इत्यादि आवश्यकों को निरतिचार पालना आपने अन्तिम श्वास तक किया।

पूज्य मुनिश्री को प्रारम्भ से ही शिक्षा क्षेत्र से गहरा लगाव था। स्वयं उच्च शिक्षित होते हुए आप हमेशा विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु मार्गदर्शन देते रहते थे। आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को सम्बल प्रदान करने हेतु विविध छात्रवृत्ति योजनाओं की जानकारी आदि देकर उन्हें चिन्ता मुक्त करते रहते थे। आपने अद्भुत प्रतिभाशाली छात्रों को मैत्री समूह के

माध्यम से यंग जैन अवार्ड के द्वारा प्रोत्साहन दिलाया। उपर्युक्त प्रयासों के फलस्वरूप इन छात्रों में से आज कई विभिन्न शासकीय तथा अशासकीय क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। यह सब पूज्य मुनिश्री द्वारा शिक्षा क्षेत्र को दिये गये उनके अप्रतिम योगदान की ही कहानी है।

मुझे अपने जीवनकाल में बहुत बार पूज्यश्री के दर्शन करने तथा आहारादि चर्या कराने का महत सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके दर्शनों से मन इतना आह्लादित हो जाता था कि जितनी बार दर्शन करने जाती थी, हर बार एक अतृप्ति मन में रह जाती थी तथा वापस आने का मन नहीं होता था। हर बार कुछ नया सीखने को मिलता था। पूज्यश्री हमेशा कहते थे कि छात्र देश व धर्म का भविष्य है, ये आने वाले कल के श्रावक तथा श्राविकाएं हैं, अतः इनके अध्ययन में रुकावट नहीं होनी चाहिये। मैंने हर समय मुनिश्री के पास छात्र–छात्राओं की भीड़ लगी देखी। पूज्य महाराज जी पेन, पेन्सिल, रबर इत्यादि बड़े ही वात्सल्य के साथ उनको देते थे, तब उनके मुखमण्डल पर एक अलग ही चमक दृष्टिगोचर होती थी।

जैन जगत का यह श्रमणसूर्य अपनी जन्मस्थली सागर में ही 13 मार्च 2015 को ब्रह्ममुहूर्त में इस पर्याय को छोड़कर अस्ताचल को प्राप्त हो गया। वे अपनी कविताओं में कहते थे –

यात्रा पर निकला हूँ,
लोग बार–बार
पूछते हैं, कितना चलोगे
कहाँ तक जाना है
मैं मुस्कराकर
आगे बढ़ जाता हूँ,
किससे कहूँ,
कि कहीं तो नहीं जाना,
मुझे इस बार
अपने तक आना है।

मैं उन महामना के पावन चरणों में नमोस्तु अर्पित करते हुए श्री वीर प्रभु से यही भावना भाती हूँ कि अनादि से सतत् प्रवाहमान जन्म–मरण की इस यात्रा को छोड़कर शुद्ध आत्मतत्त्व की प्राप्ति पूर्वक अपने परम लक्ष्य मुक्तिरमा का वरण करें।

–सुशीला पाटनी, (मदनगंज) किशनगढ़

जब याद करोगे पास पाओगे

हम सभी यंग जैन अवार्डी आज महाराज श्री के आशीर्वाद के कारण लगातार ऊँचाइयों को प्राप्त कर रहे हैं, उनके जैसा लगातार प्रोत्साहित करने वाला संत हो नहीं सकता, बच्चों से इतना प्रेम था कि उनके लिए उनके पास समय ही समय था, कोई कहीं से भी आया हो, पूर्व परिचय हो या न हो...सबसे परे... इतनी आत्मीयता...क्या कहा जाये !!

जब मुझे 2008 में श्रीपद्मपुरा जी में अवार्ड के लिए बुलाया गया था, तब पूज्य गुरुवर का स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण पदमपुरा जी में उनका सानिध्य नहीं हो पाया था, लेकिन अवार्ड समारोह में इतनी अच्छी व्यवस्था की गई थी कि मुनि श्री जी ही हर तरफ दर्शन देते प्रतीत हो रहे थे, हर कार्यक्रम, हर पल उनका सानिध्य जैसे था

उस समारोह के बाद पूज्य मुनि श्री जी के दर्शनार्थ गया था, तब मुनि श्री जी से चर्चा के दौरान कहा कि गुरुजी आपके दर्शन की हर दिन इच्छा होती है, पर आना कभी कभी हो पाता है, कुछ ऐसी व्यस्तता लग जाती है कि कभी कभी लंबा अंतर पड़ जाता है। तब गुरुजी ने कहा....अरे भाई किसने कहा कि मै तुमसे दूर हूँ, मैं तुम सबके पास हूँ, जब भी याद करोगे अपने पास पाओगे, कभी अपने आप को इस बात के लिए दोष मत देना कि आ नहीं पाए, बल्कि समझ जाना कि तुम्हारे गुरुजी तक तुम्हारी भावना पहुँच गई है। एक बात और उन्होंने मुझसे कही थी–छोटों को देखकर जियो और बड़ों को देखकर बढ़ो, अच्छे के लिए प्रयास करो और बुरे के लिए तैयार रहो, अच्छे के लिए प्रेरणा दो...अच्छा बनना.... खूब पढ़ना...मन लगाकर पढ़ना...

– अनिमेष कुमार जैन, भोपाल

भगवान पार्श्वनाथ ऐसे तीर्थंकर हैं जिनकी मूर्ति देश–विदेश के सभी जिनालयों में सुधी–श्रावक को पूजन के लिये आकर्षित करती है। यह भी किसी से छिपा नहीं है कि अधिकांश जिनालयों के मूल नायक भगवान पार्श्वनाथ हैं। संसार सागर को स्वयं पार करने तथा दूसरों को पार कराने वाले तीर्थंकर कहलाते हैं। प्रत्येक काल में यह 24 होते हैं। सभी तीर्थंकर के मूलगुण और लक्षण एक से ही होते हैं। आदिनाथ–शांतिनाथ–पार्श्वनाथ नाम भले ही भिन्न–भिन्न हों किन्तु लक्षण, पंचकल्याणक, गृहस्थावस्था में अवधि ज्ञान, शरीर की विशेषताएं आदि सभी की एक सी होती हैं फिर तीर्थंकर पार्श्वनाथ को यह विशिष्टता क्यों है ? भगवान पार्श्वनाथ के गत 10 भव पूर्णतः उपसर्गों से परिपूर्ण हैं। भगवान ने इन उपसर्गों पर सदा विजय पायी है और इसलिए दिगम्बर और श्वेताम्बर आम्नाय में उन्हें विभिन्न विशेषणों से भूषित किया जाता है। कहा जाता है कि दृढ़ता, सहनशीलता, संघर्ष और अडिगता जीवन के मूल्यों को प्रमाणिकता प्रदान करते हैं।

मुनि क्षमासागर जी आचार्य विद्यासागर जी के संघ के शीर्ष मुनि थे जो हित–मित और प्रिय वाणी के माध्यम से जन–जन को धार्मिक और सद्भाव, समन्वय तथा अध्यात्म के विज्ञानीकरण एवं विज्ञान के अध्यात्मीकरण का व्यावहारिक एवं प्रभावी संदेश देते थे। इनकी सरल, हृदयस्पर्शी वाणी, श्रोता के मन को छू लेती थी। वे आगम सिद्धांतों को सरलतम ढंग से प्रस्तुत करते और उसे सद्श्रोता को आत्मसात करने के लिये प्रेरित करते थे। जयपुर चार्तुमास में ''कर्म कैसे करें'' पर उनका यह उद्बोधन –एक जीवन शैली की अनुपम व्याख्या है।

कविहृदय मुनि क्षमासागर ने चिड़िया, नदी, समुद्र, सूरज, वृक्ष को नायक/प्रतीक बनाकर अनेक आध्यात्मिक संदर्भों में कविताओं का सृजन किया है। यह कविताएँ सरल, सहज हैं, परन्तु सरलता, सहजता गहरी और निर्मम है। कवि की सूक्ष्म अंतर्दृष्टि समकालीन जीवन स्थितियों में आर–पार की स्थिति निर्मित करती है।

मुनि क्षमासागर में वैराग्य तो बचपन से था। आचार्य श्री के समक्ष अचानक समर्पण 23 वर्ष की वय में क्षुल्लक, ऐलक और अंततः मुनि दीक्षा 25 वर्ष की आयु के पूर्व ही प्राप्त कर ली थी। उनका लक्ष्य उन्हीं के शब्द में –

'ये मंदिर
इसलिए कि हम
आ सकें
बाहर से
अपने में भीतर
ये मूर्तियां
अनुपम सुंदर
इसलिए कि हम
पा सकें
कोई रूप
अपने में अनुत्तर
और श्रद्धा से झुककर
गलाते जायें
अपना मान–मद
पर्त दर पर्त निरंतर
तकि कम होता जाये
हमारे और प्रभु के बीच का अंतर।'

इस लक्ष्य को उन्होंने अपनी आखरी सांस तक

पाने का प्रयास किया। कहा जाता है कि प्रकृति भी लक्ष्य और लक्षाधीश को सहज में नहीं लेती। स्वर्ण गहरी भूमि से ही अवतरित होता है। काल के प्रभाव से मुनिश्री की वाणी मूक हो गयी। शरीर जर्जर किन्तु उनकी दृढ़ता और अडिगता के सम्मुख काल भी हार गया। उन्होंने आचार्य श्री द्वारा दी गई दीक्षा के अनुरूप रत्नत्रय धर्म का पालन किया और संसारिक उपसर्गों से डटकर लोहा लिया। उनकी यह विभाव दशा मात्र कर्म सापेक्षता थी। इन गहन उपसर्गों से संघर्ष और उन पर विजय प्राप्त कर ही वे सदा के लिये मौन हो गये। उपसर्ग विजेता–क्षमासागर मुनियों में पार्श्वनाथ थे।

यह भी आश्चर्य था कि उनकी वाणी से उनके श्रद्धा और समर्पितता के प्रतीक शब्द अस्पष्ट रूप से सुनकर जनमानस उनके पुनः स्वस्थ्य होने की कामना करता था। वे अस्पष्ट शब्द थे 'आचार्य विद्यासागर महाराज की जय।' इन शब्दों के अस्पष्ट उच्चारण के उपरांत वे आशा से अधिक प्रसन्नता का अनुभव करते थे। ऐसे संघ के प्रभावक, अटल सिद्धांतों के पालक और प्रणेता, उपसर्ग विजेता क्षमासागर, भगवान पार्श्वनाथ की तरह अद्वितीय हैं, अद्वितीय थे और अद्वितीय रहेंगे।

– के. एल संघी, जबलपुर

निस्पृही संत

पूज्य 108 मुनि श्री क्षमासागर जी महाराज साधु समाज में अलग चमकने वाले दैदीप्यमान सितारे की तरह अपनी अलग पहचान बनाने वाले साधु थे। आप जन सामान्य के हृदय में बसने वाले एवं जन–जन की आस्था थे, क्योंकि आपकी सरलता, सहजता, निस्पृहता, संवेदनशीलता, बरबस ही व्यक्ति के मन को प्रभावित करती थी।

आपका जीवन भले ही कम रहा हो लेकिन जहाँ आपने अल्पकाल में कालजयी कृतियों का सृजन किया, आत्मोद्धार किया, आत्म विकास के सभी पहलुओं का प्रयोग किया वहीं दूसरों का मार्गदर्शन किया और अनेक भव्यों के प्रेरणा स्रोत बने, जिससे आप सदा जीवंत रहेंगे।

मैंने आपसे प्रेरणा लेकर आत्मशोधन नामक लघु कृति का सृजन किया जो वर्तमान में आलोचना के विविध आयामों को प्रकट करती है। आपकी चिंतन शैली, विचार एवं आगम के विविध प्रयोग सटीक, सम्यक् एवं प्रेरक होते थे। आपसे 21 दिन का ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया, तब आपने कहा था कि भैया, यह व्रत शरीर से तो पल जायेगा किन्तु मन से पल जाये तो अच्छा है। आपके प्रेरक वचन आज भी मेरे हृदय पटल पर अंकित हैं जो जीवनान्त रहेंगे।

आपकी सरलता आगम के गूढ़ रहस्यों को सहज ही उदघाटित कर देती थी। आपके प्रवचन की शैली प्रदर्शनकारी नहीं अपितु नैसर्गिक एवं हृदय की गहराइयों से निकलकर श्रोता के मन को स्पंदित करती थी।

मैंने आपसे प्रभावित होकर अपने जीवन में अनेक परिवर्तन किये। आप हमारे प्रेरणापुंज जीवन भर बने रहेंगे। स्वयं संवेदना का अनुभव करने वाले और दूसरों को संवेदनाओं की गहराइयों तक ले जाने वाले निस्पृही सरलता की प्रतिमूर्ति मुनि श्री के चरणों में शत्–शत् नमोस्तु निवेदित करता हूँ।

–पं. सनत कुमार, विनोद कुमार , (सागर)

• जीना सिखाते रहेंगे •

"What he was and who he was?" Only the ones who got the chance to come into the contact of that great soul can understand this. My heart is not ready to accept. It just wants to believe that he is still here - हमारे साथ हैं, हमारे पास हैं और हमेशा रहेंगे। हमें inspire करते रहेंगे। हमसे प्यार करते रहेंगे, हमें हँसाते रहेंगे, और हमेशा की तरह हमें जीना सिखाते रहेंगे।

– शुभिता जैन, जयपुर

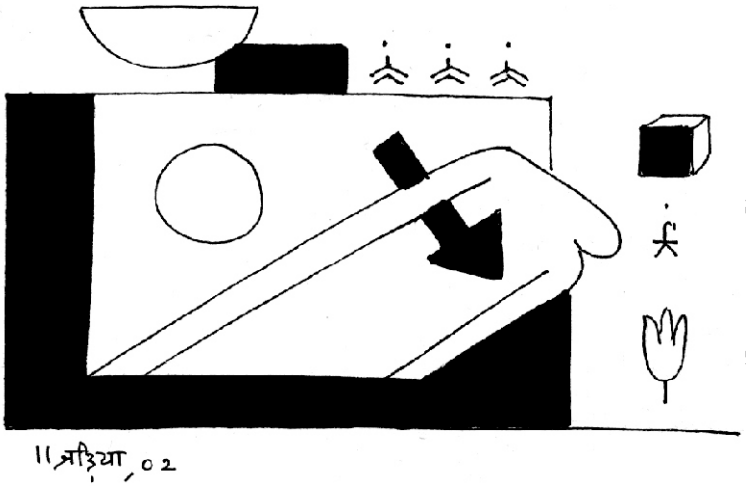

अद्वितीय संत

13 मार्च 2015, प्रत्यूष वेला, तिथि शाश्वत पर्व अष्टमी (चैत्र कृष्ण), भगवान शीतल नाथ जी का गर्भ कल्याणक, स्थान अतिशय क्षेत्र मोराजी सागर म.प्र. – पूज्य मुनि श्री क्षमासागर जी का 'महाप्रयाण' – सागर की लहरें कुछ क्षणों को जैसे थम सी गईं। एक महाविराट और बहु आयामी व्यक्तित्व काल चक्र की विराटता में 'धीमे धीमे चलकर–क़दमों की आवाज़ किये बिना'– चिर विलीन हो गया। मन–मंथन चल रहा है कि किन शब्दों में विनयांजलि संजोऊँ। क्या बेजान शब्दों में इतनी सामर्थ्य है कि उस जीवन्त महामानव के चहुँमुखी विराट व्यक्तित्व को कागज़ पर उकेर सकें ? सचमुच में आज शब्द बौने प्रतीत हो रहे हैं, जैसे शब्दों ने घुटने टेक दिए हों, पूज्यश्री के विशाल और विराट व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्मुख!

मुनिश्री एक महान विद्वान, शिक्षा प्रेमी, सरल–हृदय, बच्चों के चहेते, बाल–वृद्ध–सभी को मोहित/प्रभावित करने वाले, सुदर्शन व्यक्तित्व के धनी, विनम्र, सहृदय और अति संवेदन शील कवि, दार्शनिक, प्रखर प्रज्ञावान, विज्ञान और धर्म के गहन जानकार और उनके समन्वय कर्ता, दृढ़ निश्चयी, सुव्यवस्थित और अनुशासित चर्या प्रिय, अद्भुत और पूर्ण समर्पित गुरु भक्त थे। सारे भाषागत विशेषण उनकी ऊंचाई को स्पर्श करने में स्वयं को असमर्थ पा रहे हैं। ऐसे में हम उनके विरले और अद्भुत व्यक्तित्व को शब्दों में बांधे तो यह धृष्टता ही होगी। उन्हें तो दिलों की अतल गहराइयों में महसूस ही किया जा सकता है। पूज्य क्षमासागर जी ने व्यक्ति को जीवन के शाश्वत मूल्यों के साथ ''जीने की कला''सिखलाई। व्यक्ति अपनी चेतना को कितने ऊँचे स्तर तक ले जा सकता है – विपरीत से विपरीत परिस्थिति में भी – उन्होंने यह जीकर दिखलाया। उनका जीवन अत्यंत अनुशासित और बालकवत् सरल/निश्छल था। उन्होंने युवाओं की ऊर्जावान नब्ज़ पहचानी और देखते ही देखते उनकी एक सुसंस्कृत, सुसंगठित और समर्पित फ़ौज़ देश –विदेश में खड़ी कर दी जो जैन धर्म की ध्वज वाहक सिद्ध हो रही है। बच्चों और युवाओं की प्रतिभाओं को सम्मानित, परिष्कृत और धर्म से जोड़ने हेतु उन्होंने यंग जैना अवार्ड स्थापित कराकर एक नूतन क्रान्ति का सूत्रपात किया।

आदर्श उद्देश्यों के उन्नयन हेतु ''मैत्री समूह'' स्थापित करने की प्रेरणा दी जो आज अपनी पूर्ण क्षमता के साथ कार्यरत है। मैत्री समूह का हाथ थामकर अनेक युवा सुचयनित जीवन चर्या के साथ अपनी जीवन यात्रा में संतुष्टि के साथ अग्रसर हैं।

मुनिश्री ने विद्वत्ता और विद्वानों, विज्ञान और वैज्ञानिकों का सम्मान कराकर विभिन्न विषयों पर कई परिचर्चाएं/गोष्ठियाँ कराकर धर्म और विज्ञान की अपरिहार्यता को इस अनूठे अंदाज़ से दैनिक जीवन से जोड़ा कि वह एक मिसाल बन गया। उनका प्रस्तुतीकरण अकाट्य और स्थापित तथ्यों से ओतप्रोत होता था।

मुनिश्री की प्रवचन शैली सीधी,सरल और ह्रदय स्पर्शी थी। सम्पूर्ण प्रवचन सभा का मुनि श्री के प्रवचनों के साथ अंतर्मन से ऐसा तादात्म्य स्थापित होता था कि लगता था – दोनों ही कथ्य को एकसाथ ह्रदय की अतल गहराईयों से जी रहे हैं। पूज्य श्री के दर्शन मात्र से सारी भटकनों का अंत हो जाता था, ''जीवन के अनसुलझे प्रश्न'' सुलझ जाते थे, ''कर्म कैसे करें'' का ज्ञान/भान हो जाता था। और घर–परिवार, नौकरी–व्यापार/व्यवसाय में रहते हुए भी ''अच्छा जीवन'' जीने की राह आसान हो जाती थी।

हर व्यक्ति प्रथम दर्शन के साथ ही इस गहन आत्म–विश्वास के साथ जुड़ता था कि उसे वांछित ठिकाना मिल गया है। मुनिश्री से जुड़े हर व्यक्ति के जीवन में हज़ारों सुखद व अनोखे क्षण अनुभव में आये हैं /घटित हुए हैं। उन अविस्मरणीय अनुभूतियों को शब्दों में पिरोना आसान नहीं। वह सब एक अव्यक्त सुखद एहसास है।

जब तक वाणी और नश्वर देह ने साथ दिया, उन्होंने कठोर अनुशासन के साथ जीवन सरल और धर्ममय बनाने का सन्देश देश भर में विहार करते हुए दिया। और जब वाणी मौन हुई तो भी उनकी अद्भुत, जीवटपूर्ण और जीवंत चर्या अनवरत सन्देश देती रही। आचार्य श्री विद्यासागर जी के अथाह सागर का यह अनमोल मोती हम सबको एक बेहतर इंसान बनने की सतत प्रेरणा देता रहेगा।

–राजकुमार जैन, बिलासपुर

सागर का मोती

सागर का मोती सागर में समा गया
सीप का मोती बन क्षेत्र विदेह चला गया।

जन्म लेकर नर काया में कमाल कर गया
सागर का लाल जग में नाम कर गया।

वह माँ का लाड़ला जग की आँखों का तारा बन गया
कर्म सिद्धांत की व्याख्या हमें दे गया
जीवन नश्वर है पर संकल्प अमर कर गया।

–नीता जैन, मुंबई

जीवन का औचित्य निस्वार्थ प्रेम

आज का दिन अमर हो गया एक ऐसे व्यक्ति की पुण्यतिथि बनकर जिसने ना जाने कितने भटके हुओं को किनारा बताया, ना जाने कितने अंधों को उजाला दिखाया और ना जाने कितने सोये हुओं को नींद से जगाया। ये सत्य है कि अंत देह का होता है आत्मा का नहीं, परन्तु ये भी सत्य है कि उसी अनादि कालीन आत्मा की कोई पर्याय अपनी विशेष उपलब्धियों के कारण विशिष्टता को प्राप्त हो जाती है। मुनि क्षमासागर जी की यह पर्याय भी ऐसी ही है। मुनिश्री के गुणों के वर्णन करने का असफल प्रयास करना, यहाँ मेरा उद्देश्य नहीं है, अपितु मेरा उद्देश्य तो यह सुनिश्चित करना है कि कैसे हम उनको जीवंत रख सकें ?

मुनिश्री का जीव तो अभी देव पर्याय को प्राप्त है और अतिशीघ्र परम पद को भी प्राप्त होगा, परन्तु हमारा प्रयोजन तो उनके विचारों से है, जिनके माध्यम से हम उनको अपने बीच महसूस कर पाएंगे। क्षमासागरवाद एक ऐसी विचारधारा है जो अपने जीवन के शाश्वत् मूल्य को पहचानने की बात करती है। यह बतलाती है कि जीवन का कहीं कोई औचित्य है तो वह मात्र निस्वार्थ प्रेम में है। जिसकी ऐसी मान्यता है कि ठगाए जाने में कोई बाधा नहीं, हमें तो यह ध्यान रखना है कि हम किसी और को ना ठग लेवें। अपनी चेतना का विकास ही इस विचारधारा का सार है और क्षमासागर को जिन्दा रखने का एकमात्र उपाय भी। हमें चाहिए कि हम मुनिश्री को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। औरों को भी इन महान विचारों से अवगत कराएं। हम एक दूसरे का सहारा बनें इस विचारधारा को और गहराई तक समझने के लिए। आपसे अनुरोध करता हूँ कि जो कुछ आपने महाराज जी से सीखा, अपने जीवन में उतारा, उसको सबके बीच साझा करें। गर्व से कहें कि हम क्षमासागर के अनुयायी हैं, हम महावीर के अनुयायी हैं।

–अंकित कुमार जैन, वाराणसी

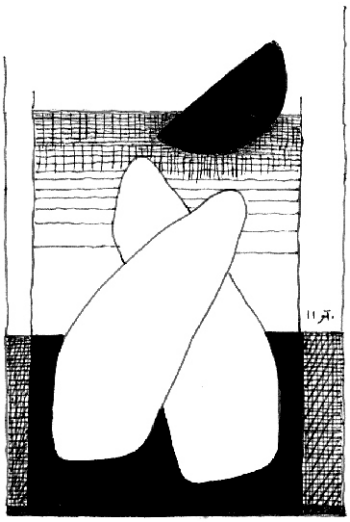

हे चंद्र
विमान में रहने वाले
देवता, क्या आप मुझे मेरे
गुरुदेव की खबर ना देंगे,
बस एक बार...
बस एक बार..
वो कैसे हैं? कहाँ हैं?
क्या कर रहे हैं?

मैं हमेशा रहूँगा...

आज सुबह पहला संदेश मिला कि आप नहीं रहे। वैसे तो आपने बहुत सिखाया कि मैं हमेशा रहूँगा, पर क्या करें! आज आपके जाने के बाद आपसे बात करने का बहुत मन कर रहा है। वर्षों बीत गये जब हम सबको आपकी आखरी बार आवाज सुनने मिली थी। जैसे आप असीम थे, वैसे ही आपकी व्याधि और पीड़ा भी असीम थी, पर क्या हरा सकी वो आपको? अरे कहाँ! आपकी सहनशक्ति, समता और संयम भी तो असीम थे, इसलिए आज वो सारी बीमारियाँ भाग गयी।

आप जैसे मुनिराज ने बताया था, कि तपस्वी मुनिराज देह अवसान के बाद कहाँ मिलते हैं? अब आप हमारे बीच तो नहीं दिख रहे, जिनवाणी माँ ने बताया था और लोग भी बोले की स्वर्गवास हो गया।

देवताओं से ही ले लूँ आपकी खबर, पर यहाँ कोई नहीं दिखता। अरे हाँ, ये किसी का घर है, हे चंद्र विमान में रहने वाले देवता, क्या आप मुझे मेरे गुरुदेव की खबर ना देंगे, बस एक बार...बस एक बार.. वो कैसे हैं? कहाँ हैं? क्या कर रहे हैं? बताइए ना? ढूंढ लीजिए, कहीं आपके आस पास ही स्वर्ग में, कुछ समय पहले ही उनका जन्म हुआ होगा।

चंद्र विमान के देव ––ठीक है, ढूंढता हूँ....यहाँ तो कोई नहीं दिख रहा, अरे, पूछो ना, अपने साथियों से, शायद किसी और ने देखा हो, ऊपर के स्वर्गों में देख लो। हमारे गुरुदेव की तपस्या उत्कृष्ट थी, उनके 58 वर्ष के जीवन में, उन्होंने किसी जीव को कष्ट नहीं पहुँचाया, लाखों को सही रास्ता और जीवन जीना सिखाया, आज वो हम सब को छोड़ कर चले गए पर उनके द्वारा जलाया गया दीपक, हम सब के जीवन में आज भी उजाला कर रहा है। वो जरूर ऊपर के स्वर्गों में होंगे, पूछो ना किसी से हे देवता?

चंद्र विमान के देव ––हाँ हाँ, ये लोग बता रहे हैं, कुछ समय पहले हुआ था, एक बेहद खूबसूरत देवता का जन्म, जिनका हँसता हुआ चेहरा, आज हमारे स्वर्ग लोक में उत्सव कर गया। बहुत समय बाद ऐसे अनोखे देव का जन्म हुआ है। उनकी आवाज बहुत सुरीली है.आज जब अकृत्रिम चौत्यालय में जाकर उनने भक्ति की, तो सारा स्वर्ग लोक नाच रहा था। हाँ हाँ, वही हैं मेरे गुरुदेव, मुनि श्री क्षमासागर जी महाराज। सही पहचाना आपने, आज उनकी बहुत याद आ रही है, बताओ ना फिर वो कहाँ गये मंदिर के बाद?

अभी यहाँ दिख रहे हैं , मेरे सामने ही हैं, वे नीचे नहीं आ सकते ना, इसलिए अपने गुरुदेव को, आचार्य श्री विद्यासागर जी, जिनके रोज हम सब दर्शन करते हैं, उन्हे नमोस्तु कर रहे हैं। उनका मन मचल रहा है, गुरु चरणों की रज पाने को, फिर से संयम धारण करने को, मुनिराज बनने को। पर क्या करें, पुण्य की बेड़ियों ने बाँध रखा है, उन्हें कुछ अच्छा नही लग रहा, ये स्वर्ग का वैभव, ये दिव्य वस्त्र, आभूषण। फिर देखने को मन हुआ, अपना पुराना घर (शरीर)। ये तो भजन गुन गुना रहे हैं, हे चंद्र देवता! हमें भी सुनना है गुरु की आवाज। चंद्र देवता–करो तुम भी इन जैसी अनूठी तपस्या और आ जाओ इनके पास।

'आगे आगे अपनी अर्थी के मैं गाता चलूँ, सिद्ध नाम सत्य है'

अरे चंद्र देवता, तुम तो खो गये..बताओ ना हमारे मुनिराज अब कहाँ जा रहे हैं..वो तुम्हारे जो पुराने मुनिराज हैं ..आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी, आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी, आचार्य श्री शांति सागर जी, उनसे

मिल रहे हैं और हो गयी इनकी चर्चाएं शुरू, अब जो चलती रहेंगी, वर्षों तक, सागरों तक, सो मैं चला...

ये लोग बात कर रहे हैं, सभी नंदीश्वर द्वीप की वंदना और विदेह क्षेत्र में समवशरण में जाने की planning कर रहे हैं। निरोगी, सुखी हैं तुम्हारे गुरुदेव, अब तुम निश्चिन्त होकर, धर्म ध्यान और तप करो, जिससे हमेशा इनके साथ रह सको। हम सब तो धन्य हो गये, तुम्हारे गुरु को पाकर।

धन्यवाद देवता, आज तुमने निश्चिन्त कर दिया और अपने आत्म कल्याण के लिए जागरूक कर दिया ये कारण देकर। अब तो हम मुनि श्री के पास आने की पूरी तैयारी करेंगे, संयम धारण कर, मोक्ष मार्ग पर चल, उनके पद चिन्हों पर चलकर।

–सुवि जैन, हैदराबाद

ऐसा क्या हुआ

पिछले कुछ दिनों से
लगता है जैसे सृष्टि
चल तो रही है,
उसी क्रम से
पर अब न चिड़िया गीत गाती है,
न सूरज जागने को कहता है,
न वृक्ष प्रसन्नता बिखेरते हैं,
न नदी लहराती है,
सागर कब से बस यूँ ही मौन है,
नन्हीं बदली अब भी बरसती तो है,
पर खुशी से नहीं,
पर्वत अडिग वहीं खड़े हैं पर
अत्यन्त गंभीर हो गए हैं,
ऐसा क्या हुआ है, आखिर
जो प्रकृति के ये सारे प्रहरी
उदास से प्रतीत होते हैं!
एक दिन जब मैंने
चिड़िया से पूछा तो उसने उदास होकर कहा!
किसके लिए गाएँ, कौन सुनेगा हमें?
अब हमें सुनने, समझने वाला
इस दुनिया से अलविदा कर गया है...

–सपना जैन, अहमदाबाद

पग धारे उस पगडंडी पर

सागर में जनमे तुम,
मोती से चमके तुम।
सब कुछ सहज स्वाभाविक था,
सागर का नाम ही रत्नाकर है।

'जीवन' की 'आशा' ने
जन्म दिया तुमको
भर दिया जिजीविषा से
जन–जन के मन को।

नामकरण हुआ 'वीरेन्द्र कुमार'
यथा नाम तथा गुण
सचमुच तुम वीरों में इन्द्र हो।

तुमने युद्धक्षेत्र में
जीता नहीं दूसरों को
जीता है अपने ही चंचल मन को
बेलगाम भागती इन्द्रियों को।

नैनागिरि में नैन खुले,
विद्या के सागर मिले
डूबे उतराये तुम,
समा लिया सागर को अपने में
बन गये 'क्षमासागर'
यह तो होना ही था, 'विद्या ददाति विनयं'।

'आत्मान्वेषी' बन पग धारे उस पगडंडी पर
जो सूरज तक जाती है,
'अमूर्त शिल्पी' की तलाश में।
पाथेय बना 'एकीभाव'
चरैवेति, चरैवेति, चरैवेति।

पावन चरणों में झुकता है मेरा मन।
शत्–शत् नमन लो, वन्दन–अभिनन्दन लो।
बन जाऊँ तुम सा मैं, पूर्ण करो आकांक्षा।

–मालती जैन, मैनपुरी

आप हमारे अरिहंत भईया हो

जीवन भर जिसने मौत के गीत गुनगुनाए, अपनी हर साँस में मृत्यु से साक्षात्कार करता वह देवता, जिसने स्वयं सुना मृत्यु की आहट को हर पल, और इसलिए जो सदैव रहा सजग और सहज, अनवरत् चलता रहा – जीवन और मृत्यु के बीच पगडंडी बनाकर।

मुझे याद है वह पावन दिन मुनिश्री की समाधि से केवल दो दिन पहले ही 10 मार्च 2015 को सातिशय पुण्ययोग से मुझे गुरू दर्शन का अवसर मिला। मैंने देखा कि मृत्यु को आमंत्रण देता वह साधक सचमुच कितना जागृत है, पूरी तैयारी के साथ अपनी साधना की गहराईयों से हर क्षण जो मृत्यु को आमंत्रण देता सा प्रतीत हो रहा था।

शरीर से अत्यधिक निर्बल सा प्रतीत होता वह क्षपक, आत्मा से इतना अधिक बलवान नजर आ रहा था कि मृत्यु भी उसे अपने साथ ले जाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी। बाहर से अचल पर्वत की तरह ठहरे हुए वे मुनि क्षमासागर अपने अन्तस् में गुरूभक्ति का दीप जलाए सतत् प्रयाण करते जा रहे थे, मुक्ति पथ की ओर।

लोग आ रहे हैं, जा रहे हैं, श्रद्धालुओं का तांता लगा हुआ है। सभी अपनी भीनी आँखों से गुरू को नमोस्तु अर्पित कर रहे हैं। गुरू की पीड़ा देखी नहीं जाती भक्तों से, वे चूँकि उस पीड़ा को कम तो नहीं कर सकते इसलिए भक्ति के आंसुओं

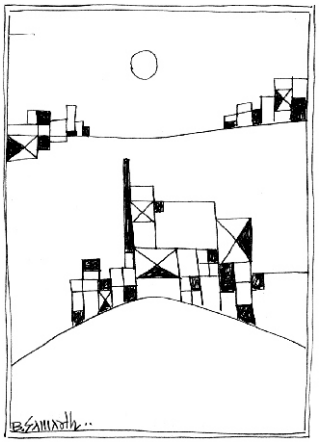

से उस निष्ठुर कर्मरूपी रजकण को धोने का निरर्थक प्रयास कर रहे हैं। वाकई कोई चमत्कार हो जाए और हमारे प्रिय मुनि क्षमासागर जल्दी स्वस्थ हो जाएँ।

ये विचार शिष्यों का है, लेकिन क्षपक को कहाँ शरीर की सुध है? उन्हें तो अपनी अमूल्य साँसों का मूल्य पता है, इसलिए वे सबके बीच होकर भी अपने में ही है। मुनिश्री को बाहर चटाई पर लिटाया हुआ है, उन्हें प्रतिक्रमण सुनाया जा रहा है, हाथ में माला देकर जाप कराई जा रही है। रंगपंचमी का वह दिन जब सभी भौतिक रंगों से शरीर रंग रहे हैं, वह महान तपस्वीराज कर्मों के साथ होली खेलते हुए, उन्हें ध्यान–अग्नि से स्वाहा करते जा रहे थे। गुरू की शांत और सौम्य मुद्रा में इतना चुंबकीय आकर्षण है– कि कोई वहाँ से हटने तैयार ही नहीं, वहीं खड़े इस आस में कि

मुझ अकिंचन पर
तुम्हारी कृपा की बारिश होगी
इसका विश्वास है मुझे...

और काफी समय बाद मुनिश्री ने अपना मुख श्रावकों की ओर किया, गुरू निहार रहे हैं अपलक दृष्टि से शिष्य अश्रुधारा बहाए जा रहे हैं। आँखों में ही सारी बातें हो रही हैं। मुनिश्री की दृष्टि जब मुझ पर पड़ी तो मैंने उनसे जोर से कहा आप हमारे अरिहन्त भैया हो, हमेशा मेरे साथ रहते हो। और लगा कि मुनिश्री भी कह रहे हैं कि हाँ रखना चाहो तो हमेशा साथ रह सकता हूँ। मैंने अपने बेटे का जो कि वहाँ महाराजश्री के सामने ही खेल रहा था, परिचय कराया, महाराजश्री ये आदिराज हैं, इसे आशीर्वाद दीजिए कि ये आपके समान ही बने। डेढ़ वर्ष के नन्हे बालक को हृदयाशीष प्रदान किया गुरू ने। गुरू के अंतिम उपदेशों को आत्मा ने हृदयांगत किया, उनकी आँखे जो कह रहीं थीं वह अनुभव शब्दातीत है। मेरा पूरा परिवार मम्मी, पापा, बहन और बच्चे सभी साथ में गुरू आशीष पाकर धन्य हुए।

उस दिन मुनिश्री की ये पंक्तियाँ सच होती प्रतीत हुईं –

अद्भुत है दर्शन
वाणी हुई गद्गद्
कंठ अवरुद्ध भीगा मन
गीले हो गए दोनों नयन
इतने जीवन्त भगवन के दर्शन से
जीवन धन्य हो गया।

– श्वेता मोदी, सपना जैन,
किरण जैन, इंदौर

दूसरे साधुओं से अलग

मुनि क्षमा सागर जी ऐसे सूर्य थे जो कभी भी अस्त नहीं होंगे। जहाँ भी जायेंगे वहीं रोशनी लुटायेंगे, सुबह से सांझ तक की यात्रा में सूर्य अपने कई रूप बदलता है, सुबह मंद–मंद मुस्कुराता है–दोपहर में गुनगुनाता है और साँझ ढलते हुये, शाम को विरह के गीत गाता है और संदेश देता है कि अब मैं जा रहा हूँ– मुझे जाते हुए देखकर तुम रोना मत। कभी मेरी मंद–मंद मुस्कुराहट का अहसास करना तो कभी मेरे खुशी के क्षणों में मेरी चरम दशा, मेरे उत्कर्ष में समय का ख्याल रखना। तुम भी मेरे जैसे गुनगुनाने लगोगे–और जब कभी तुम मेरी ढ़लती दशा को, मेरी पीड़ा का विचार करोगे तो उसमें भी एक अदम्य साहस का संचार होगा जो तुम्हें यह संदेश देगा कि दुख और पीड़ा के क्षणों में कभी घबराना मत, धैर्य रखना, क्योंकि यदि तुमने अपने ढलते समय में, कर्म सिद्धांत पर भरोसा कर लिया तो तुम फिर से मुस्कुराओगे–गुनगनाओगे, मुझे स्वयं और जगत को प्रकाशित करते पाओगे। हमें लगता है कि सूर्य ढल गया पर वह ढलता नहीं, यहीं है और अपनी आभा से जगत में रोशनी बिखेरता है। बस ऐसे थे आचार्य विद्यासागर जी महाराज के एक अद्भुत सूर्य जो जब तक यहाँ रहे अपनी ज्ञान की रोशनी में जगत को नहाते रहे और देव गति में भी उस ज्ञान सरोवर में डुबकी लगाकर अपनी आत्मा को प्रकाशित कर रहे होगें।

अदम्य शक्तिपुंज, चेहरे पर तेज, वाणी में मृदुता, आँखों में निर्दोष व्रतों को पालने की चमक, हृदय में विशालता, स्वभाव में सरलता, दया और क्षमा की प्रतिमूर्ति, ओजस्वी वाणी, गुरु के प्रति असीम भक्ति, अनुभवपरक ज्ञान की गहराई, झरनों से गिरते जल प्रताप से भी ज्यादा उजला मन, गुरु स्मरण में भींगती आँखे, अध्यात्म के रसिक, सहिष्णुता और धैर्य में पगी हुई साधना, भोली सूरत, अधरों पर मधुर मुस्कान, अहिंसा ही जिनके प्राण, कर्म सिद्धांत पर प्रगाढ़ आस्था, ना जाने कितने गुणों से वो भरे हुये थे फिर भी ख्याति लाभ पूजा और आड़म्बरों से कोसों दूर थे, एकान्त प्रिय, जिनवाणी की ललक और अपने आप में रहना ही उनकी चर्या थी– शायद इतना सब करने के बाद भी, उनकी एक और भावना थी जो एक जगह उन्होंने व्यक्त की थी कि अभी मुझे और धीरे चलना है, अभी तो मेरे चलने की आवाज आती है। वह अपने को, अध्यात्म की चादर में गहरे रंगना चाहते थे। अपने आप को और समेटना चाहते थे। इन सब विशेषताओं के बाद भी एक बात और उन्हें दूसरे साधुओं से अलग करती थी, वह थी उनकी सादगी, उनका सादगी भरा जीवन भरा जीवन। सब कुछ होने के बाद भी उनकी यही क्वालिटी, भक्तों को बरबस उनकी ओर खींचती थी। वह सही मायने में मोक्ष मार्ग के सच्चे राही थे और सच्चा राही–हीरे की तरह हमेशा चमकता रहता है।

13 मार्च 2015 को यह साधक मोरा जी में प्रातः समाधिमरण करके देव गति को प्रस्थान कर गया इस संकल्प के साथ कि जब तक कर्मों की सत्ता को उखाड़ न दूँ तब तक मैं समता रूपी धर्म को नहीं छोड़ूंगा क्योंकि कर्म जब भी परास्त हुये हैं – दिगम्बरत्व को धारण कर तप और त्याग के साथ– ध्यान रूपी अग्नि में समता धारण करते हुये ही वो परास्त हुये हैं – और हम सब लोग भी यही कामना करते हैं कि एक दिन मुनि क्षमासागर जी महाराज कर्मों की सेना को परास्त कर – सिद्धालय में विराजमान हों। **–डॉ. मनोज जैन, ललितपुर**

"मुक्ति" ने मार्ग दर्शन दिया

– हेमन्त भगानिया, नैरूल मुंबई

मैं कभी पूज्य क्षमा सागर जी से नहीं मिला पर कुछ ही दिन पहले श्रीमती अरुणा जैन जी के सहयोग से उनकी कविताओं के संग्रह "मुक्ति" को पढ़ने का सौभाग्य मिला। मुझे बहुत ही अच्छा लगा। इतने सहज और सरल तरीके से जीवन का विश्लेषण और इस पथ पर सफलतापूर्वक चलने का मार्गदर्शन मिला कि शब्दों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता है, सिर्फ महसूस किया जा सकता है। यदि हम इन बातों को अपने जीवन में उतार सकें, तो इन महान विभूति के प्रति हमारी सार्थक विनयांजलि होगी।

ज्योति पुंज

एक ज्योतिपुंज सा आया वह महामना ! ज्योति प्रतीक होती है रोशनी की, प्रकाश की, असत् से सत् की ओर प्रेरित करने की। जब यह ज्योति अपनी समग्रता लिए हो तो पुंज के रूप में वह हमें 'अलौकिक' प्रकाश की आभा दे जाती है, और फिर हम भर उठते हैं उस अदभुत प्रकाश से। 24 मई 1994 को मेरे जीवन को भी ऐसे ही 'ज्योति पुंज' क्षमासागरजी की आभा मिली, जो मुझे प्रेरणा दे गई, परमार्थ को पाने की, स्वार्थ से विमुख होने की और दे गयी वह आत्मीयता, जो व्यक्ति आसानी से नहीं पा जाता। मुझे लगा कि मैंने भी तो चाही थी यही आत्मीयता जो कभी मेरी आँखों को नम कर जाए। मैंने भी चाही थी, वह जीवन दिशा, जो मेरे जीवन को एक नया बोध दे और वह मैंने इस व्यक्तित्व के माध्यम से पाई है। महान व्यक्ति किसी एक का नहीं होता वह सबका होता है। स्वयं मुनिवर ने लिखा है कि –

एक नन्हीं बदली प्रेम से भरकर मुझसे
निरन्तर बरसने को कह गई,
इस तरह मेरी जिन्दगी,
सबकी हो गई

महान व्यक्ति इतना क्षमतावान होता है कि सबको 'सागर' की तरह अपने में समाहित कर लेता है। हाँ, समुद्र मंथन के बाद अमृत की प्राप्ति होती है। इस सागर से भी हमने अमृत ही पाया है। अब यह हमारे ऊपर निर्भर है कि हम अपनी अंजुलि में कितना भर पाते हैं। वैसे भी भर पाना श्रद्धा का सूचक है। मैंने लिखा था कि ज्ञान के इस जलधि से एक एक बूंद ज्ञान भी अपनी अंजुलि में भर लूंगी तो, सबसे बडी श्रद्धा होगी इन गुरुवर के प्रति मेरी।

मुझे लगता है कि यदि मेघ जैसे बरसकर, अपने जीवन में, किसी की उष्णता कम न कर सकूँ तो, उस उष्णता को कम करने का संतोष तो पैदा कर सकूँ, वृक्ष की छाया यदि किसी को न दे सकूं तो उस छाया का आभास तो दे सकूँ, परोपकार के समय संकीर्णता नहीं इंसानियत घर कर जाए, सरलता और सहिष्णुता मेरी हर साँस में समा जाए। इन भावनाओं के साथ मैंने शेष जीवन जिया, तो मैं समझूंगी कि यही मेरी सच्ची विनयांजलि हैं, इस ज्योति पुंज के श्री चरणों में।

"वे सारी बातें और मन,
वहीं लौट जाना चाहते हैं,
जहाँ जले थे आस्था के दीप,
जहाँ जले थे श्रद्धा के दीप,
जहाँ जले थे समर्पण के दीप।"

ऐसी दिव्यात्मा जो कहीं अनन्ताकाश में विलीन हो गई, पर हर क्षण साथ होने का एक एहसास देती है।

–अरुणा जैन, नई मुंबई

Guru Dakshina

Though the Almighty Muniraj has been guiding thousands of wandering ships to sail across the vast ocean for many decades, I found my true Guru only 4 years back when I first listened to his discourses on 'Karma Siddhanta' on YouTube. I was running through most difficult times of my life and his words have brought down a revolutionary transformation within me. Though externally my life situation did not alter much immediately but it was no more able to disturb my inner peace. His scientific approach to address logical minds was unparalleled. I am more than convinced about the true path shown by him.

As physically he is no more with us, I just wonder how am I going to return his Guru Dakshina for the blessings he has ushered upon me. I'll consider my life a success if, by the end, I am able to bring in my life even 1% of his teachings and such will be my dakshina in the Almighty's feet.

- Nitin Jain Baraiya, Noida

अपनापन पाना और देना

जिन्दगी तो यूँ भी चल ही रही थी, पर सन् 1990 में गुरुवर के आगमन ने मेरा जीवन एक बसंत की तरह महका दिया। गोटेगांव में पहली बार मैंने जब गुरु के दर्शन किये तो उनकी सहज शांत और सौम्य मुद्रा को देखते ही रह गई और आहार चर्या के बाद मैंने मुनि श्री से कहा मुझे आपके साथ मेरी भावना पढ़नी है, उन्होंने कहा अभी–अभी आये हैं फिर कभी। 'फिर कभी' जैसे मेरे लिए एक बुलावा बन गया और फिर तो कई बार उनके साथ मेरी भावना और वीतराग स्तोत्र, भक्तामर स्तोत्र आदि पढ़ने का मौका मिला। अब जब भी ये पढ़ते हैं तो लगता है गुरुवर के साथ ही पढ़ रहे हैं।

वो तीन महीने जैसे पंख लगाकर उड़ गए और गुरुवर का विहार हो गया, हमें ऐसा लगा जैसे हमारे घर से ही कोई जा रहा है। आँसुओं की धारा भी गुरु को न रोक पाई, हर बात में उनकी सरलता, सहजता, अपनेपन की बातें बहुत याद आती हैं, उनके पास बैठकर उनकी कविताएँ सुनना, वो आकाश–वृक्ष–नदी–पहाड़–चिड़िया जैसे सब अपने लगने लगे, तब सचमुच जीना जीना सा लगा, जब कभी मैं क्लास में देर से पहुँचती तो वे माँ से पूछते – बिटिया नहीं आई ? उनका वो दुलार अब कहाँ मिलेगा मुझे? उनसे बस यही सीखा – अपनापन पाना और देना ।

सन 1991 में जब गुरुवर कटनी में थे, तब मेरी तबियत बहुत खराब हो गई थी, पर मेरी जिद थी कि मुझे गुरुवर के पास जाना है और जब वहाँ गई तो सच में दर्शन करने मात्र से ही सब ठीक हो गया, तब लगा कि जिनसे मिलकर हमारी खुशी दुगनी और दुःख दूर हो जाये वही तो हमारे सच्चे अपने हैं। गुरुवर की अस्वस्थता और आहार के समय उनकी तकलीफ हमें बहुत रुलाती थी, पर अफसोस कि हम कुछ कर न पाए। बस यही प्रार्थना करते थे कि हजार वेदनाओं को चुपचाप सहने वाले हमारे गुरुवर की परीक्षा मत लो, उन्हें अच्छा कर दो प्रभु! आज वे हमारे बीच भले ही न हों पर हमारे साथ तो हमेशा रहेंगे, यह विश्वास है मुझे। उनके जैसा अपनापन यदि हम भी सीख सकें तो हमारा जीवन सार्थक हो जाएगा।

दूर रहकर गुरु हमें कुछ और प्यारे हो गए,
पास रहकर दूर थे अब तो हमारे हो गए।

–मोना जैन, गोटेगांव

उनकी कवितायें प्रेरणा का प्रकाश

अष्टमी की पावन भोर में दुखद समाचार मिला कि करुणा मूर्ति मुनि श्री क्षमासागर जी के जीवन की साँझ ढल गई। मुनिश्री कल थे आज नही हैं। हम आज हैं कल नही रहेंगे, यह एक ऐसा सच है जो हमें पर्यायों की नश्वरता से आत्मा की अमरता की ओर प्रेरित करता है। यह दुखद है कि मुनि श्री की नश्वर देह का विसर्जन हो गया पर करुणा संवेदना के अमर रस में भीगी णमोकार की दिव्य ध्वनि एवं पर–हित–सरिस धर्म, साधर्मी वात्सल्य, माँ–बेटे के प्रेम में पगे, गुरु भक्ति की चाशनी में डूबे दिव्य प्रवचनों के आकाश पर मुनि श्री सदा अजर अमर रहेंगे। मुनि श्री के गीत और कवितायें भी युगों–युगों तक समाज को प्रेरणा का प्रकाश देती रहेंगी। मुनि श्री के चरणों में यही श्रद्धांजलि है –

दूर तुम कितने भी जाओ, पर जा नहीं पाओगे।
झाँकेंगे जब जब हम अंदर मुनिवर को बैठा पाएंगे।
चले वियोग की कितनी भी आंधी या लील जाये ज्वाला तन को।
मन मंदिर में बैठे मुनिवर को कभी न विसरा पाएंगे।

– ब्र. त्रिलोक जी, जबलपुर

मैं आश्वस्त हूँ

अक्सर चौमासे के बाद
जब तुम
गमन करते थे,
माँ बताती थी–
विदाई में
इतने आदमी
कि सड़कों में
नहीं समा रहे थे।
उस दिन भी
माँ ने यही बताया
फिर फफकने लगी।
मैं डबडबाया
सोचता रहा
मैं कभी तुम्हारी
विदाई में नहीं आया।
मैं आश्वस्त हूँ
तुम हो मेरे साथ ही
मेरी अपनी
साँसों के होने तक।

– राकेश जैन, मुम्बई

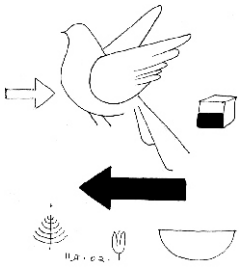

"सच्चा अपना"

चहकती चिड़िया
उदास है
नदी भी
अनमनी सी
बह रही है
भरा–पूरा वृक्ष
भी खामोशी
ओढ़े हुए है
विशाल आकाश
भी नम है
उन्हें
अहसास है
कि उनका
"सच्चा अपना" अब नहीं है।

–अनुराग जैन, गंजबासौदा

अम्बर भी दुखित हुआ

क्षमावान अति सरल स्वभावी संत हमारे प्यारे थे।
बने प्रेरणा सब मुनियों की समता धरने वाले थे।

आज क्षमा गुरु सबसे पहली खबर दुखद हमने पायी।
गुरूवर की अब हुई समाधि अंखियाँ मेरी भर आयीं।

सद्गति हो सद्भावना मन की और नहीं कुछ दे सकते।
मुस्काते उस महासंत का कर आशीष न ले सकते।

बारम्बार नमन करते हैं महा अहिंसा दूत को।
उदित अस्त सागर में ही होने वाले पूत को।

रात को बारिश की बूंदों ने सबको ये संकेत दिया।
सागर दुःखी होने वाला है अम्बर भी अब दुखित हुआ।

–देवांग शाह, जयपुर

अब प्रश्नों के उत्तर कौन देगा?

मुझे महाराज जी के दर्शन सबसे पहली बार YJA Award Function, 2001 में हुए थे। वह मेरा सबसे यादगार क्षण एवं जीवन को नयी दिशा देने वाला पल था। उनके हाथों से अवॉर्ड पाना और उनके प्रवचन सुनना, वह मेरे लिए एक श्रेष्ठ अनुभूति थी। अवॉर्ड के गिफ्ट में मुझे बहुत सारी सुंदर किताबें और दो केसेट मिली थीं। एक केसेट में णमोकार मंत्र की महिमा को उन्होंने एक बहुत अच्छा उदाहरण देकर समझाया था। उन्होंने कहा कि जैसे वट के वृक्ष का बीज तो छोटा होता है, लेकिन उसके अंदर वट के वृक्ष समान मजबूत और बड़ा आकार लेने की शक्ति होती है। इसी प्रकार णमोकार मन्त्र में भी बहुत शक्ति है। उनके शब्द और विचार हमेशा मन को छूते थे। उनका धर्म को विज्ञान से जोड़ना और उसे बहुत ही सरलता से समझाना बहुत प्रभावित करता था। उनको सुनकर सवालों के जवाब स्वयं मिल जाते थे। उनके दर्शन आखिरी बार अगस्त 2014 में सागर में हुए। सौभाग्य से मुझे उन्हें आहार देने का मौका मिला। यह मेरे लिए एक श्रेष्ठ अनुभूति थी।

हम सभी जानते हैं कि जीवन में गुरु की कितनी अहमियत है। जो भगवान का मार्ग दिखाए, हमारे लिए तो वही भगवान है। ऐसे गुरु का चले जाना निश्चय रूप से अत्यंत दुखदायी था। उस दिन लगा कि अब मुझे मेरे प्रश्नों का उत्तर कौन देगा? उनके जैसा वात्सल्य कहीं और नहीं पाया।

–अवार्डी

एक आदर्श संत

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्या सागर जी महाराज के अनेक शिष्यों में आदर्श का पाठ पढ़ाने वाले संत थे मुनि क्षमा सागर जी, जिनका जीवन एक ग्रंथ की तरह था। उन्होंने जो भी कहा उसे स्वयं जीवन में करके दिखाया एवं उनका सादगी पूर्ण आचरण, उनका अनुशासन, उनकी समय की पाबंदी, कम शब्दों में बहुत अधिक समझा देना यह सब उनके जीवन की विशेषताऐं रहीं जोकि हमें कहीं भी कभी भी सही जीवन जीने का पाठ पढ़ा दिया करती थीं।

यह सब मात्र शब्दों की नहीं मेरे स्वयं के अनुभव की बात है। सही रूप में देखा जाये तो मेरे जीवन जीने की शुरूआत पूज्य मुनिश्री के सानिध्य में आने के बाद ही हुई। उनके साथ रहकर जाना कि वास्तव में जीवन कैसे जिया जाये। उनकी वात्सल्य भरी दृष्टि जिस पर भी पड़ जाती समझो उसके जीवन का एक नया आयाम आरंभ हो जाता, फिर उसके जीवन की एक अलग पहचान बन जाया करती थी।

मुनि श्री के आर्शीवाद का चमत्कार तो मैंने स्वयं कई बार देखा है। जिनके आर्शीवाद से बड़े से बड़े कार्य सहजता से हो जाया करते हैं आज भी उनका नाम लेकर, उनका आर्शीवाद लेकर कोई कार्य करो तो वह विफल नहीं हो सकता। मुनि श्री समता व क्षमा की तो साक्षात मूर्ति थे। इतनी कठिन परिस्थितियों में किस प्रकार से सारी पीड़ाओं को समता से सहन करते हुये अपने जीवन की सार्थकता को प्राप्त किया। क्षमा तो उनके रोम–रोम में वास करती थी। ''कर्म कैसे करें'' में उन्होंने पूरे जहान को बता दिया कर्म कैसे करें जैसे उन्होंने किये। सच बताऊँ तो मैं वह सब तो लिखने में पूर्णतः असमर्थ हूँ जो मैंने उनके साथ रहकर अनुभव किया, एहसास किया। और फिर एहसास तो एहसास होते हैं उनकी कोई परिभाषा या शब्द नहीं होते। उनके साथ में हर अहसास के साथ रहा और जिया, और हर अहसास विश्वास बन गया और यही विश्वास मेरे जीवन के विकास में सहायक है। मेरा जीवन भी उनके आदर्शों पर चलते हुये विश्वास के शिखर को प्राप्त हो इसी मंगल भावना के साथ उस महान अंतर आत्मा के पावन चरणों में नमन।

–ब्र.संजय भैया, मुरैना

कर्म सिद्धांत को समझ पाई

I can recall my days when I was studying for my CS exam - having deep faith in our religion, I used to do "Dharmik Charcha". I still remember the day, when I was searching something on internet and suddenly my eyes stopped to few lines and the name below the lines, "Munishri Kshama Sagar Jee".

I kept on reading the lines written on that web page. I felt the depth and wondered how in such few words this much can be written. Then unknowingly, my friend made me join YJA group. The day I read "Karm Kaise Karein", I felt how the complex concepts were worded so simply in an easy to understand manner. I had never understood the Karma theory with such clarity before. Now, all the lessons go along with me in life to understand, what to do, what not to do, understanding the impacts of our Karmas.

Though I could never do darshan of Munishree, yet I try to follow his words. Generally, I am quiet expressive, good at writing, yet I don't know why searching for words today, because words seems so less to express the respect.

– रियंका जैन, बैंगलोर

युवा वर्ग को धर्म

महाराज जी के चरणों में कोटि–कोटि नमन । महाराज जी बिल्कुल अपने नाम कि तरह थे। क्षमा के सागर, अत्यंत सरल, स्नेह वात्सल्य से भरे हुए। उनके प्रवचन दिल को छू जाने वाले हैं – simple yet with lot of depth! उन्होंने सांइस को Jainism से जोड़ कर आज के युवा वर्ग को धर्म से जोड़ा है। We lost a gem.

–निकिता जैन

वैज्ञानिक मुनि

13 मार्च 2015 अष्टमी का दिन एक सूचना ने हृदय को स्तब्ध कर दिया, मुनि क्षमासागर की समाधि हो गई। सुनते ही नयनों से अश्रुधारा के साथ–साथ हृदय की पीड़ा भी बह निकली। यह विश्वास करना अत्यन्त कठिन था कि चिड़ियों, सूरज, वृक्षों और पर्वतों पर आत्मीयता के साथ कविता लिखने वाला कवि अब नहीं रहा, कि बालकों को प्रतिभा सम्मान द्वारा निरन्तर आगे बढ़ने और अच्छा जीवन जीने की कला सिखाने वाले प्रेरणा स्रोत अंतर्विलय हो गए। भक्तों के हृदय कमल पर विराजमान मीठी सी वाणी वीणा के प्रणेता, गहन गंभीर ज्ञान से जिनवाणी को आत्मसात् करने वाले, निर्दोष–निस्पृहचर्या से श्रावकों ही नहीं; अपितु श्रमणों को भी परीषहजय का पाठ पढ़ाने वाले, सहज शांतवृत्ति से प्रकृतिस्थ होने वाले प्यारे गुरूदेव अब हमारे बीच नहीं हैं। वे चले गए, दुःख इस बात का नहीं है, परन्तु उनका असमय में जाना मन को एक भारी पीड़ा देता है। उनके वैज्ञानिक तथ्यों और कौशल की वर्तमान समय में अत्यधिक आवश्यकता थी। वे आशीषों की सुगन्ध बिखेरते हुए मुक्तिपथ की ओर बढ़ चले और पीछे छोड़ गए कभी समाप्त न होने वाली प्रेरणाएँ, जिनके द्वारा हम अवश्य ही अपना कल्याणमार्ग प्रशस्त करेंगे।

–हरिगोविन्द सिंह, इंदौर

अमीट पहचान

विराट सोच...गहन चिंतन...अद्भुत शब्द...चकित कर देने वाली कविताएँ..कलम के जादूगर..वाणी के महासंत..सरस्वती पुत्र...युवा मनीषी...प्रखर वक्ता...वात्सल्य हृदय...चन्द्र सी शीतल मुस्कान...मौन प्रवचन के धनी...कितनी उपमाओं से सुशोभित करें इस महान संत को जो जाते–जाते अपनी अमिट पहचान ही नहीं बल्कि वो शब्द छोड़ कर गए। जिन्हें पढ़ कर युवा चेतना और नव निहाल अपने जीवन को, समाज को, परिवार को, धर्म को और अपने राष्ट्र को गौरवान्वित करते रहेंगे। ऐसे युवा संत को ऐसे श्रमणमुनि को, प्रज्ञावान को कोटि–कोटि नमन।

– पेट्रिस फुसकेले, सागर

मैं उनको जानती हूँ

मैंने अपने जीवन में उनके दर्शन कभी नहीं किए, जिसका अफसोस मुझे हमेशा रहेगा। उनके बारे में जो कुछ भी सुना, उससे मैं आध्यात्मिक रूप से जुड़ गई थी, ऐसा लगता था जैसे कि बिना दर्शन किए मैं उनको जानती हूँ।

उनकी कविताएं मेरे हृदय को छू जाती हैं, उनका जीवन और मरण दोनों ही सच्चे अर्थ में उत्कृष्ट रहे हैं। दो शब्द जो उनके नाम को सार्थक करते हैं– क्षमा और समता। मुनि श्री आज हमारे बीच में नहीं हैं, ऐसा लगता है कोई अपना चला गया है, आप सबके हो गए थे।

–शुचि जैन

अनमोल रतन

मुनिश्री क्षमासागर जी महाराज जैन समाज के अनमोल रत्न थे। आचार्यश्री के संघ में उनका विशिष्ट स्थान था। उन्होंने जैन समाज की नई पीढ़ी को मंदिरों और स्कूल–कालेज पहुँचाने में महती भूमिका निभाई। मुनिश्री क्षमासागर जी महाराज की समाधि बेहद पीड़ादायक समाचार है। बेशक उन्होंने कठिन तपस्या से अपनी आत्मा का कल्याण किया है, लेकिन उनके चले जाने से जैन धर्म व जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। मुनिश्री के चरणों में नमोस्तु। जिन भाई–बहनों बच्चों ने अस्वस्थता के दौरान मुनिश्री की सेवा की उन्हें भी मैं प्रणाम करता हूँ।

– रवीन्द्र जैन पत्रकार, भोपाल

मेरे गुरु ही नहीं, भगवान भी

मुझे आज भी लगता है कि मुनिश्री अभी भी मेरे साथ हैं। उनके ही आर्शीवाद से मैं इंजीनियरिंग कर पाया। वो मुझे बहुत अच्छे लगते थे। मुझे उनके सानिध्य में रहकर संस्कार मिले। मैंने 12 वीं कक्षा के लिये यंग जैना अवार्ड 10 अक्टूबर 2014 को अशोक नगर में प्राप्त किया। मैंने प्रथम बार अशोक नगर में ही मुनि श्री के दर्शन किये, उनसे बात की, उन्हें आहार भी दिया। मैंने अशोक नगर में ही स्मोकिंग, मासाहार, शराब का आजीवन त्याग भी किया। वरिष्ठ विजेता (सीनियर अवार्डीस) का पुरस्कार बहुत भाग्यशाली लोगों को ही मिलता है। मुझे मुनिश्री के आर्शीवाद से पद्मपुरा जयपुर (राजस्थान) में वरिष्ठ अवार्डी (सीनियर अवार्डी) का पुरस्कार प्राप्त हुआ। संयोग देखिये मैं 10 वीं क्लास के लिए यंग जैना अवार्ड लेने जयपुर नहीं जा पाया तो मुनिश्री ने सीनियर अवार्डीस के रूप में जयपुर बुला लिया। मुनिश्री स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण समारोह में उपस्थित नहीं हो पाए फिर भी उनके आर्शीवाद से समारोह बहुत अच्छी तरह सम्पन्न हुआ। महाराज जी मेरे गुरु ही नहीं, भगवान भी थे, और हमेशा भगवान की तरह पूजनीय रहेंगे। उनकी बच्चों को आगे बढ़ाने की भावना सच में अविस्मरणीय है।

–दिनेश जैन, मुम्बई

झोली भरकर वापिस आये

'शुभाशीष' कितने ही बार कहके मिला, कितने ही बार लिखकर मिला, कितने ही बार हाथों से मिला, कई बार भीनी सी मुस्कान से मिला और कितने ही बार कुछ ना कह के भी सब कुछ कहके मिला। गुरुवर से ऐसे अनंत आशीष मिले जिनको सहेज के इस मनुष्य भव को सार्थक करने की प्रेरणा मिली है । जब भी कभी दर्शन करने गये तो लगा कि खाली हाथ गये थे, और झोली भरके वापस आए। जितने बार छुट्टियों में घर जाते थे, तो एक अलग ही excitement होता था कि गुरु के दर्शन मिलेंगे। अब भी कभी यह नहीं लगता की गुरुवर हमारे साथ नही हैं, हर चिड़िया को देख के, पहाड़–नदियों को देख के मुनिश्री की कवितायें गूँजती हैं। मुनिश्री को जब भी याद करते हैं, यही प्रण याद आता है कि युवा पीढ़ी को जिनमार्ग पर चलने में सहयता करेंगे और करते रहेंगे। धन्य हुए हम जो पंचम काल में भी हमें ऐसे भावलिंगी गुरु मिले।

–रेशु जैन, मुंबई

अनुभूति बड़ी चीज है

We all are deeply grieved and are going through the most difficult time. We have lost someone so special and close to each one of us. Each one of us has very special moments spent with Munishree which we can never forget. Few lines written by Munishree:

अनुभूति बड़ी चीज है
जीवन की श्रेष्ठ अनुभूतियाँ सँभाल कर रखना,
जीवन भर यही काम आएँगी।

–प्रतीक्षा जैन, बैंगलोर

उन्हीं का आशीर्वाद

मुनि श्री 108 क्षमा सागर जी से जीवन में बहुत कुछ सीखा है। यहाँ तक कि नवधा भक्ति भी उन्हीं से सीखी, जीवन जीने की कला, त्यागमयी जीवन जीने की योग्यता उन्हीं के आशीर्वाद से है। गुणों के धनी, सहनशील, क्षमा की मूरत, सरलता की सूरत और लघुता से गुरुता की ओर जाने वाले मुनि श्री 108 क्षमा सागर के चरणों में कोटिशः नमोस्तु।

–सीमा राकेश जैन, कटनी

स्वर्णिम वाक्य

– मुनी क्षमासागर

- अच्छी संगत बैठकर संगी बदले रूप ।
  जैसे मिलकर आम से मीठी हो गई धूप ।।
- जीवन में सदा आत्मीयता बनाए रखना
- अपने जीवन से सभी को सद्प्रेरणा देना
- अपने कर्त्तव्य का पालन अच्छे से करना
- श्रद्धा के सहारे निरंतर आगे बढ़ना
- अपना जीवन सरल और विनम्र बनाना; सच्चे रास्ते पर चलना
- तीर्थ का दर्शन जीवन को निर्मल बनाने में सहायक बने ऐसी भावना रखना
- जीवन की श्रेष्ठ अनुभूतियाँ जीवन भर मन को उज्जवल बनाती रहें
- जीवन निरंतर बीतता जाता है और स्मृतियाँ संचित हो जाती हैं। सारी स्मृतियाँ हम माला में मोती की तरह पिरोते जाएँ तो समय पर ये स्मृतियाँ हमें संभालती और निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रहती हैं।
- श्रद्धा कीमती है, वह सही रास्ता देती है, और सहारा भी देती है, इसे हमेशा बनाए रखें।
- आस्था को कोई डिगा नहीं सकता क्योंकि वह विचारों पर नहीं अनुभूति पर टिकी है।
- जीवन परिवर्तित होता है हमारी भावनाओं की निर्मलता से, हार्दिकता से।
- भावनाएँ बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। भावनाएँ मुहर की तरह हैं। कागज के टुकड़े की कोई कीमत नहीं होती लेकिन उस पर जब मुहर लग जाये और लिख दिया जाये कि सौ रुपए, तो आप कहीं भी ले जाइएगा । वो कागज का टुकड़ा भी आपको सौ रुपए दिलवा सकेगा। वैसे अगर आप कागज का एक टुकड़ा ले जाएँ, उसका कोई महत्त्व नहीं है।

- अगर हम अपने जीवन में दुःख नहीं चाहते हैं तो फिर हम दूसरे के लिये भी दुःख का इन्तजाम करना बंद कर देवें और अगर अपने जीवन में कोई दुःख आता है, संकट और विपत्ति आती है तो उसके लिये भी दूसरे को दोषी ठहराना, उनकी शिकायत करना अगर हम बंद कर दें। और तीसरी बात भैया दूसरे के सुख से दुःखी होने की आदत छोड़ देवें और सिर्फ इतना ही विचार करें कि मैंने ही कुछ ऐसा किया होगा जिससे कि मेरे जीवन में ये दुःख, संकट और विपत्ति आई। अगर सही कर्म करने की कुशलता हम सीख लें तो हमारा जीवन जरूर से बहुत ज्यादा अच्छा बनेगा।
- अपने भीतर कहीं बाहर से धर्म लाने की प्रक्रिया नहीं करनी है, बल्कि हमारे भीतर जो विकृतियाँ हैं उनको हटाना है। जैसे–जैसे हम उनको हटाते जाएँगे, धर्म अपने–आप हमारे भीतर प्रकट होता जाएगा।
- मेरे जीवन का लक्ष्य अपनी चेतना व गुणों का विकास करना, अपने भीतर आत्मीयता–अपनेपन का भाव और दूसरे का उपकार करने की भावना का होना चाहिए।
- काम करना, अपना advertisement नहीं करना, punctual रहना।
- कर्म भी वही श्रेष्ठ है, जो धर्म से युक्त हो और धर्म भी वही है, जिसमें हम निरन्तर अपना कर्त्तव्य करते हैं । दोनो में कोई भी छोटा बड़ा नही है।
- जो जितना भावनाओं में रिच है वो वास्तव में रिच है, वो उतना समृद्ध है, वो उतना ज्यादा सुन्दर है।
- मैं अपने कर्त्तव्य को पूरा करूं। मेरा कर्त्तव्य लोगों के जीवन को अच्छा बनाने का है और साथ–साथ मेरे अपने जीवन को अच्छा बनाने का है।
- धार्मिक अनुष्ठानों में भी अगर भावनाओं की निर्मलता नहीं है तो वो धार्मिक अनुष्ठान भी हमारे जीवन को सुख और शांति नहीं दे पायेंगे।
- कर्म का उदय मेरा उतना बिगाड़ नहीं करता, जितना उसके उदय में उसके फल में मेरी आसक्ति।
- मेरे पास देने के लिए दो ही चीजें हैं, थोड़े से श्रेष्ठ विचार और थोड़ा सा प्रेम और मैत्री।
- मेरे जीवन से किसी को दुःख पहुँचे, मेरे जीवन से किसी को क्षति पहुँचे –ये मेरा उद्देश्य नहीं हो।
- हर क्रिया के पीछे यदि भावना की निर्मलता हो तो वो क्रिया हमारे जीवन को बहुत संतोष देती है, शांति देती है और निर्मलता देती है।
- दृष्टि की निर्मलता जीवन को सही बनाने की दिशा में रखा गया पहला कदम है।
- सुख के क्षणों में इतने गाफिल नहीं होना कि दूसरे के दुःख को न समझ पायें और दुःख के क्षणों में इतने ज्यादा निराश नहीं होना कि फिर जीवन में सुख की आशा ही समाप्त हो जाये। इतना यदि हम सीख लेवें तो ये सुख और दुःख, धूप–छाँव की तरह आयेंगे और निकल जायेंगे।
- हाई education लेने के बाद यदि हमारा जीवन सुन्दर और दूसरे के लिये सुगन्धित नहीं बनता है तो मानिएगा कि अभी कहीं हम कुछ मिस कर रहे हैं, हमें वो उसमें एड करना चाहिए।
- हमारे बौद्धिक विकास के साथ–साथ हमारा भावनात्मक और आत्मिक विकास भी होना चाहिए।
- किसी भी काम के लिए शुरुआत में साहस होना बहुत जरूरी है और काम को पूरा करने के लिए दृढ़ता बहुत जरूरी है। मैं अपने जीवन में सद्गुणों को ला सकता हूँ या सद्गुणों से अपने जीवन को अच्छा बना सकता हूँ – ऐसा साहस या आत्मविश्वास हमें पहले जागृत करना होगा फिर पूरी दृढ़ता के साथ अपने लक्ष्य को पाने के लिए जुट जाना होगा। हो सकता है वातावरण प्रतिकूल मिले और लक्ष्य को पाने में देर लग जाए, शायद पूरा जीवन भी लग जाए।